ISBN: 978-93-100-0018-4

माध्यमिक विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

शिल्पी गुप्ता

प्रदीप कुमार

माध्यमिक विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर—शिक्षक शिक्षा विभाग

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बांदा)

(उत्तर प्रदेश)

शिल्पी गुप्ता

एम०ए० (अंग्रेजी, समाजशास्त्र), एम०एड०

प्रदीप कुमार

बी०एस-सी० (गणित), बी०एड०

माध्यमिक विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

शिल्पी गुप्ता

प्रदीप कुमार

E-book संस्करण: 2023

मूल्य: ₹ 40

ISBN: 978-93-100-0018-4

प्रकाशक—

प्रदीप कुमार

मकान नं. 76ए/5एफ, चक मुण्डेरा

पोस्ट- धूमनगंज, जिला- प्रयागराज (उ०प्र०), पिन कोड 211011

मो०- +918572999751

ई० में ल: pradeep.85648382@gmail.com

प्राक्कथन

भारतीय संगीत का इतिहास बहुत पुराना है और इसका विकास भी अन्य कलाओं की तरह धीरे-धीरे हुआ। ज्यों- ज्यों मानव आध्यात्मिकता की ओर बढ़ा त्यों-त्यों संगीत कला की उन्नति हुई। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक की एक लंबी यात्रा में भारतीय संगीत कला ने अनेक उतार चढ़ाव देखे। संगीत के विकास क्रम में वैदिक काल की पवित्रता, रामायण और महाभारत काल की एकता, हिन्दू राजाओं की स्थिरता, मुगलों की विलासता, संतो की शक्ति परायणता, अंग्रेज़ो की उपेक्षा और स्वतंत्र युग की चेतना का प्रमाण हमें दिखाई पड़ता है। इतिहास साक्षी है, अपनी कला में पिरोकर समाज को दिया है।

वर्तमान में सरकार, निजी संस्थाओं, संगीतज्ञों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, संगीत नाटक अकादमी, लोक कला अकादमी आदि अनेक माध्यमों से भारतीय संगीत समाज में लोकप्रिय हो रहा है और उच्चतम शिखर को छू रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है, ''माध्यमिक विद्यार्थियों की संगीत प्रवीणता का अध्ययन'' इस पुस्तक को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में संगीत की उत्पत्ति, विधाएं, उपयोगिता तथा संगीत के तत्व, अंग, इतिहास, स्वरूप व संगीत शिक्षण की समस्याओं इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में संगीत से संबंधित शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण तथा अध्ययन से संबंधित लेख, समाचार इत्यादि का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध प्रविधि, न्यादर्श, शोध उपकरण, परीक्षण का प्रशासन एवं फलांकन को विस्तारपूर्वक समझाया गया है।

चतुर्थ अध्याय प्रदत्तों के विश्लेषण से संबंधित है जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों में संगीत प्रवीणता का प्रश्नश: विश्लेषण तथा प्रयाग संगीत समिति तथा यू०पी० बोर्ड के विद्यार्थियों संगीत की प्रवीणता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

पंचम अध्याय में अध्ययन के निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं अधययन के सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित हैं। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसंधानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है, जब तक की वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित हर एक घटक में प्रेरणा का संचार करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक हैं। अत: यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

राजीव अग्रवाल

शिल्पी गुप्ता

प्रदीप कुमार

विषय-सूची

चित्र सूची

तालिका सूची

प्रथम अध्याय

"संगीत ब्रह्माण्ड को

आत्मा देता है,

मन को पंख देता है,

कल्पना और जीवन को,

हर चीज के लिए

उड़ान देता है।"

(प्लेटो)

1.1 प्रस्तावना

मानवजाति के विकास की आधारशिला शिक्षा को माना जाता है। एक सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली ही मानव को सुसंस्कृत, संवेदनशील एवं विवेकशील बनाने के साथ विचारवान गुण का प्रस्फुटन करती है। किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा एक अपरिहार्य कारक के रूप में सामने आती है। शिक्षा ही किसी देश की विकास प्रक्रिया का अभिन्न अंग भी होती है। यही कारण है कि मानवीय संतुलित विकास को ध्यान में रखते हुए समाज में शिक्षा को उच्च प्राथमिकता के दायरे में रखा गया है। शिक्षा के सकारात्मक पहलुओं का कितना लाभ मनुष्य ने लिया है, यह तब ज्ञात हो पाता है जब मनुष्य के गुणों का परीक्षण कर उसकी क्षमताओं के उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह भी परखा जाता है कि शिक्षा से कौन सी सीख मनुष्य ने पायी है और अज्ञन के अंधकार को किन अेशों तक दूर कर पाया है। शिक्षा के मूल्यों में वह ताकत है, जिससे मनुष्य सही और गलत में भेदकर समाज को आगे ले जाने मार्ग अग्रसर होता है।

प्राचीन काल से ही भारत वर्ष को शिक्षा के सबसे केंद्र के रूप में जाना जाता रहा है। केवल भारतवर्ष ही नहीं अनेक देश के लोग यहां शिक्षा प्राप्त करने आते रहे है। शिक्षा और संस्कृति के लिये पूरे विश्व में सम्मान के साथ लिया जाने वाला नाम नालंदा, तक्षशिला और प्रयाग ऐसे ही प्रसिद्ध प्राप्त नहीं कर लिया। इन शिक्षा के केंद्रों में मिश्र, यूनान, चीन, श्रीलंका, इंडोनेशिया आदि देश के विद्यार्थियों ने शिक्षा ग्रहण कर ऊंचाईयों को प्राप्त किया। शिक्षा की भारतीय पद्धति को हमेशा एक आदर्श शिक्षा प्रणाली की संज्ञा दी गयी। शिक्षा जगत से प्रत्यक्ष संबंध रखने वाले विशेषज्ञों का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होना चाहिए, किंतु वर्तमान ढांचा विद्यार्थियों की रूचि के अनुसार महज नौकरी तक ही सीमित रह गया है। शिक्षा में ज्ञान का परिमार्जन पूरी तरह से अंधेरे में खो गया है।

1.1.1 शिक्षा : विकास की प्रक्रिया

संगीत शिक्षा का स्वरुप किसी भी राष्ट्र की विकास प्रक्रिया की पृष्ठभूमि से उस देश की कला, संस्कृति, साहित्य, धर्म आदि की चर्चा होना स्वाभाविक सी बात है। भारतीय संस्कृति जो विश्व की महानतम एवं प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है की नींव “सत्यं शिवं सुन्दरम” की अवधारणा पर अवलंबित है। इस संस्कृति की अखंडता तथा “वसुधैव कुटुम्बकम” की भावना को जीवित रखना ही हमारा मुख्य लक्ष्य रहा है। संस्कृति के साथ शिक्षा स्वत: ही अप्रत्यक्ष रूप से जुडी होती है। शिक्षा जहाँ हमारे बौद्धिक ज्ञान को परिष्कृत करती है वहीं कलाएं हमारे व्यावहारिक ज्ञान एवं सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति में अभिवृद्धि करती है। शिक्षा अर्जन के क्रम में सांस्कृतिक प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है। वस्तुत: संस्कृति साध्य है और शिक्षा उसको प्राप्त करने का सशक्त माध्यम। शिक्षा का अर्थ बहुत व्यापक है। इसकी परिधि हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू को अपने अन्दर समेटे हुए है। शिक्षा और इसके प्रयोजनों को समझने की एक लम्बी श्रृंखला है, जिसे संगीत शिक्षा से सह सम्बन्ध स्थापित करते हुए समझने की आवश्यकता है। एक और जहाँ शिक्षा व्यक्ति के विकास में सहायक सामग्री समझी हुई दूसरी और समाज, राष्ट्र और विश्व के सन्दर्भ में उसकी सार्थकता को खोया गया है। यही अभिप्राय संगीत शिक्षा के साथ लागू होता है। संगीत ने जहाँ विभिन्न माध्यमों से समाज को शिक्षित किया है वहीं समयानुसार उसकी शिक्षा के अध्ययन की रूपरेखा भी राष्ट्र एवं समाज की आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तित हुई है।

वैदिक काल में जहाँ संगीत धर्म का पोषक था, वहीं मुग़ल काल में मनोरंजन की परिधि में सिमटकर रह गये संगीत का शैक्षिक स्वरुप गुरु शिष्य परंपरा के रूप में विकसित हुआ। यही गुरु शिष्य परंपरा आगे पीढ़ी दर पीढ़ी चल कर घराना पद्धति की दूरी को तय करती हुई शैक्षणिक संस्थाओं के रूप में वर्तमान में स्थापित हुई।

1.1.2 संगीत की उत्पत्ति

प्राचीन ग्रन्थो में संगीत को गायन, वादन एवं नृत्य का समग्र रूप माना है, जो की शारंगदेव के संगीत रत्नाकर ग्रंथ में दिये गए श्लोक से स्पष्ट है :

"गीतं वाद्यं नृत्यं च त्रियं संगीत मुच्यते"

वैसे गायन, वादन एवं नृत्य का एक दूसरे से स्वतंत्र अस्तित्व है। परन्तु गायन के साथ स्वर वाद्य जैसे सारंगी अथवा वायलिन एवं अवनद्ध वाद्य - तबला अथवा पखावज संगति के रूप में प्रयोग होता है। प्राचीन समय में इन तीनों का प्रदर्शन एक साथ किया जाता था। सामान्यत: संगीत को शास्त्रीय संगीत ही समझा जाता है परन्तु संगीत के अंतर्गत संगीत की सभी विधाएं –शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोक संगीत आती है।

भारतीय परंपरा एवं मान्यता के अनुसार संगीत की उत्पत्ति वेदों के निर्माता ब्रह्मा से मानी जाती गई है। ब्रम्हा द्वारा भगवान शंकर को यह कला प्राप्त हुई। भगवान शंकर अथवा शिव ने इसको देवी सरस्वती को दिया, जो ज्ञान एवं कला की अधिष्ठात्री देवी कहलाई। मूर्तियों एवं चित्रों में भी देवी सरस्वती को आपने वीणा एवं पुस्तक के साथ देखा होगा। नारद ने संगीत कला का ज्ञान देवी सरस्वती से प्राप्त कर स्वर्ग में गन्धर्व, किन्नर एवं अप्सराओं को इसकी शिक्षा प्रदान की। यहीं से इस कला का प्रचार पृथ्वी लोक पर ऋषियों द्वारा किया गया। आदि काल में मानव हर्ष एवं उल्लास की अभिव्यक्ति, नृत्य एवं विभिन्न प्रकार की ध्वनियों को आवाज के माध्यम से निकाल कर करता था। मानव के विकास एवं सभ्यता के विकास के साथ इन ध्वनियों की पहचान, संगीत के लिए की गयी जिनके विभिन्न प्रयोग के द्वारा संगीत की रचना की जाने लगी।

1.1.3 संगीत के तत्व

स्वर एवं लय संगीत के मूल तत्व है। स्वर एवं लय के सुंदर संयोजन को ही संगीत कहते है। विभिन्न स्वर समूहो के विभिन्न लय के प्रयोग से संगीत की रचना होती है। संगीत को समझने के लिए स्वर एवं लय को समझना आवश्यक है। स्वर, ध्वनि से प्राप्त होता है एवं लय पूरी सृष्टि में विघमान है। अतः स्वर एवं लय दोनों प्रकृति में विद्यमान है। विद्वानो द्वारा प्रकृति से स्वर एवं लय को पहचान कर संगीत की रचना की गयी।

1.1.3.1. स्वर

फारसी के विद्वान के अनुसार हजरत मूसा जब पहाड़ो पर प्रकृति का आनंद ले रहे थे, उस समय आकाशवाणी हुई कि अपना असा (फकीरो का डांडा) पत्थर पर मारा। पत्थर पर चोट से पत्थर के सात टुकड़े हुए और हर पत्थर से पानी की धारा निकली जिससे सात प्रकार की आवाज निकली एवं इसके आधार पर हजरत मूसा ने सात स्वरो की रचना की। एक अन्य मत के अनुसार पहाड़ो पर एक मुसीकार नाम का पंछी होता है जिसकी चोच में सात सुराख होते है। इन्ही सात सुराखो से निकलने वाली ध्वनि से सात स्वर स्थापित हुए।

संगीत दर्पण के लेखक दामोदर पंडित के अनुसार सात स्वरों की उत्पत्ति पशु-पछियों की आवाजों से निम्न प्रकार मानी गयी है :-

मोर	-	‘सा’ अथवा षडज
चातक	-	‘रे’ अथवा ऋषभ
बकरा	-	‘ग’ अथवा गांधार
कौवा	-	‘म’ अथवा मध्यम
कोयल	-	‘प’ अथवा पंचम
में ढक	-	‘ध ’ अथवा धैवत
हाथी	-	‘नी’ अथवा निषाद

1.1.3.2 लय

लय पूरे ब्रह्मांड में विद्यमान है। समय की समान गति को लय कहते है। स्वर का आधार भी लय ही है क्योंकि नियमित कंपन संख्या की ध्वनि को स्वर कहा गया है। सृष्टि का संचालन लय पर आधारित है। संगीत में लय के तीन प्रकार – विलंबित, मध्य एवं द्रुत माने गए है।

विलंबित लय, वह लय है जिसमे अंतराल का समय लंबा होता है, यही अंतराल का समय दुगुना होने पर मध्यलय एवं मध्यलय का अंतराल दुगुना होने पर द्रुत लय हो जाती है। मध्यलय स्वाभाविक लय है। हम अपनी स्वाभाविक चल को मध्यलय कह सकते है। उससे आहिस्ता अथवा तेज गति में चलना किसी विशेष कारण से ही होता है। यदि मध्यलय के अंतराल का समय एक सेकेंड माना जाए तो इस प्रकार दो सेकंड का अंतराल विलंबित एवं आधा सेकंड का अंतराल द्रुत लय कहलाएगी।

1.1.4 संगीत की विधाएं

1.1.4.1 शास्त्रीय संगीत

ऐसा संगीत जिसका शास्त्र निश्चित है अर्थात शास्त्र पर आधारित वह संगीत जिसमें राग व लय-ताल शास्त्र के नियमों के आधार पर स्वर एवं लय का सुंदर संयोजन कर राग को गाया अथवा वृद्धों पर प्रस्तुत किया जाता है। शास्त्रीय संगीत कहलाता है। इसमें रागों के नियमों का पालन करना आवश्यक है तथा रंजकता हेतु नियमों को शिथिल करने का अधिकार नहीं होता है। यह नियम स्थिर होते हैं एवं किसी भी प्रदेश या देश में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग समान होता है।

चित्र सं०-1.1 गायन

चित्र सं०-1.2 वादन

चित्र सं० 1.3 नृत्य

1.1.4.2 उपशास्त्रीय संगीत

इस संगीत में पूर्ण शास्त्र का प्रयोग नहीं है। संगीत का आधार तो शास्त्र है परंतु इसमें राग शास्त्र के नियमों का कठोरता से पालन करने की आवश्यकता नहीं है। इसमें राग के नियमों को भाव रस एवं माधुर्य हेतु शिथिल किया जा सकता है। उपशास्त्रीय संगीत हेतु मुख्यत: राग पीलू, कॉफी, देश, खमाज, पहाड़ी, तिलंग, भैरवी आदि रागों का प्रयोग किया जाता है।

चित्र सं०- 1.4 ठुमरी

चित्र सं०- 1.5 कजरी

चित्र सं०- 1.6 होली

1.1.4.3 सुगम संगीत

यह संगीत पूर्णतया भाव प्रधान है। इसमें हिंदी के कवियों एवं उर्दू के शायरों द्वारा रचित रचनाओं को स्वर-लय में बांधकर गाया जाता है। गीत, भजन एवं ग़ज़ल, सुगम संगीत की श्रेणी में आते हैं। संगीत, भक्ति का माध्यम रहा है अतः मुस्लिम धर्म की नात-कव्वाली एवं हिंदू धर्म की कीर्तन गायन शैली भी सुगम संगीत की श्रेणी में ही आएंगे।

चित्र सं० 1.7 ग़ज़ल

चित्र सं० 1.8 गीत

चित्र सं० 1.9 भजन

1.1.4.4 लोक संगीत

ग्रामीण परिवेश में, लोक संगीत उन्मुक्त वातावरण में जन्म लेता है। लोक संगीत में मुख्यतया नृत्य एवं गाना बजाना साथ साथ होता है। लोक संगीत में प्रदेश विशेष की प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को परिचय प्राप्त होता है एवं गीतों का विषय भी इन्हीं पर आधारित होता है लोक संगीत की धुनों ने शास्त्रीय संगीत एवं उपशास्त्रीय संगीत को प्रभावित किया है। पहाड़ की धुन पर आधारित पहाड़ी राग एवं राजस्थान क्षेत्र का मांड इसके उदाहरण है।

चित्र सं०- 1.10 कुमाऊनी

चित्र सं०- 1.11 गड़वाली

चित्र सं०- 1.12 राजस्थानी

1.1.5 संगीत के अंग

संगीत शब्द सम्यक एवं गीत से मिलकर बना है। सम्यक+गीत = संगीत। सम्यक का अर्थ है भली-भांति एवं गीत का अर्थ है गाना अर्थात भली-भांति गाना संगीत है। संगीत के अंतर्गत गायन वादन एवं नृत्य तीनों आते हैं एवं यही संगीत के अंग हैं।

1.1.5.1 गायन

गायन को कंठ संगीत भी कहा जाता है, अर्थात कंठ के द्वारा संगीत उत्पन्न करना। गायन, स्वर, लय एवं पद के संयोग से बनता है। पद्य अथवा काव्य का गायन में मुख्य स्थान है। गायन की शैली के अनुसार पद्य अथवा काव्य का चयन किया जाता है। शास्त्रीय गायन विद्या के अंतर्गत ख्याल एवं ध्रुपद गायन शैली आती है।

1.1.5.1.1 ख्याल

ख्याल का अर्थ है कल्पना अतः इसमें राग के नियमों के अंतर्गत विभिन्न स्वर समूहों की लय व ताल के साथ कल्पना कर, राग का स्वरूप स्थापित किया जाता है। ख्याल गायन में विलंबित, मध्य एवं द्रुत लय की रचनाएं गाए जाती है। राग के भाव व रस के आधार पर पद्य का चयन कर रचनाएं गाय जाती है। जिसका अलंकरण आलाप,बोल आलाप, बोल तान, सरगम एवं तीनों के प्रकार से किया जाता है विलंबित लय की रचना अथवा को बड़ा ख्याल कहा जाता है।

बड़े ख्याल हेतु एकताल, तिलवाड़ा, झुमरा आदि तालो का प्रयोग किया जाता है। मध्य व द्रुत लय की रचना अथवा बंदिश को छोटा ख्याल कहा जाता है। मध्य लय एवं द्रुत लय की रचना - तीनताल, एकताल, आड़ाचारताल आदि तालों में की जाती है।

1.1.5.1.2 ध्रुपद

ध्रुपद गायन शैली ख्याल से प्राचीन है। ध्रुपद के बाद ही ख्याल का जन्म हुआ। यह गायन शैली जोरदार एवं गंभीर है। पखावज वाद्य ध्वनि तबले की अपेक्षा गंभीर होती है इसलिए ध्रुपद गायन हेतु पखावज की संगीत की जाती है। ध्रुवपद की रचना पखावज पर बजने वाली तानो प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि इसके स्थान पर दुगुन तिगुन चौगुन एवं कठिन लयकारी का प्रयोग कलाकार की सामर्थ के अनुसार किया जाता है। इस गायन शैली में ताल के साथ रचना प्रस्तुत करने से पहले नोम तोम शब्दों के माध्यम से विलंबित मध्य एवं द्रुत लय में आलाप प्रस्तुत किया जाता है।

1.1.5.1.3 ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती एवं होली

उपशास्त्रीय गायन की विधा में इन शैलियों का प्रमुख उद्देश्य शब्दों के भावों को स्वर एवं लय के विभिन्न प्रयोग द्वारा प्रकट करना है। ठुमरी विलंबित लय में एवं दादरा मध्य लय में गाया जाता है ठुमरी के बाद ही दादरा गाने की परंपरा है ठुमरी एवं दादर वियोग एवं श्रृंगार रस के लिए होता है। ठुमरी हेतु दीपचंदी, जत, पंजाबी आदि तालों का प्रयोग किया जाता है एवं दादरा हेतु कहरावा एवं दादरा ताल प्रयोग की जाती है। दादरा एक ताल का नाम है

कजरी एवं जयती लोक शैली की विधा है जिसको परिष्कृत कर दादरा की भांति गाया जाता है। कजरी वर्षा ऋतु में एवं चैती पूर्वी अंचल में चैत्र माह में गाई जाती है। होली गायन फाल्गुन माह में होली पर्व के अवसर पर गाया जाता है एवं इसका गायन ठुमरी की भांति किया जाता है।

1.1.5.2 वादन

भारतीय वाद्यों को प्राचीन ग्रंथों भारत के नाट्यशास्त्र एवं शारंग देव के संगीत रत्नाकर आदि में चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया हैं

1. तत वाद्य 2. सुषिर वाद्य 3.अवनद्ध वाद्य 4.घन वाद्य

तत वाद्य

इस श्रेणी के वाद्यों में तारों के द्वारा स्वर उत्पन्न किए जाते हैं जैसे वीणा सितार सरोद एवं तानपुरा। वीणा एवं सितार में धातु की वस्तु को उंगली में पहन कर तारों पर आघात कर स्वर उत्पन्न किए जाते हैं इसको मिजराब कहा जाता है सरोज वाद्य को नारियल के ऊपर के कठोर भाग के टुकड़े के द्वारा बजाया जाता है तानपुरा को केवल उंगली से बजाया जाता।

चित्र सं०- 1.14 सरोद
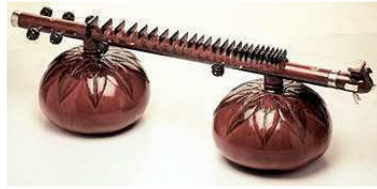
चित्र सं०- 1.15 रुद्रवीणा

चित्र सं०- 1.16

सुषिर वाद्य

इस श्रेणी में स्वर, हवा अथवा फूंक के द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं।जैसे बांसुरी शहनाई मसकबीन क्लारनेट हारमोनियम आदि। बांसुरी एवं शहनाई शास्त्री संगीत में प्रयोग किए जाते हैं। मसकबीन व क्लारनेट विदेशी वाद्य है। मसकबीन उत्तरांचल क्षेत्र के लोक संगीत वाद्य की मान्यता प्राप्त कर चुका है।

चित्र सं०- 1.17 शहनाई

चित्र सं०- 1.18 बांसुरी

चित्र सं०- 1.19 हारमोनियम

अवनद्ध वाद्य

इस श्रेणी में चमड़े से मढ़े हुए वाद्य आते हैं। मढ़े चमड़े पर हाथ या लकड़ी के आघात से विभिन्न धनिया उत्पन्न की जाती है, जिनको बोल कहा जाता है जैसे तबला पखावज ढोलक खंजरी ढोल आदि। अवनद्ध वाद्य संगीत में लय एवं ताल दिखाने के लिए प्रयोग किया जाते है। तबले का प्रयोग संगीत की हर विधा में किया जाता है जबकि पखावज का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में ही किया जाता है ढोलक खंजरी ढोल आदि लोक शैलियो में प्रयोग किए जाते है।

चित्र सं०- 1.20 तबला

चित्र सं०- 1.21 पखावज

घन वाद्य

घन बादलों में ध्वनि लकड़ी या किसी वस्तु के आघात से उत्पन्न की जाती है जैसे मंजीरा करताल जलतरंग घंटातरंग झांझ आदि

चित्र सं०- 1.22 जलतरंग

चित्र सं०- 1.23 मंजीरा

1.1.5.3 नृत्य

पद अथवा पैर, शारीरिक अंग एवं भाव भंगिमाओं के द्वारा भाव प्रकट करने को नृत्य कहा जाता है। नृत्य के अंतर्गत शास्त्रीय नृत्य एवं भाव नृत्य दोनों ही स्वरूप पाए जाते हैं। शास्त्रीय नृत्य में नृत्य की रचनाओं को पद की थाप अंग संचालन एवं भाव भंगिमाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है शास्त्रीय नृत्य के अंतर्गत कत्थक, कथककली, उडीसी, भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम, कुचिपुड़ी आदि नृत्य आते हैं। भाव नृत्य में पद का भाव नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसके अंतर्गत ठुमरी पर भाव, भजन एवं गजल पर भाव, नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। फिल्मों में होने वाला नृत्य भी भाव नृत्य के अंतर्गत ही आयेगा। किसी कथानक का चित्रण, नृत्य के माध्यम से करना ही भावनृत्य ही है।

चित्र सं० 1.24 कत्थक

चित्र सं० 1.25 कथकली

चित्र सं०- 1.26 ओडिसी

चित्र सं०- 1.27 भरतनाट्यम

1.1.6 संगीत की उपयोगिता

संगीत को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है। संगीत से मानसिक शान्ती मिलती है एवं तनाव दूर होता है। अतः संगीत को जीवन शैली का अंग बनाने से जीवन आनन्दमय हो जाता है। यही कारण है कि पश्चिम के लोग भारतीय संगीत को अपनी जीवन शैली का अंग बना रहे हैं। विदेशों में भारतीय संगीत का भरपूर प्रचार एवं प्रसार हो रहा है। भक्ति के लिए भी संगीत का प्रयोग अति उत्तम बताया गया है। भक्ति आन्दोलन में संगीत ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया

था। इसके अतिरिक्त संगीत जीविका चलाने का साधन भी है। संगीत के गहन अध्ययन एवं शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात आप संगीत के व्यवसायिक कलाकार एवं शिक्षक बन सकते हैं। संगीत, विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है जहां आपको शिक्षक का पद प्राप्त हो सकता है। व्यवसायिक कलाकारों हेतु तो अनन्त सम्भावनाएं हैं। संगीत को चिकित्सा पद्धति का अंग भी बनाया जा रहा है। विदेशों एवं भारत में भी मानसिक बिमारियों का उपचार संगीत के माध्यम से किया जा रहा है। अतः संगीत विषय के अध्ययन से आप अपना जीवन सुन्दर एवं तनाव रहित बनाऐंगे एवं इसको व्यवसाय के रूप में चुनने का विकल्प भी आपके पास होगा।

1.1.7 भारतीय संगीत की उत्पत्ति

मनुष्य के जन्म के साथ ही संगीत की उत्पत्ति का इतिहास भी जुड़ा हुआ है। संगीत की उत्पत्ति कब, कैसे और किसके साथ हुई, इस बारे में विद्वानों के अनेक मत हैं। वास्तव में संगीत का इतिहास स्वयं मानव का इतिहास है।जैसे-जैसे मनुष्य का विकास होता गया, संगीत की उन्नति होती गई। भारतीय संगीत की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों ने मुख्य तीन आधार मान्य है :-

धार्मिक आधार

धार्मिक दृष्टिकोण से शिव, ब्रह्मा, सरस्वती, गंधर्व और किन्नर यह देवता संगीत के प्रेरक माने जाते हैं। शिव के हाथों में डमरू, सरस्वती के हाथों में वीणा, स्वर्ग में किन्नर (वादन करने वाले) गंधर्व (गायन करने वाले) और अप्सराएं (नृत्य करने वाली स्त्रियाँ) आदि से स्पष्ट है की भारतीय संगीत अत्यंत प्राचीन है।

प्राकृतिक आधार

इस आधार के अनुसार संगीत की उत्पत्ति प्रकृति से हुई। मनुष्य अपने जीवन के आसपास संगीत में वातावरण को देखा। जैसे नदियों की लहरो से, सागर की तरंगों से, पक्षियों के कलरव से, हवाओ के झोंकों आदि की दुनिया को सुनकर ही मनुष्य ने संगीत को जन्म दिया होगा। मनुष्य ने अपनी भावनाओं को ऊंची-नीची की सहायता से व्यक्त किया होगा।

मनोवैज्ञानिक आधार

इस आधार के अनुसार जैसे-जैसे मनुष्य क्रमिक विकास की सीढ़ियां चढ़ता गया वैसे वैसे ही विभिन्न कलाएं उसके विकसित जीवन से जुड़ती गई। अतः संगीत आदि सभी कलाएं क्रमिक विकास से जुड़ी है। बच्चे के पैदा होते ही उसके कंठ से ध्वनि निकलती है, गायन और वादन इसी ध्वनि का सहज विकास है।

1.1.8 भारतीय संगीत का इतिहास

भारतीय संगीत के इतिहास को हम तीन भागों में बांट सकते हैं

1. प्राचीन काल (आदिकाल से 800 ई० तक)
2. मध्य काल (800 तक 1800 ई० तक)

3. आधुनिक काल (1800 ई० से वर्तमान तक)

1.1.8.1प्राचीन काल (आदिकाल से 800 ई० तक)

1. वैदिक काल
2. संदिग्ध काल
3. भरत काल

1.1.8.1.1 वैदिक काल

इस काल का प्रारंभ आदि काल में ईसा से 1000 वर्ष पूर्व तक माना गया है। इसी काल में हिंदू धर्म के चारों वेदों की रचना हुई इसलिए इसे वैदिक काल कहा जाता है। चारों वेदों के नाम है – ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद। इनमे ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ है जिसके संग्रहित मंत्रों को ऋक या ऋचा कहते है। इसके सभी मंत्र छंदोबद्ध हैं जिनमें अनेक देवी-देवताओं की स्तुतिया उपलब्ध है। यजुर्वेद में यज्ञों का विधान है। अथर्ववेद में सुखमूलक एवं कल्याणप्रद मंत्रों का संग्रह तथा तांत्रिक विधान दिया है। चारों वेदों में सामवेद प्रारंभ से अंत तक संगीतमय है। समागम में केवल तीन स्वर प्रयोग किए जाते हैं जिनके नाम है – उदात्त, अनुदात्त व स्वरित। धीरे-धीरे स्वरों की संख्या 3 से 4, 4 से 5 तथा 5 से 7 हुई।

1.1.8.1.2 संदिग्ध काल

इस काल का समय व 1000 ईसा वर्ष पूर्व से 1 ईसवी तक है। इस काल में संगीत का कोई ग्रंथ नहीं लिखा गया, केवल कुछ उपनिषद, महाभारत, रामायण, आदि ग्रंथ है, जिनमें संगीत संबंधी थोड़ी बहुत जानकारी मिलती है। छान्दोग्य एवं बृहदारण्यक उपनिषद में संगीत का उल्लेख मिलता है तथा संगीत वाद्यों के नाम भी मिलते हैं। महाभारत में सात स्वरो और गंधार ग्राम का उल्लेख मिलता है। रामायण में विभिन्न प्रकार के बादलों का उल्लेख मिलता है। रावण स्वयं संगीत का एक बड़ा विद्वान था। उसने रावणस्त्रं नामक वाद्य का आविष्कार किया।

1.1.8.1.3 भरत काल

इस काल का समय 1 ई० से 800 ई० तक है। इस साल की पहली विशेषता यह है कि जिस प्रकार आजकल राग गायन प्रचलित है उस समय जाति गायन प्रचलित था इस काल की दूसरी विशेषता यह है कि इसी काल में सर्वप्रथम 3 ग्राम 22 श्रुतियाँ, 7 स्वर, 18 जातियां और 21 मूर्च्छनाओ का वर्णन मिलता है।

1.1.8.2 मध्य काल (800 से 1800 ई० तक)

मध्य काल की अवधि 8वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक मानी जाती है। मध्यकाल को दो भागों में विभाजित किया गया है- पूर्व मध्य काल व उत्तर मध्य काल

1.1.8.2.1 पूर्व मध्यकाल

इस काल की विशेषता है कि जिस प्रकार आज राग गायन प्रचलित है, उसी प्रकार उस समय में प्रबंध गायन प्रचलित था। इसलिए इसे प्रबन्ध काल भी कहते है।

1.1.8.2.2 उत्तर मध्य काल –

इस काल में फारसी और उत्तर भारतीय संगीत का मिश्रित रूप भली –भाँति विकसित हुआ। अत: यह काल संगीत का स्वर्ण युग कहा गया है। अधिकांश मुसलमान शासकों को संगीत से विशेष प्रेम था अत: उन्होने अपने दरबार में सनीतज्ञों को आश्रय दिया और संगीत को प्रोत्साहन दिया।

1.1.8.3 आधुनिक काल (1800 ई० से वर्तमान तक)

1.1.8.3.1 स्वतंत्रता से पूर्व

18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में अंग्रेजों का शासन काल था। अँग्रेजी सभ्यता के परिणामस्वरूप संगीत का विकसित रूप कुंठित होता चला गया। संगीतज्ञों को अपने प्रति अंग्रेजों के उपेक्षित एवं उदासीन व्यवहार के कारण अपनी आजीविकोपार्जन हेतु संगीत कला को व्यवसायिक रूप प्रदान करना पड़ा। जिसका परिणाम यह हुआ कि वैदिक काल की उत्कृष्ठ संगीत कला समाज के निम्न वर्ग में पहुॅच गयी। जहाँ उसका एकमात्र उद्देश्य क्षणिक सुख रह गया। समाज ऐसे व्यक्तियों से घृणा करता था जिसका परिणाम यह हुआ कि वह संगीत से भी घृणा करने लगा। संगीत आमोद-प्रमोद का साधन बन गया, यहाँ तक कि सभ्य समाज में संगीत का नाम लेना भी पाप समझा जाने लगा। भारतीय संगीत से प्रभावित अंग्रेजी विद्वान सर विलियम जोन्स व कैप्टन डे ने संगीत को पुनः उबारने का प्रयास किया तथा कुछ पुस्तकें लिखी जिसका समाज में अच्छा असर हुआ और संगीत के प्रति अनादर का भाव भी कम हुआ। इसी समय बंगाल के **‘सर सौरेन्द्रमोहन टैगोर’** ने 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में **यूनिवर्सल हिस्ट्री ऑफ म्यूजिक** लिखी। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में एक बार फिर वाजिद अली शाह के दरबार में संगीत का सम्मान हुआ। लखनऊ के गुलाम रजा साहब ने रजाखानी तथा मसीत खां में मसीतखानी गत का आविष्कार करके सितार पर उसके वादन का प्रचार किया।

संगीत के इस काल में दो महापुरूष (पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे व पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर) इस क्षेत्र में आए, जिन्होंने संगीत का उद्धार किया। इन दोनों ही महानुभावों ने देश में जगह-जगह घूम कर संगीत का प्रचार-प्रसार किया एवं अनेक संगीत विद्यालय की स्थापना की

1.1.8.3.2 स्वतंत्रता के बाद

स्वाधीन भारत के उन्मुक्त पर्यावरण में संगीत का प्रसार तीव्र गति से होने लगा। भारत सरकार ने संगीत कला के विकास में महान योगदान दिया। 1952 से संगीत कला को प्रोत्साहन देने हेतु कुशल संगीतज्ञों को राष्ट्रपति पदक प्रदान करना आरम्भ किया। 1953 में ‘‘संगीत नाटक अकादमी’’ तथा 1954 में ‘‘ललित कला अकादमी’’ की स्थापना की गई। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्र स्थापित किए गए। आकाशवाणी के स्तर को बढा़ने के लिए उसमें भाग लेने वाले कलाकारों की ध्वनि-परीक्षा हुई। ख्याति प्राप्त वृद्ध संगीतज्ञों को मान पत्र भेंट किए जाने लगे। ‘‘संगीत’’ तथा ‘‘संगीत कला विहार’’ जैसी संगीत पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया। श्रेष्ठ संगीतज्ञों को विदेश में अपनी कला को प्रदर्शित करने हेतु सुविधाएं प्रदान की गई। स्कूल तथा महाविद्यालयों में संगीत को एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया

गया। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों से शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत (भजन, गजल, गीत आदि) के कार्यक्रम प्रसारित किए जाने लगे। इन प्रयासों के कारण आज संगीत जन साधारण के अधिक निकट है। आधुनिक काल में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत धुरवपद गायकी का प्रचार कम हो गया है तथा ख्याल शैली अधिक प्रचलित हो गयी है। आज ठुमरी गायकी भी संगीत प्रेमियों के मध्य काफी लोकप्रिय है। गायन वादन, तथा नृत्य की संगति हेतु तबला एक लोकप्रिय, सक्षम तथा बहुप्रचलित ताल वाद्य बन चुका है। मुम्बई की "सुर सिंगार संसद" नामक संस्था प्रत्येक वर्ष युवा कलाकारों के लिए "कल का कलाकार" नामक संगीत सम्मेलन का आयोजन कर उन्हें 'सुरमणि', 'तालमणि" आदि अलंकारों से विभूषित कर प्रोत्साहित करती है। इसके अतिरिक्त 'साहित्य कला परिषद' द्वारा आयोजित युवा महोत्सव में नवोदित कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने हेतु अवसर प्रदान किए जाते हैं।

1.1.9 औपचारिक शिक्षा में संगीत का स्वरूप

1.1.9.1 विद्यालय शिक्षा

संगीत शिक्षा का स्वरूप किसी भी राष्ट्र की विकास प्रक्रिया की पृष्ठभूमि से उस देश की कला, संस्कृति साहित्य, धर्म आदि की चर्चा होना स्वाभिक सी बात है। भारतीय संस्कृति जो विश्व की महानतम एवं प्राचीनतम संस्कृतिओं में से एक है की नींव " सत्यं शिव सुंदरम " की अवधारण पर अबलम्बित है। इस संस्कृति की अखंडता तथा वसुधेव कुटुंबकम की भावना को जीवित रखना मुख्य लक्ष्य रहा है। संस्कृति के साथ शिक्षा स्वत: ही अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है।

वर्तमान समय में हमारी शिक्षण व्यवस्था का स्वरूप समूहिक शिक्षा पद्धति के रूप में परिलक्षित होता है। शिक्षाविदो ने शिक्षण व्यवस्था को वर्गों में विभक्त करने का प्रयत्न किया है। प्राथमिक, मध्यमिक तथा विश्वविद्यालयी स्तर।

1.1.9.1.1 प्राथमिक स्तर

संगीत विषय की शिक्षा समूहिक शिक्षा पद्धति का अंग है। आज प्राथमिक स्तर पर संगीत शिक्षा का स्वरूप केवल 'हॉबी – क्लासेज' के रूप में देखने को मिलता है जिसमे बच्चो को प्रमाण गीत, देशभक्ति गीत, प्रार्थना और अधिक से आधिक अलंकार सिखा दिये जाते है। अर्थात बच्चो के मनोरंजन तक ही वह सीमित है

1.1.9.1.2 माध्यमिक स्तर

सरकारी विद्यालयो में संगीत तीसरी कक्षा से दसवी कक्षा से दसवी कक्षा तक कला – शिक्षा विषय के रूप में है। यह विषय संगीत चित्रकला व नाट्यकला को संयुक्त करके बनाया गया है। माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की एक ऐसी अवस्था है जो की भावनाओ, संवेगो, कल्पनाओ से परिपूर्ण माध्यमिक शिक्षा में संगीत विषय कुछ वर्षो कक्षा नौ से ऐच्छिक विषय के रूप में था। वर्तमान में कक्षा ग्यारवी से ऐछिक विषय के रूप में ही विभाग ने संगीत चित्रकला नाटकला तीनों केई माह तक निशिचित के कर दिए है संगीत विषय पूर्णत: अभ्यास पर निर्भर करता है दूसरी बात यह है कि कला शिक्षा हेतु जो शिक्षक नियुकत किया जाता है उसे संगीत चित्रकला व नाट्य तीनों विषयो को पढ़ाना होगा ग्यारवी बारहवी स्तर पर संगीत शिक्षा ऐछिक विषय के रूप में है जिसमे मुख्यत: गायन वादन दोनों ही विषयो को स्वतंत्र विषय के रूप में लिया गया है। वादन में सितार व तबले की शिक्षण अवस्था है

1.1.9.1.3 उच्च शिक्षा स्तर

संगीत एक सागर है जिसकी गहराई की माप नही है जितना सीखे उतना ही कम है इस स्तर पर छात्रो को नई बंदिशे। गते बनाने और हर शैली व गायकी की शूक्षम बातों से परिचित होने के साथ साथ किसी एक में विशेषता प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करना विश्व विधालय की होती है शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त लोक संगीत रवीन्द्र संगीत, दक्षिणी संगीत की ओर भी ध्यान दिया जाता है विश्व विद्यालयी स्तर पर संगीत शिक्षा को रोजगारी मुखी बनाना वर्तमान समय की अवस्था है इस स्तर पर ऐसे पाठयक्रमो का समावेश हो जो युवा वर्ग के सोच द्राष्टिकोड एवं आवश्यकताओ को ध्यान में रखे

1.1.10 संगीत शिक्षण की समस्यायेँ

संगीत शिक्षण का उद्देश्य किसी बालक को मात्र कलाकार बनाना ही नहीं है अपितु संगीत के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होता है ताकि वह कम उम्र में खेल खेल में ही प्रारम्भिक स्तर पर ज्ञान अर्जित कर सके। संगीत विषय पूर्णत: अभ्यास पर निर्भर करता है। ऐसी स्थिति में सबसे पहले तों अभ्यास या सीखने में अंतराल नहीं होना चाहिए अगर किसी कारणवश होता भी है तो पहले सीखे हुये को संहरना व अभ्यास करने के बाद ही आगे की नयी चीज सीखनी चाहिए।

दूसरी विचारणीय बात यह है की कला-शिक्षा हेतु जो शिक्षक नियुक्त किया जाता है, उसे संगीतचित्रकला और नाट्यकला तीनों विषयो को पढ़ना होगा। लेकिन यह तो आवश्यक नहीं है कि चित्रकला या नाट्यकला का ज्ञाता चित्रकला या नाट्यकला पढ़ा दे। दोनों ही स्थितियो में किसी भी विषय के साथ न्याय नहीं हो पता है। तत्कालीन शिक्षा के रूप को देखते हुये लगता है कि यह पाठ्यक्रम संगीत कि मात्र जानकारी तथा प्रारम्भिक स्वरूप कि कड़ी है जो उतना प्रभावशाली तथा संतोषजनक नहीं है। विश्वविद्यालयी स्तर पर संगीत शिक्षा व्यवस्था कई समस्याओ कमियो से घिरी हुई है। सृजनात्मक पृवत्ति कि अपेक्षा अनुकरण कि प्रवित्ति पर अधिक झुकाव है।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

आधुनिक विज्ञानवादी युग में संगीत शिक्षा का विधिवत् उपागम एक आवश्यकता है क्योंकि संगीत अपने आप में अत्यंत गहन एवं विस्तृत आध्यात्मिक भावना से परिपूर्ण इस निष्पत्ति में सक्षम एक ऐसी कला है जिसका क्षेत्र असीमित है। संगीत का आध्यात्मिक पक्ष जहां एक ओर मनुष्य की आंतरिक वृत्तियों से परिष्कृत मानव की आत्मा को दिव्यात्मक रूप से प्रकाशित करने पर बल देता है। वहीं उसका शास्त्रीय पक्ष संगीत कला के बाह्य सौन्दर्य का मूल्यांकन कर उसमे निहित दिव्यात्मक रूप को प्रकाशित करके संगीत की इस निष्पप्ति विषयक प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। इन सब तत्वों से परे संगीत का सामान्य प्रभाव एवं प्रयोग मनुष्य के दैनिक जीवन में समाविष्ट होकर उसके दैनिक जीवन का ही एक अंग बन जाता है अत: सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संगीत को व्यवस्थित, विकसित व परिष्कृत करने की दृष्टि से ही संगीत की शिक्षण व्यवस्था महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। संगीत एक क्रियात्मक कला है जिसमे निपुणता बिना शिक्षा के प्राप्त नहीं की जाती है साथ ही यह एक ललित कला भी है जिसका आंतरिक एवं बाह्य रूप से विकास शिक्षा के बिना

आधारहीन है अस्तु कलात्मक, ज्ञानात्मक व रचनात्मक दृष्टिकोण से इच्छित फल की प्राप्ति हेतु संगीत शिक्षण की महती आवश्यकता है।

1.3 समस्या कथन

"माध्यमिक विधार्थियों में संगीत की प्रवीणता का आध्ययन: बांदा जनपद के विशेष संदर्भ में"

1.4 समस्या में निहित शब्दो की व्याख्या

माध्यमिक माध्यमिक शिक्षा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है. माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक विधालयों हेतु शिक्षक तैयार करती है साथ ही वह प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के बीच सम्पर्क सूत्र का कार्य भी करती है। कक्षा 6 से 12 तक की शिक्षा माध्यमिक शिक्षा कहलाती है।

विद्यार्थी विद्यार्थी वह होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है। विद्यार्थी का अर्थ 'विद्या चाहने वाला' विद्यार्थी किसी भी आयु वर्ग का हो सकता है। बालक, किशोर, युवा व वयस्क. प्रस्तुत शोध से संगीत प्रवीणता हेतु माध्यमिक स्तर के विधार्थियों का चयन किया गया है।

संगीत सुव्यवस्थित ध्वनि जो रस की सृष्टि करे संगीत कहलाती है। गायन, वादन, नृत्य इन तीनों कलाओं के समावेश को संगीत कहते हैं. गायन मानव के लिये उतना ही स्वभाविक है जितना की भाषण. जब लय व स्वर व्यवस्थित रूप धारण करते है तब एक कला का प्रादुर्भाव होता है इस कला को संगीत कहते है।

प्रवीणता प्रवीणता का तात्पर्य क्षेत्र विशेष में दक्षता व निपुणता प्राप्त करना है। अर्थात किसी काम आदि में प्रवीण होने की अवस्था, गुण या भाव प्रवीणता कहलाती है।

बांदा जनपद बांदा जिला भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक जिला है। जिले का क्षेत्रफल 4408 वर्ग किमी० है बांदा जिले का मुख्यालय है। यह जिला चित्रकूट धाम मण्डल के अंतर्गत आता है।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध में अध्ययन का उद्देश्य उस अध्ययन को निश्चित दिशा प्रदान करता है। जिससे अध्ययन सरल सुव्यवस्थित एवं सुगम हो जाता है। अत: शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन के निम्न उद्देश्यो का निर्धारण किया गया है -

1. संगीत के सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक पक्ष का अध्ययन करना।

2. यू॰पी॰ बोर्ड संगीत पाठ्यक्रम तथा प्रयाग संगीत समिति द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति का अवसर देना।
4. यू॰पी॰ बोर्ड तथा प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. यू॰पी॰ बोर्ड तथा प्रयाग संगीत समिति के माध्यमिक विद्यार्थियों में संगीत शिक्षण की न्यूनताओं का अध्ययन करना।
6. प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना।
7. माध्यमिक स्तर पर संगीत शिक्षण से संबंधित प्रभावसली सुझाव प्रस्तुत करना।

1.6 परिकल्पना

यू॰पी॰बोर्ड माध्यमिक विद्यालय (सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज केनपथ, बांदा) तथा प्रयाग संगीत समिति (नटराज संगीत संस्थान, बाँदा) के विद्यार्थियों की संगीत प्रवीणता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.7 परिसीमांकन

प्रत्येक शोध की एक सीमा होती है। उसी सीमा तक उसके निष्कर्ष वैध होते है। प्रस्तुत शोध संगीत के क्रियात्मक पक्ष से जुड़ा है, अत: संगीत के प्रयोगात्मक पक्ष के महत्व को स्पष्ट किया गया है। किसी कार्य को करने से पहले उसकी सीमा और परिसीमा का निर्धारण करना आवश्यक है। जिस प्रकार किसी भवन का निर्माण करने से पहले प्राप्त जगह की सीमा का ज्ञान होना आवश्यक है। प्रस्तावित शोध कार्य में समस्या की परिसीमा निम्न है –

- शोध कार्य में बांदा जनपद के यू० पी० बोर्ड माध्यमिक विद्यार्थियों हेतु सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, केनपथ बांदा का चयन किया गया।
- प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों हेतु नटराज संगीत संस्थान, कालू कुआं बांदा का चयन किया गया।
- 50 छात्राओं में से 25 सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज तथा 25 नटराज संगीत संस्थान से ली गयी।
- शोधकर्त्री द्वारा निर्मित साक्षात्कार अनुसूची सीमा ही शोध की परिसीमा है।

1.8 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

संगीत एक पर फार्मिंग आर्ट है, परंतु सभी इस कला में पारंगत नहीं हो पाते। संगीत अभ्यास उच्च निर्देशन के साथ साथ एक सफल कलाकार बनने के लिए गुरु, माता-पिता आदि में से किसी न किसी की सहायता प्राप्त होना

आवश्यक है। एक मुकाम पर पहुँचने के बाद कुछ कलाकार मंच प्रदर्शन को ही अपना लक्ष्य बनाकर धन व यश प्राप्त करते है, तो कुछ लोग आवश्यक उपाधियाँ प्राप्त करके अपने सीमित क्षेत्र में ही कार्य करते है। उपाधियां संगीत अध्ययन हेतु आज अनिवार्य बन गयी है। संगीत के संस्थागत शिक्षण की व्यवस्था आधुनिक युग के पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के प्रभाव में बहुत विकसित हुई। संगीत की शिक्षा सामूहिक रीति से संस्थाओं में आरंभ हुई। जन समान्य में अधिक प्रचार एवं शिक्षण में स्तरीकरण के उदेद्श्य से संगीत की संस्थागत शिक्षण विधि का प्रचलन आज अपने पूर्ण विकास पर है। वर्तमान में संगीत के शिक्षण को एक विषय के रूप में स्वीकार किया गया है।

द्वितीय अध्याय

“संगीत दो आत्माओं के बीच अनंत को भरता है।”

(रवीन्द्र नाथ टैगोर)

संबन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

संबन्धित साहित्य का अध्ययन शोध का अभिन्न अंग होता है। यह किसी शोध कार्य के लिए समस्या विशेष के मूल में पहुँचने का महत्वपूर्ण साधन है तथा अनुसंधान का प्राथमिक आधार है। संबन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबन्धित पुस्तकों, लेख, पत्र-पत्रिकाओं तथा शोध प्रबंधों से है जिसके माध्यम से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन के लिए परिकलपनाओं का निर्माण व अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। अतीत के अनुभवों का लाभ उठाते हुए अपनी यात्रा की सीढ़ियों की ओर अग्रसर होता है। साहित्य का सर्वेक्षण प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण कदम है। साहित्य के सर्वेक्षण से आवश्यक पुनरावृत्ति नहीं होगी। अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विषय क्षेत्र के वर्तमान काम की सीमा रेखा की जानकारी होगी एवं पुराने अनुसंधान ग्रंथों के अध्ययन से उसे अपने अनुसंधान कार्य की मौलिक संरचना प्रदान करने में अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है।

जे० एफ० रमल के अनुसार,"नियमानुसार कोई भी शोध उस समय तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता जब तक की उस शोध से संबन्धित साहित्य का लिखित विवरण प्रस्तुत अध्ययन में न दिया गया हो।"

डब्लू० आर० बोरंग के अनुसार, "किसी भी अनुसंधान कर्ता को अपनी शोध समस्या के चयन, प्रकल्पना का निर्माण तथा अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने के लिए ठोस आधारों की आवश्यकता होती है। यह ठोस आधार पुस्तकें, ज्ञानकोशों, पत्र-पत्रिकाओं, अभिलखों तथा पूर्व में सम्पन्न हुये शोध परिणामो से प्राप्त होते है तदर्थ अनुसंधानकर्ता को संदर्भ साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता होती है।"

साहित्य शब्द किसी विषय में अनुसंधान की विषय के ज्ञान की ओर संकेत करता है, जिसके अंतर्गत सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक शोध अध्ययन आ जाते है।

चित्र संख्या -2.28

पुनरावृत्ति की रक्षा हेतु
अंतर्दृष्टि के विकास हेतु
अनुसंधान नियोजन
संबन्धित साहित्य सर्वेक्षण का महत्व
समस्या चयन एवं परिसीमन हेतु
विषयवस्तु की उपलब्धता हेतु
शोध को त्रुटियों से बचाने हेतु
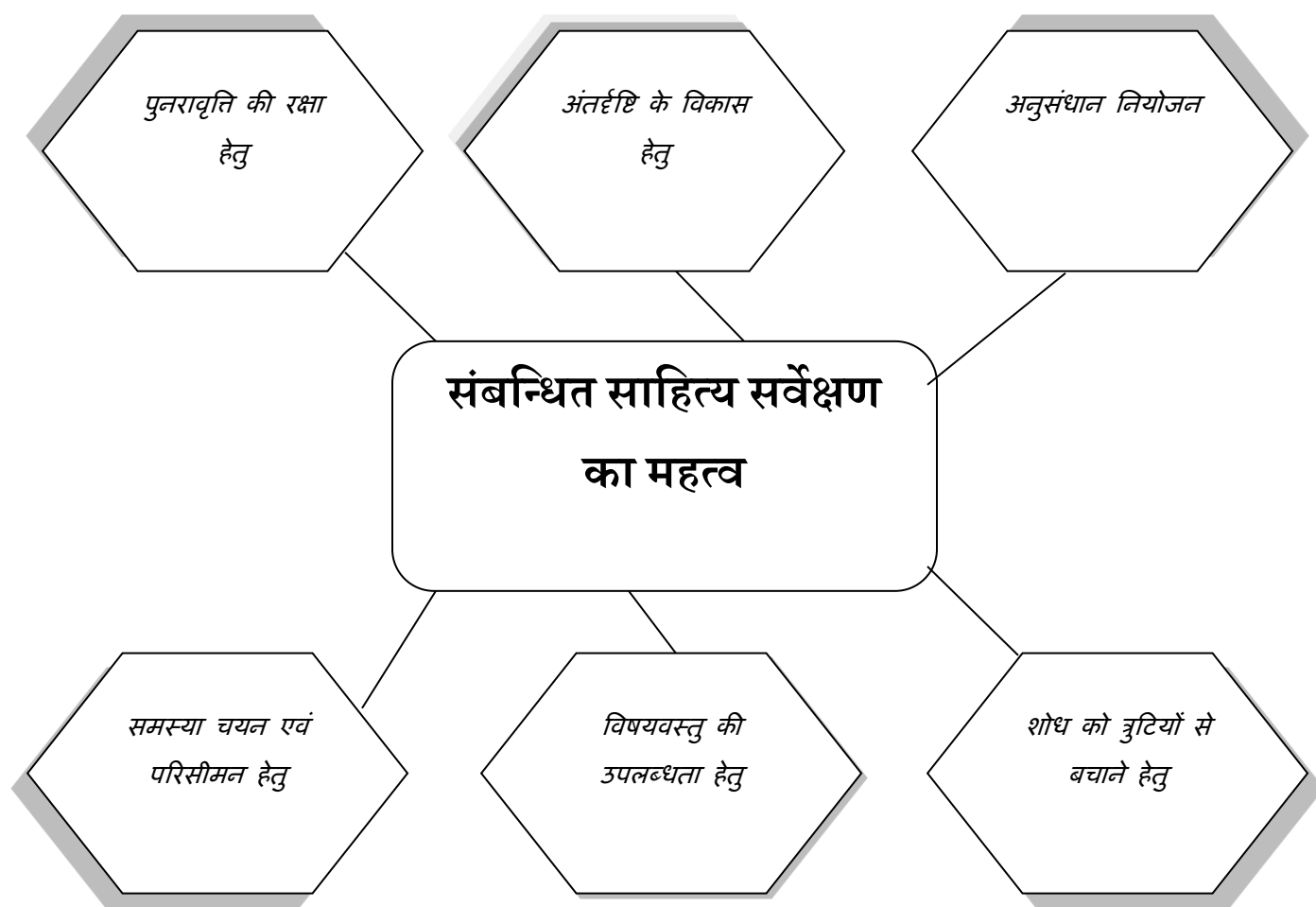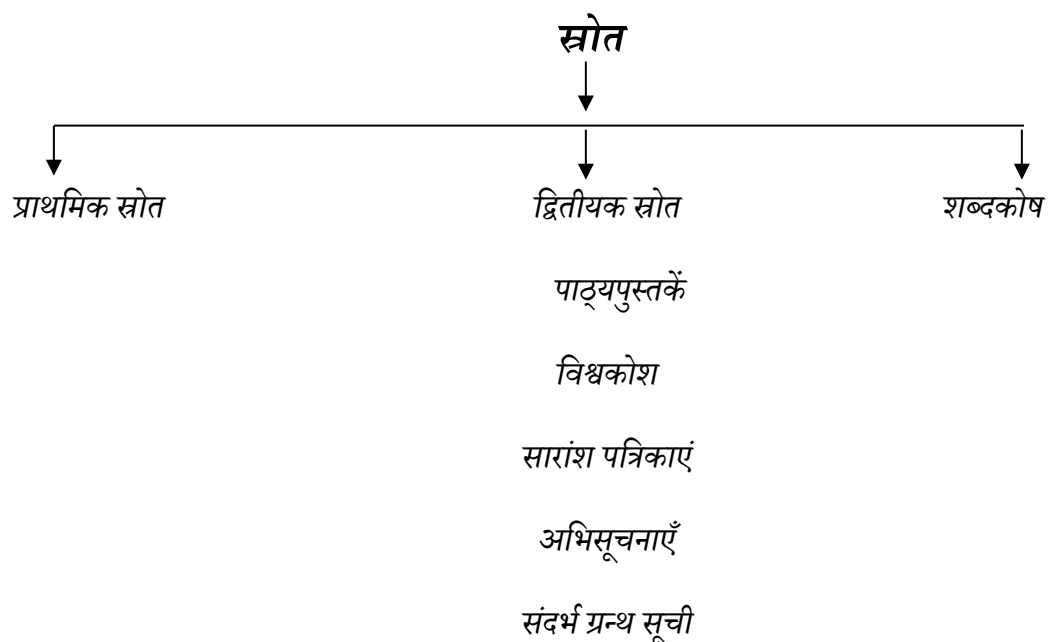
2.2 संगीत शिक्षा से संबन्धित शोध अध्ययन

चयनित शोध से संबन्धित जिन जिन पक्षों पर अध्ययन हुये हैं यह जानने हेतु शोधकर्त्री को विभिन्न अध्यायों से अध्ययन करना समीचीन प्रतीत हुआ। शोध से संबन्धित साहित्य का अध्ययन का विवरण निम्नवत किया गया है।

- **ब्राउन, मैरी जेनेट (1996) ने ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी में" *Students attitude towards instrumental music education during the first year instruction*"** विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है –

१. प्रारम्भिक वाद्य संगीतज्ञों की वाद्य संगीत के प्रति अभिवृत्ति तथा प्रथम वर्ष में उनकी अभिवृत्ति में परिवर्तन का अध्ययन करना।

२. सांगीतिक अभिरुचि व संगीतिक उपलब्धि के मध्य संबंधों को ज्ञात करना।

३. विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर उनकी प्रवेश आयु के प्रभाव व उसका प्रारम्भिक बैंड कार्यक्रमों से सम्बन्ध का अध्ययन करना।

४. संगीत के प्रति अभिभावकों व शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण की विद्यार्थियों की उचित प्रतिक्रियाओं से तुलना करना था।

- दास, वी० प्रेम कुमारी (1991) ने *"Development of Audio Visual aids for improving music education and to study their effect"* विषय पर शोध कार्य किया। नवीन शिक्षण विधि एवं दृश्य श्रव्य सामग्री के प्रयोग द्वारा विद्यार्थिओं की संगीत उपलब्धि, रूचि एवं बोध का अध्ययन करते हुए सामान्य संगीत शिक्षण विधि से तुलनात्मक अध्ययन करना। न्यादर्श हेतु कक्षा ९ की ८२ छात्राओं पर प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग करते हुए अध्ययन किया गया जिसके लिए स्वनिर्मित संगीत अभिक्षमता परीक्षण एवं संगीत रूचि परीक्षण का प्रयोग किया गया। सांख्यिकी विधि के अंतर्गत मध्यमान, मानक विचलन एवं t परिक्षण का प्रयोग किया गया।

- शर्मा, पुष्पेंन्द्र ने राजस्थान विश्वविद्यालय से **"संगीत की उच्च स्तरीय शिक्षा प्रणाली: एक समीक्षात्मक अध्ययन"** पर कार्य किया। अध्ययन के अंतर्गत शोधार्थी ने हरियाणा प्रदेश की भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रदेश की नामकरण संबंधी विभिन्न मतो पर प्रकाश डाला है। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत संस्कृति के स्वरूप तथा कलाओं के विकास क्रम की सविस्तार विवेचना की है। अध्ययन में हरियाणा की उच्चस्तरीय संगीत शिक्षण संस्थाओं का परिचय भी दिया गया है एवं संगीत शिक्षण की विधियों का विवेचन विस्तृत रूप से किया गया है।

- मिश्रा, रागिनी 1983 में " संगीत के प्रति रुचि, अभिवृति एवं अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन " विषय पर लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। इस अध्ययन के उद्देश्य - संगीत विषय का अध्ययन करने वाली छात्राओं की संगीत के प्रति रुचि अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना। वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत शोध कार्य किया गया एवं कक्षा 8 की कुल 100 छात्राओं को यादृच्छिक विधि से चुना गया। रुचि, अभिवृति तथा अभिरुचि के मापन हेतु आनंद प्रकाश शर्मा द्वारा संगीत रुचि एवं अभिवृति परीक्षण एवं अभिरुचि परीक्षण का चयन किया गया। प्राप्त निष्कर्षो के अनुसार संगीत विषय का अध्ययन करने वाली छात्राओं की संगीत में विशेष रुचि पाई गयी तथा विषय का अध्ययन न करने वाली छात्राओं ने भी सकारात्मक अभिवृति व्यक्त की। तुलनात्मक रूप से अभिवृति, रुचि व अभिक्षमता में कोई अंतर नहीं देखा गया।

- भटनागर चारुलता (1984) ने "जूनियर हाईस्कूल में संगीत शिक्षण हेतु दृश्य श्रव्य सामग्री पर आधारित नवीन शिक्षण विधि का विकास एवं उसकी उपादेयता" विषय पर लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया अध्ययन के उद्देश्य संगीत शिक्षण हेतु नवीन शिक्षण विधि का विकास करना एवं इस विधि के द्वारा व्यवहार में हुये परिवर्तनों का अध्ययन करना व परंपरागत विधि से प्राप्त ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया व न्यादर्श हेतु कक्षा -

6 के विद्यार्थियों का चयन किया गया। उपकरण के रूप में विभिन्न दृश्य-श्रव्य सामाग्री को विकसित किया एवं उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया गया। निष्कर्ष स्वरूप शोधार्थी के अनुसार परंपरागत विधि की तुलना में प्रस्तावित नवीन शिक्षण विधि की सहायता से शिक्षण कार्य करवाने पर छात्राओं की उपलब्धि में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों रूपों में वृद्धि हुई साथ ही छात्राओं की संगीत संबंधी रुचि पर सफल प्रभाव पड़ा।

- शर्मा, सुनीता (1991) ने "माध्यमिक स्तर पर संगीत शिक्षा एवं संगीत शिक्षण हेतु उपलब्ध सुविधाओं का सर्वेक्षण" विषय पर शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर संगीत विषय की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना था। अनुसंधान हेतु वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि तथा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। न्यादर्श हेतु जिन विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर संगीत विषय का पठन होता है, उनका चयन किया ग्र। शोध उपरांत प्रपट निष्कर्ष में शोधार्थी ने ज्ञात किया कि संगीत-विषय के क्रियात्मक पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन एवं वर्तमान में महाविद्यालयों में संगीत परिस्थितियाँ यथा भौतिक उपकरण, शिक्षकों की कमी छात्राओं की संख्या का अधिक होना व प्रत्येक छात्रा हेतु पर्याप्त स्थान की कमी होना, समय सारिणी में संगीत विषय को महत्व न प्रदान करना आदि संतोषजनक नहीं है। यदि इन बिन्दुओं का विद्यालय के प्राचार्यों कार्यकारिणी समिति के सदस्यों एवं शिक्षा विभाग के अधिकारियों से परिचय कराया जाए तो कुछ समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

2.5.4 अध्ययन से संबन्धित लेख, पत्र –पत्रिकाएँ, समाचार इत्यादि

- **छायानट-उत्तर प्रदेश संगीत अकादमी,लखनऊ**

संगीत नाटक अकादमी की ओर से प्रकशित होने वाली प्रसिद्ध पत्रिका छायानट संगीत नाटक अकादमी की ओर से प्रकाशित होने वाली हर बार एक अलग विषय पर निकलती है। इस पत्रिका का अगला अंक दिसम्बर में शहनाई वादक व देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मनित उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर आधारित होगी।

- **म्यूजिक मिरर- संगीत कार्यालय हाथरस**

म्यूजिक मिरर पत्रिका 1995 में लक्ष्मीनारायण गर्ग संगीत कार्यालय हाथरस से प्रकाशित होने वाली है। इस पत्रिका में फिल्म संगीत तथा शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र का सम्पादन भी किया यह एक अँग्रेजी मासिक पत्रिका है।

- **भातखण्डे संगीत शास्त्र**

पण्डित भातखण्डे जी द्वारा रचित भातखण्डे संगीत शास्त्र को हिंदुस्तानी संगीत पद्धति के नाम से भी जाना जाता है। मूल रूप से यह ग्रंथ मराठी भाषा में लिखे गए थे। इन ग्रंथो का हिन्दी रूपान्तरण

श्री विश्वंभर नाथ भट्ट, श्री सुदामा प्रसाद दुबे तथा श्री प्रभुलाल गर्ग जी ने किया। इस ग्रंथ का प्रकाशन संगीत कार्यालय हाथरस ने 1951 में किया गया था।

अजीत समाचार, (2015) में गोरी पठारे की कर्ण प्रिय लहरियों से श्रोता मंत्रमुग्ध हुये। यह संगीत सम्मेलन तीन दिवसीय वार्षिक 38वां चंडीगढ़ में सम्पन्न हुआ। आज समाज, (2015) में पठारे के संगीत सम्मेलन में आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते कलाकारों ने श्रोताओं का मन मोहा। समाचार जगत, (2017) प्रस्तुत समाचार में अनावरण अमृत सिद्धि महोत्सव के मुख्य संयोजक राजेन्द्र के० गोधा ने किया मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज ने आचार्य श्री को विनयांजली दी तथा संगीत के साथ नृत्यमय महापूजा का आयोजन किया गया। दैनिक एक्सप्रेस न्यूज़, (2018) जिला निर्वाचन अधिकारी मंजु शर्मा के निर्देशन में जिले में स्वीप गतिविधियो के अंतर्गत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए गए। निम्न समाचारों की विस्तृत जानकारी परिशिष्ट संख्या-2 में दी गयी है।

समीक्षात्मक निष्कर्ष

उपर्युक्त सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के विभिन्न तथ्यों यथा-संस्कृति, संगीत एवं शिक्षा का अध्ययन व विवेचन करने के पश्चात सम्पूर्ण तथ्यों का विश्लेषण करके शोधकर्त्री इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि वैदिक कालीन संस्कृति, शिक्षा एवं संगीत अपने उत्कृष्ट स्थान पर विद्यमान है और तीनों ही एक दूसरे के पूरक माने गए है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व अधूरा सा प्रतीत होता है क्योंकि संगीत ही सृष्टि का स्रजन करता है और प्रलय के उपरांत सृष्टि के विनष्ट हो जाने पर संगीत का ही अस्तित्व रहता है। अत: वैदिक कालीन समाज में सांस्कृतिक शिक्षा के उदविकास एवं संस्कृति के हस्तांतरण एवं संवर्धन में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि विभिन्न अनुसंधानकर्ताओं द्वारा संगीत उपयोगिता की ओर सतत रूप से शोध किया गया है, तथा उसकी विषय सजगता के साथ परस्पर संबंधो पर भी गहन अध्ययन हुआ है। विद्यालय स्तर में संगीत प्रवीणता विषय महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस संदर्भ में अपने अध्ययन में यह पाया की अध्यापक विद्यालयों में संगीत विषय को एक मात्र विषय के रूप में ही शिक्षा दे रहे है, तथा क्रियात्मक पक्ष पर विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है जबकि प्रयाग संगीत समिति द्वारा संस्थानों में क्रियात्मक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया जाता है अपने इस लघु शोध में माध्यमिक विद्यालय तथा प्रयाग संगीत संस्थानों में संगीत प्रवीणता के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया आज के इस युग में संगीत विषय की सजगता व्यक्तित्व के अन्तर्मुखी, उभयमुखी तथा बहिर्मुखी पक्ष को प्रभावित करता है।

तृतीय अध्याय

"संगीत अव्यक्त को व्यक्त करता है और वह जिस पर चुप रहना असंभव है"।

(Victor Hugo)

शोध अभिकल्प

3.1 शोध कार्यप्रणाली

अनुसंधान अभिकल्प वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रम का एक अभिन्न अंग है। अध्ययन समस्या के संदर्भ में अनुसंधान अभिकल्प की रचना विश्वसनीय व वैध आंकड़ो के संकलन में अपूर्व सुविधा प्रदान करती है। दूसरे शब्दो में शोध-प्रारूप शोध की रूप रेखा तैयार करने की विधि है। जिसमे शोध उद्देश्यो, शोध-विधि तथा प्रविधियाँ, न्यादर्श प्रदत्तों के संकलन की प्रविधियों, प्रदत्तों के विश्लेषण की सांख्यिकी प्रविधियों तथा शोध-प्रबंध का आवश्यक रूप में उल्लेख किया जाता है।

"अनुसंधान अभिकल्प नियोजित अन्वेषण की एक जैसी योजना, संरचना तथा व्यूह रचना होती है, जिसके आधार पर अनुसंधान प्रश्नो के उत्तर प्राप्त किए जाते है और प्रसरण पर नियंत्रण स्थापित किया जाता है।"

इस प्रकार शोध का अभिकल्प मूलत: वह समप्रत्यात्मक संरचना है जिसके तहत अनुसंधान की क्रिया सम्पन्न होती है। इससे एक ऐसी योजना का बोध होता है जिससे पूरे अध्ययन में परिशुद्धता का समावेश करते हुये सर्वाधिक रूप से यथार्थ पूर्ण सामान्यीकरण, वर्णन, व्याख्या एवं भावी कथन किया जा सके।

3.1.1 शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य की समस्या के समाधान हेतु अर्थात तथ्यो के अंतर्सम्बन्ध एवं तुलनात्मक अध्ययन के लिए खोज प्रक्रिया में संगीत प्रवीणता समूह साक्षात्कार का प्रयोग किया गया। शोध कार्य विद्यालय स्तर पर संगीत प्रवीणता के स्तर को ज्ञात करने के लिए विशिष्ट ढंग से नियोजित किया जाता है जोकि शोध प्रविधि, प्रतिदर्श एवं आंकड़ा संग्रह के अनुरूप है।

शोध की निम्नलिखित आधारभूत विशेषतओं को ध्यान में रखते हुये प्रयोगात्मक शोध के अंतर्गत साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है ।

- समस्या के विशिष्ट स्थिति के संबंध में विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति जैसे –
  - *क. समस्या से संबन्धित प्रश्नो के उपयुक्त उत्तर प्राप्त करने के लिए ।*
  - *ख. छात्राओं की संगीत प्रवीणता स्तर को ज्ञात करने के लिए ।*
  - *ग. चरो के मध्य अंतर्संबंध ज्ञात करने के लिए ।*
- समूह साक्षात्कार की सहायता से आंकड़े संग्रह करना।
- विभिन्न सांख्यिकी विधियों द्वारा आंकड़ा विश्लेषण।
- तालिकाओं एवं आरेखों का उपयुक्त प्रस्तुतीकरण।

3.1.2 प्रतिदर्श का प्रारूप एवं प्रतिचयन विधि

शोधकर्ता शोध के लिए समग्र से निश्चित संख्या में कुछ सदस्यों या वस्तुओं का चयन कर लेता है। इस चयनित संख्या को ही न्यादर्श कहा जाता है। न्यादर्श चयन करने की प्रविधि को न्यादर्श कहा जाता है.

कार्लिंगर ने न्यादर्श को परिभाषित करते हुये कहा है कि, " *किसी जीव संख्या या समिष्ट से प्रतिनिधि के रूप में किसी भी संख्या का चयन प्रतिदर्शन कहलाता है।"* अत: न्यादर्श ,जनसंख्या से न्यादर्शन द्वारा प्राप्त संख्या है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बांदा जनपद स्थित सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, केनपथ बांदा तथा नटराज संगीत संस्थान बांदा से प्रतिदर्श के रूप में क्रमशः 25-25 छात्राओं का चयन किया गया। शोध कार्य हेतु संस्थाओं का चयन पक्षपात रहित प्रतिनिध्यात्मक है। साक्षात्कार हेतु क्रमश: कक्षा 10 तथा द्वितीय वर्ष (मध्यमा) की छात्राओं का चयन किया गया। 50 छात्राओं के चयन को स्वरूप तालिका संख्या ममें प्रदर्शित है-

प्रतिदर्श प्रारूप

तालिका सं०- 3.1

क्रम संख्या	**विद्यालय**	**कक्षा**	**छात्राओं की संख्या**	**योग**
1	सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, केनपथ बांदा	10	25	50
2	नटराज संगीत संस्थान, बांदा	द्वितीय वर्ष(मध्यमा)	25	50
	कुल योग		50	50

3.1.3 न्यादर्श का आकार

अध्ययन के लिए बंदा जनपद के लिए 2 विद्यालयों से 50 छात्राओं का चयन किया गया जिनका उल्लेख उपर्युक्त तालिका संख्या- 3.1 में किया गया है। बांदा जनपद के विद्यालयों की सूची परिशिष्ट-2 में दी गयी है।

3.2 शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा शोध की परिशुद्धता को ध्यान में रखते हुये स्वनिर्मित प्रयोगात्मक संगीत प्रवीणता समूह साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। प्रयुक्त साक्षात्कार अनुसूची स्वयं शोधकर्त्री द्वारा निर्मित है। साक्षात्कार द्वारा यू०पी० बोर्ड की कक्षा -10 तथा प्रयाग संगीत समिति की द्वितीय वर्ष (मध्यमा) की छात्राओं की संगीत प्रवीणता का मापन किया गया।

साक्षात्कार में 15-15 प्रश्न विभिन्न पाठ्यक्रमों के अनुसार यू० पी० बोर्ड तथा प्रयाग संगीत समिति से लिए गए। प्रत्येक प्रश्नों में से कुछ विकल्प प्रश्न के आधार पर साक्षात्कार लिया गया तथा जिस प्रकार का प्रदर्शन छात्राओं द्वारा दिया गया उसको सामान्य/अच्छा में विभाजित किया गया।

`3.3 प्रदत्तों का संकलन

शोधकर्त्री प्रदत्त संकलन के लिए प्रतिदर्श में चयनित छात्राओं से मिलकर उन्हे अपने शोधकार्य के बारे में बताया तथा संगीत प्रवीणता साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से साक्षात्कार देने का आग्रह किया तथा उन्हे आश्वस्त किया गया कि साक्षात्कार का प्रयोग केवल शोधकार्य हेतु किया जाएगा। शोधकर्त्री द्वारा साक्षात्कार लेने के बाद सभी छात्राओं का सहयोग के लिए उनका आभार प्रकट किया।

3.4 परीक्षणों का फलांकन

प्रयाग संगीत समिति एवं यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में संगीत के क्रियात्मक पक्ष से संबन्धित 15-15 प्रश्न किए गए (उनके पाठ्यक्रम के अनुसार)। प्रत्येक प्रश्न के संदर्भ में विद्यार्थियों की अनुक्रिया का अंकन निम्न तीन श्रेणियों में किया गया-

संगीत साक्षात्कार का फलांकन

सामान्य	अच्छा	नहीं

विद्यार्थी द्वारा औसत स्तर की प्रस्तुति देने पर सामान्य के अंतर्गत एक अंक सुंदर प्रस्तुति की दशा में अच्छा के अंतर्गत एक अंक तथा प्रस्तुति देने में असमर्थता व्यक्त करने पर नहीं के अंतर्गत शून्य अंक दिया गया।

3.5 आंकड़ो की गणना हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी

एकत्रित आंकड़ों को सारणीबद्ध करते हुए आवश्यकता अनुसार वर्गवार विभाजित किया गया तथा कम्प्युटर के माइक्रोसॉफ़्ट एक्सेल की फ़ाइल में संरक्षित किया। विस्तृत फलांकन सारिणी परिशिष्ट संख्या -3 में दी गयी है। शोधार्थी द्वारा व्यक्त किए गए तथ्यों एवं उत्तरों का तब तक वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जा सकता जब तक की उन्हे सांख्यकीय परीक्षण हेतु अंको में परिवर्तित न कर लिया जाये।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में पूर्व निर्धारित संस्थाओं से आंकड़ों का संकलन करने के पश्चात संगीत प्रवीणता की गणना हेतु तालिकायें बनाई गयी। परिकल्पना के परीक्षण के लिए एकत्रित किए गए आंकड़ों को तालिकाबद्ध कर विश्लेषित करने हेतु अनेक प्रकार की विश्लेषण तकनीकी प्रायिक्त की जाती है। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त परिणाम ज्ञात करने हेतु निम्नलिखित सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया।

- **मध्यमान (M)**

परिभाषा- गणितीय मध्यमान भिन्न-भिन्न आंकड़ों के योग को उनकी संख्या में विभाजित करने पर प्राप्त मूल्य है।

सूत्र- $M= \frac{\Sigma X}{N}$

मध्यमान की गणना करना

- ❖ किसी भी नंबर समूह का मध्यमान निकालने के लिए एक्सेल के “AVERAGE” फंक्शन का इस्तेमाल करें: एक्सेल स्प्रेडशीट में नंबर्स को एंटर करें। आप जहां पर मीन जानना चाहते हैं, वहाँ पर क्लिक करें।
- ❖ “FORMULAS” क्लिक करें एयूआर “INSERT FUNCTION” टैब को चुनें: नंबर्स को आपके एक्सेल स्प्रेडशीट की row या column में enter करें।
- ❖ नीचे स्क्रॉल करें और “AVERAGE” फंक्शन चुनें।
- ❖ नंबर 1 बॉक्स में आपके नंबर की लिस्ट के लिए एक सेल रेंज, जैसे कि, D4:D13 एंटर करें और OK क्लिक करें।
- ❖ अब आपके द्वारा चुनी हुई सेल में उस लिस्ट का मीन (एवरेज) नजर आयेगा।

- **मानक विचलन (SD)**

परिभाषा- प्रायिकता सिद्धान्त और सांख्यिकी में, किसी सांख्यकीय जनसंख्या, डाटा सेट या प्रायिकता वितरण के प्रसरण के वर्गमूल को मानक विचलन कहते है।

सूत्र- $\sigma=\sqrt{\frac{\Sigma x^2}{N}}$

मानक विचलन की गणना करना

- ❖ मानक विचलन के लिए STDEV फंक्शन का इस्तेमाल करें।
- ❖ “FORMULAS” क्लिक करें और एक बार फिर से “INSERT FUNCTION” (fx) टैब को चुनें।
- ❖ DIALOG BOX पर स्क्रोल डाउन करें और STDVE फंक्शन चुनें।
- ❖ नंबर1 बॉक्स में आपके नंबर की लिस्ट के लिए, एक सेल रेंज एंटर करें और OK क्लिक करें।
- ❖ अब आपके द्वारा चुनी हुई सेल में मानक विचलन नजर आएगा।

- **अनुमानात्मक सांख्यकीय प्रविधि**

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु अग्रांकित अनुमानात्मक सांख्यकीय प्रविधि प्रयुक्त हुई-

't' परीक्षण- (दो बड़े स्वतंत्र समूहों के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता की जांच) t- test से आशय किसी भी सांख्यकीय परिकल्पना से है जिसमें परीक्षण की सांख्यिकी 'नल हायपोथेसिस' के अंतर्गत स्टूडेंट टी वितरण का अनुसरण करती है। जब प्रतिदर्शों का आकार 30 से कम होता है तो उनके मध्यमानों के अंतर की जांच t- test द्वारा की जाती है। t- test की गणना निम्न सूत्र द्वारा की जाती है-

$$\mathbf{t\,(test)} = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{(SD1)^2}{N1-1} + \frac{(SD2)^2}{N2-1}}}$$

जहां M_1 = पहले का समांतर माध्य

M_2 = दूसरे का समांतर माध्य

N1 = पहले समूह का आकार

N2= दूसरे समूह का आकार

$\sigma 1$= पहले समूह का मानक विचलन

$\sigma 2$= दूसरे समूह का मानक विचलन

- **दण्ड आरेख**

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की संगीत प्रवीणता की वर्तमान स्थिति के अध्ययन हेतु दण्ड आरेख की रचना की गयी। इसके द्वारा एकल अथवा सामूहिक सांख्यकीय आंकड़ों के मानों को आयतकार दंडों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। जहां प्रत्येक दण्ड की लंबाई उसके द्वारा प्रदर्शित किया जा रहे मान के अनुपात में रखी जाती है।

इस प्रकार प्राप्त मूल्य की 't' तालिका मान में संबन्धित स्वतंत्रांशों (df) पर .05 सार्थकता स्तर की जांच की गयी।

चतुर्थ अध्याय

“ परमेश्वर के वचन के बाद, संगीत की महान कला दुनिया में सबसे बड़ा खजाना है”।

(मार्टिन लूथर)

प्रदत्तों का प्रस्तुतिकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध उपकरणों के प्रशासन के पश्चात प्रदत्तों का संकलन एवं व्यवस्थापन किया जाता है। अपरिपक्व प्रदत्त तब तक अर्थपूर्ण नहीं होते जब तक उनका विश्लेषण नहीं किया जाता। प्रदत्तों का विश्लेषण अपरिपक्व प्रदत्तों को अर्थपूर्ण बनाता है।

अनुसंधान के तथ्यो का संकलन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, परंतु परीक्षणों से प्राप्त सूचनायेँ जटिल, असम्बद्ध एवं बिखरे रूप में होती है। विवेचनात्मक अध्ययन करने से पूर्व उसे एक निश्चित रूप रेखा प्रदान करना अनिवार्य होता है। इसके लिए प्रदत्तों का वर्गीकरण व सारणीयन किया जाता है, जिसके कारण प्रदत्तों का क्रमबद्ध व सुव्यवस्थित रूप मिल जाता है व इन्हे समझना आसान होता है।

इस अध्याय के अंतर्गत प्रदत्तों के प्रस्तुतिकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण को प्रस्तुत किया गया है। प्रदत्त विश्लेषण को दो चरणों में सम्पन्न किया गया है –

- विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का प्रश्नश: विश्लेषण
- प्रयाग संगीत समिति तथा यू० पी० बोर्ड के विद्यर्थियों में संगीत की प्रवीणता का तुलनात्मक अध्ययन।

4.1 विद्यार्थियो में संगीत की प्रवीणता का प्रश्नश: विश्लेषण

संगीत में विद्यार्थियों की प्रवीणता स्तर को जानने के लिय 25 प्रयाग संगीत समिति तथा 25 यू० पी०बोर्ड की छात्राओ से साक्षात्कार द्वारा अनुक्रियाए प्राप्त की गयी। इस साक्षात्कार में पाठ्यक्रम से संबन्धित 15 कथनो का चयन किया गया प्रत्येक कथन के अंतर्गत विभिन्न विकल्पों द्वारा साक्षात्कार लिया गया।

4.1.1 प्रयाग संगीत समित के विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का प्रश्नश: विश्लेषण –

प्रश्न 4.1.1.1 **निम्न रागो के लक्षण गीत सुनाइए।**

तालिका संख्या 4.1

विद्यार्थियो में रागो के लक्षण गीत संबंधी प्रवीणता ?

क्रम संख्या	रागो के नाम	आवृत्ती (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	18	72
2	भैरवी	13	52
3	बागेत्री	17	68
4	देश	11	44
5	यमन	17	68
6	तोडी	15	60
7	जौनपुरी	6	24
8	भीमपलासी	10	40
9	हमीर	7	28
10	विहागा	10	40
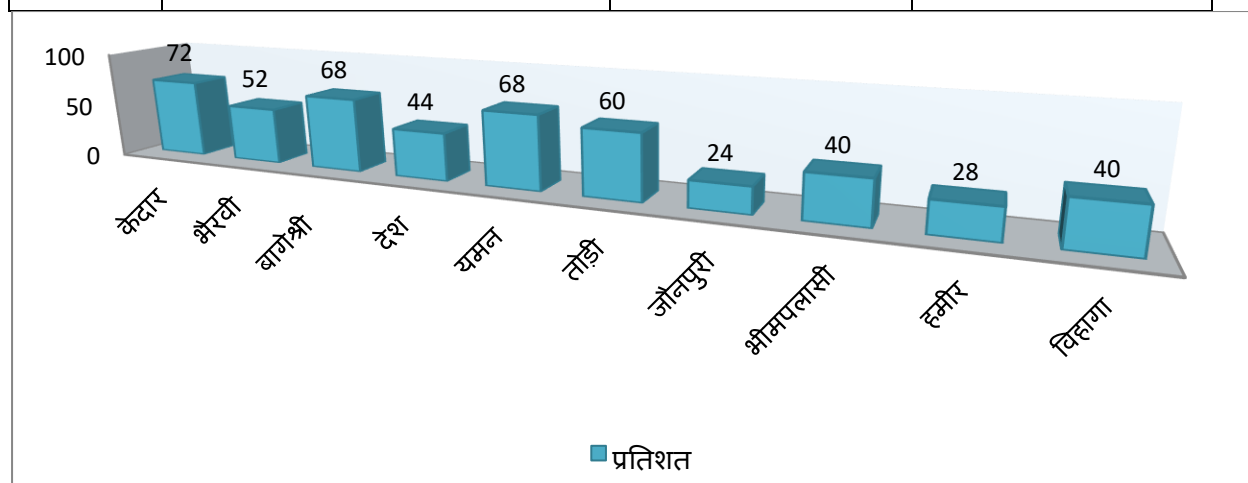
आरेख संख्या 4.1

विद्यार्थियो में रागो के लक्षण गीत संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.1 तथा आरेख संख्या 4.1 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियो में रागो के लक्षण गीत संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की राग केदार के लक्षण गीत गायन में छात्राओ का प्रतिशत सर्वाधिक (72) रहा है। जबकि राग जौनपुरी के संबंध में छात्राओ का प्रतिशत सबसे न्यून (24) रहा है।

- राग केदार के पश्चात छात्राओ का सर्वाधिक प्रतिशत (68) राग बागेश्री तथा राग यमन के संदर्भ में देखने को मिली लगभग आधे विद्यार्थियो की प्रवीणता राग भैरवी (52) के संदर्भ में देखने को मिली।

- आधे से कुछ कम विद्यार्थियों की प्रवीणता राग देश (44) राग भीमपलासी (40) राग देश तथा राग विहाग (40) के संदर्भ में देखने को मिली। राग हमीर के संबंध में लगभग एक चौथाई(28) विद्यार्थी जागरूक मिले।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की राग केदार तथा बागेश्री छात्राओ को गायन में सरल व सहज लगा। क्योकि इस राग में सभी स्वरो का प्रयोग होता है। जबकि राग जौनपुरी तथा हमीर छात्राओ को गायन में कठिन तथा असहज प्रतीत हुए क्योकी इनमे कुछ स्वर वर्जित होते है।
- स्वयं शिक्षको का सभी रागो में पारंगत होना भी इस विसंगति का कारण हो सकता है।
- सभी रागो के अभ्यास हेतु समय की अपर्याप्तता भी एक कारण है।

प्रश्न 4.1.1.2 निम्न रागों के लक्षण गीत सुनाइए ?

तालिका संख्या 4.2

विद्यार्थियो में रागो के बड़ा ख्याल संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागो के नाम	आवृत्ती (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	16	64
2	भैरवी	16	64
3	बागेत्री	10	40
4	देश	13	52
5	यमन	19	52
6	तोडी	9	36
7	जौनपुरी	12	48
8	भीमपलासी	11	44
9	हमीर	14	56
10	विहागा	10	40
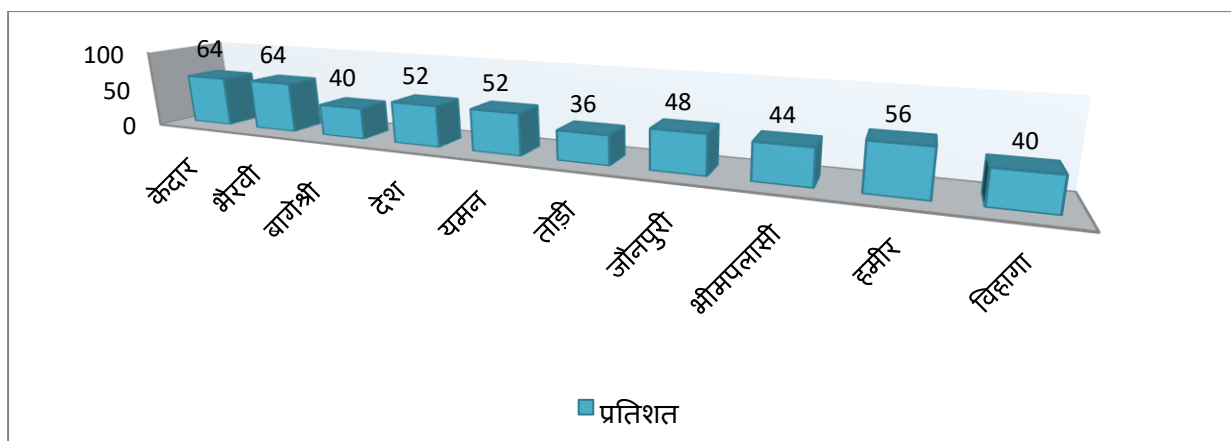
आरेख संख्या 4.2

विद्यार्थियो में रागो के बड़ा ख्याल संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.2 तथा आरेख संख्या 4.2 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियो में रागो के बड़ा ख्याल संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की राग केदार तथा राग भैरवी का बड़ा ख्याल गायन में छात्राओ का प्रतिशत सर्वाधिक (64) रहा है। जबकि राग तोड़ी के संबंध में छात्राओ का प्रतिशत सबसे कम (36) रहा है।
- राग केदार व राग तोड़ी के पश्चात छात्राओ का सर्वाधिक प्रतिशत (56) राग हमीर के संदर्भ में देखने को मिली लगभग आधे विद्यार्थियो की प्रवीणता राग देश व राग यमन(52) के संदर्भ में देखने को मिली। आधे से कुछ कम विद्यार्थियों की प्रवीणता राग जौनपुरी (48) राग भीमपलासी (44) राग देश तथा बागेश्री (40) के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की राग केदार तथा राग भैरवी छात्राओ को गायन में सरल व सहज लगा। क्योकि ये राग चंचल प्रकृति के है जबकि राग तोड़ी तथा बागेश्री छात्राओ को गायन में कठिन तथा असहज प्रतीत हुए क्यो की ये राग गंभीर प्रकृति के है तथा कुछ स्वर वर्जित है।
- स्वयं शिक्षको का सभी रागो में पारंगत होना भी इस विसंगति का कारण हो सकता है।
- सभी रागो के अभ्यास हेतु समय की अपर्याप्तता भी एक कारण है।

प्रश्न 4.1.1.3 **निम्न रागो के प्रारम्भिक सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.3

विद्यार्थियों में रागों कि प्रारम्भिक आलाप संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	17	68
2	भैरवी	11	44
3	बागेश्री	6	24
4	देश	8	32
5	यमन	11	44
6	तोड़ी	11	44
7	जौनपुरी	10	40
8	भीमपलासी	9	36
9	हमीर	13	52
10	बिहाग	10	40
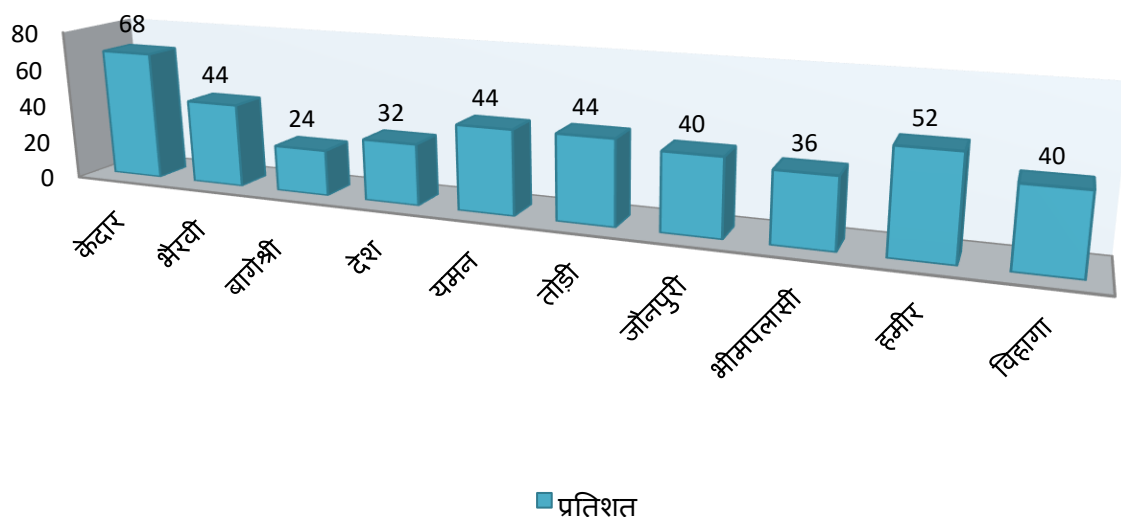
आरेख संख्या 4.3

विद्यार्थियों में रागों कि प्रारम्भिक आलाप संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.3 तथा आरेख संख्या 4.3 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में रागों के प्रारम्भिक आलाप संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि राग केदार के प्रारम्भिक आलाप गायन प्रतिशत सर्वाधिक (68) हैं जबकि राग बागेश्री के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे कम (24) हैं।
- राग केदार के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (52) राग हमीर के संदर्भ में देखने को मिला लगभग आधे विद्यार्थियों कि प्रवीणता राग भैरवी (44), राग यमन(44), राग तोड़ी (44) के संदर्भ में देखने को मिली। आधे से कुछ कम विद्यार्थियों कि प्रवीणता राग जौनपुरी (40) राग विहाग (40) भीमपलासी (36) के संदर्भ में देखने को मिली। राग देश के संदर्भ में लगभग एक चौथाई (32) विद्यार्थी जागरूक मिले।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राग केदार, राग हमीर, राग भैरवी, यमन तथा तोड़ी छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। क्योंकि ये रागों के आलाप में उतार चड़ाव, कण, मींड़ आदि का प्रयोग कम होता हैं।
- जबकि राग बागेश्री, देश, भीमपालसी छात्राओं के गायन में असहज व कठिन प्रतीत हुए क्योंकि छात्राओं को कण, खटका, मीड़ आदि का ज्ञान नहीं कराया गया जिससे विभिन्न रागों में कम प्रवीणता पायी गयी।
- स्वयं शिक्षकों द्वारा भी इन रागों में प्रयोग किये जाने वाले स्वर कण, खटका, मुर्की में पारंगत न होना उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।
- सभी रागों के अभ्यास हेतु समय कि अपर्याप्तता भी एक महत्वपूर्ण कारण हैं।

प्रश्न 4.1.1.4 **निम्न रागो के ध्रुपद गीत सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.4

विद्यार्थियों में रागों के ध्रुपद गीत संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	14	56
2	भैरवी	12	48
3	बागेश्री	12	48
4	देश	12	48
5	यमन	10	40
6	तोड़ी	10	40
7	जौनपुरी	11	44
8	भीमपलासी	12	48
9	हमीर	11	44
10	बिहाग	9	36
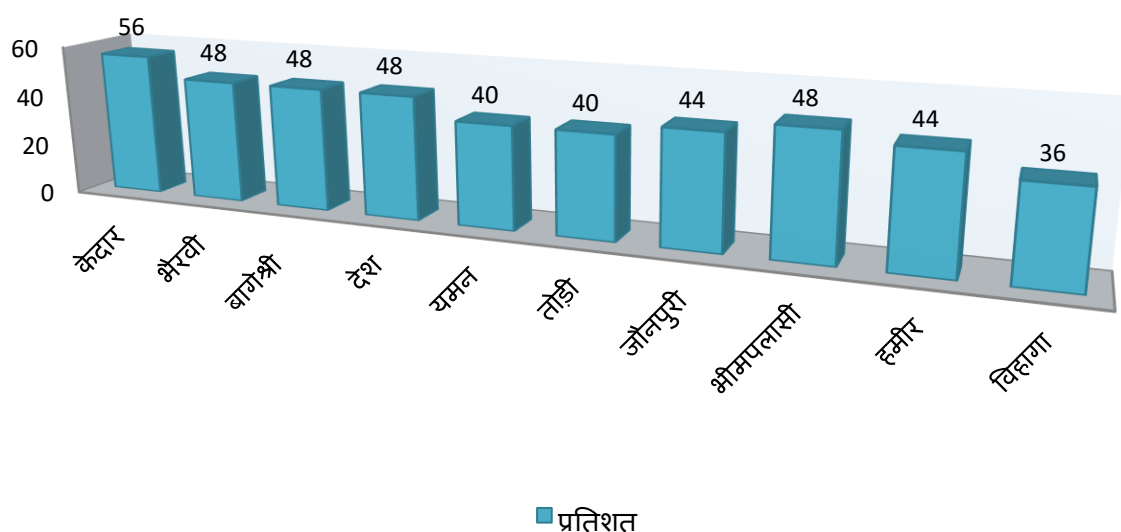
आरेख संख्या 4.4

विद्यार्थियों में रागों के ध्रुपद गीत संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.4 तथा आरेख संख्या 4.4 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में रागों के ध्रुपद गीत संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि राग केदार के ध्रुपद गीत गायन में छात्रओं का प्रतिशत सर्वाधिक (56) हैं जबकि राग विहाग के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे कम (36) हैं।
- राग केदार के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (48) राग भैरवी, राग बागेश्री, राग देश तथा राग भीमपलासी के संदर्भ में देखने को मिला। लगभग आधे विद्यार्थियों कि प्रवीणता राग जौनपुरी (44) हमीर (44), यमन (44), तोड़ी (44) के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राग केदार का ध्रुपद गीत छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। राग भैरवी, राग बागेश्री, राग देश तथा राग भीमपलासी भी गायन में सहज प्रतीत हुये जबकि विहाग (36) तथा तोड़ी (40) यमन (40) छात्राओं को गायन में असहज तथा कठिन प्रतीत हुये क्योंकि ध्रुपद गायन गंभीर प्रकृति का गायन हैं।
- स्वयं शिक्षकों का सभी रागों के ध्रुपद गायन में पारंगत न होना उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।
- सभी रागों के अभ्यास हेतु समय कि अपर्याप्तता भी एक कारण हैं।

प्रश्न 4.1.1.5 **निम्न अलंकार सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.5

विद्यार्थियों में अलंकार गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	अलंकार	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	सरेग ,रेगम	19	76
2	सस, रेरे	18	72
3	सग, रेम	19	76
4	सरेसरेग	19	76
5	सरेगम	18	72
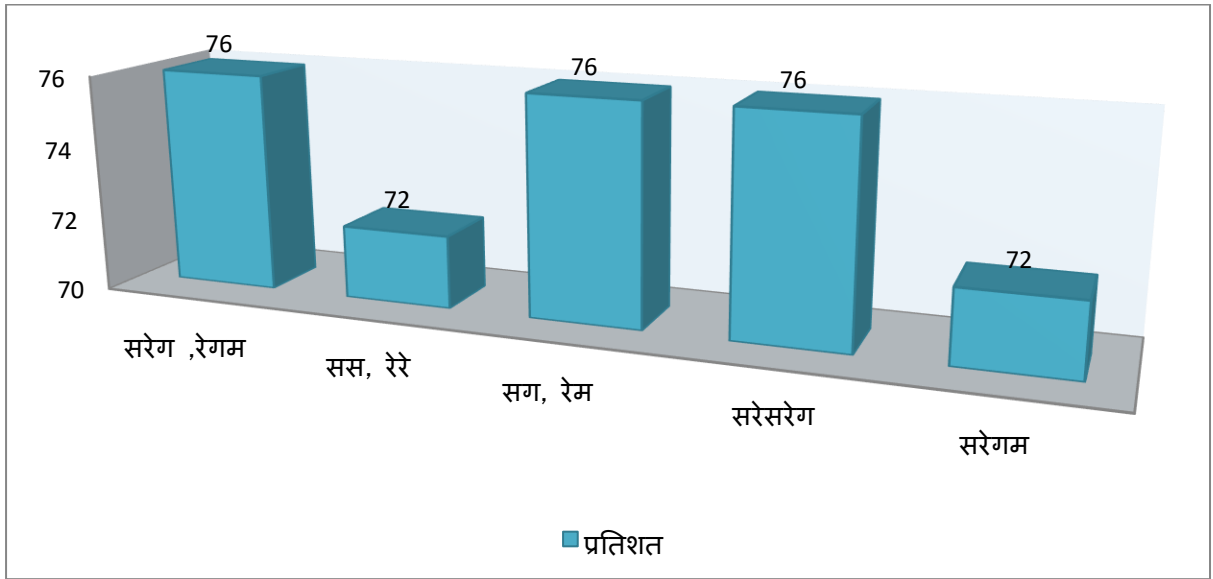
आरेख संख्या 4.5

विद्यार्थियों में अलंकार गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.5 तथा आरेख संख्या 4.5 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थिओं में अलंकार गायन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि अलंकार नं०1, अलंकार नं०3 तथा अलंकार नं०4 गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (76) रहा हैं। जबकि अलंकार नं०2 तथा अलंकार नं०5 के संबंन्ध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (72) हैं।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि अलंकार नं०1 (सरेग) अलंकार नं०3 (सग,रेम) अलंकार नं० 4 (सरेसरेग) छात्रओं को गायन में सरल व सहज लगा जबकि अलंकार नं०2 तथा अलंकार नं०5 गायन में असहज व कठिन प्रतीत हुए क्योंकि इनकि लयकारी में उतार चढ़ाव ज्यादा हैं।
- शिक्षकों का अलंकार लयकारी में पारंगत न होना उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।

प्रश्न 4.1.1.6 निम्न रागो के छोटा ख्याल सुनाइए ?

तालिका संख्या 4.6

विद्यार्थियों में रागों के छोटा ख्याल गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम ख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	यमन	23	92
2	भैरवी	22	88
3	बागेश्री	18	72
4	वृंदावनी सारंग	20	80
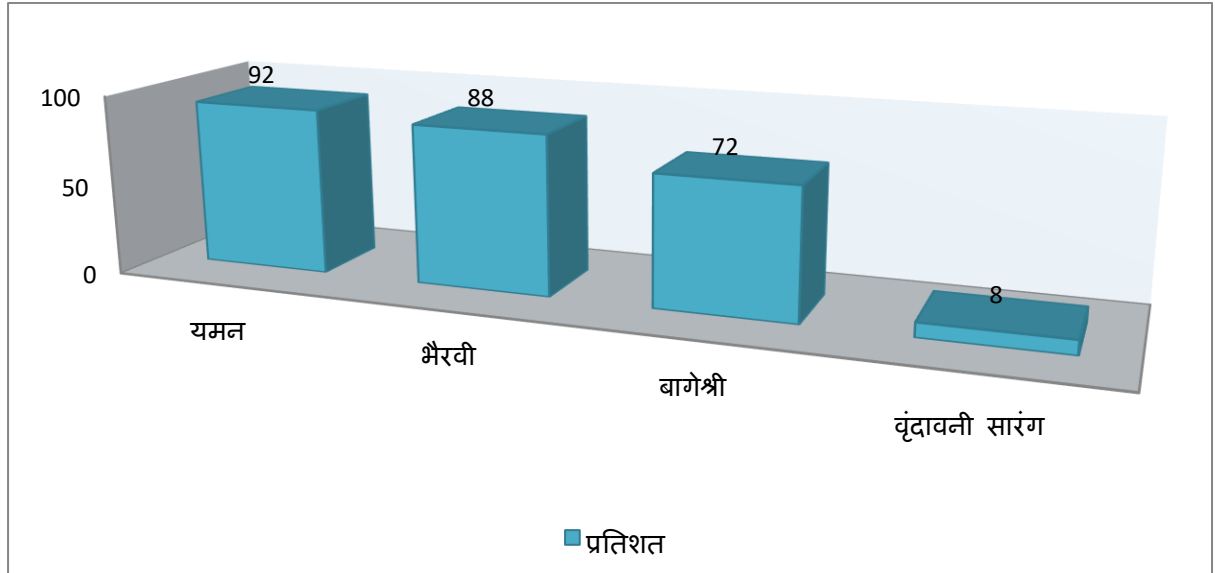
आरेख संख्या 4.6

विद्यार्थियों में रागों के छोटा ख्याल गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.6 तथा आरेख संख्या 4.6 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में रागों के छोटा ख्याल गायन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि राग यमन गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (92) हैं। जबकि राग वृंदावनी सारंग के संदर्भ में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (80) हैं।
- राग यमन के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (88) राग भैरवी के संदर्भ में देखने को मिला तत्पश्चात राग बागेश्री (72) में जागरूकता पायी गयी।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राग यमन का छोटा ख्याल छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। क्योंकि राग यमन में सातों स्वरो का प्रयोग होता हैं। जबकि राग बागेश्री (72) छात्राओं के गायन में असहज व कठिन प्रतीत हुए क्योंकि इस राग में कोमल स्वरों का प्रयोग होता हैं जो गायन के लिए पूर्णत: अभ्यास पर निर्भर करता हैं।
- लगभग सभी रागों का प्रतिशत समान्य ही हैं। पर समय के अभाव में अभ्यास न होने के कारण कम जागरूकता देखने को मिली।

प्रश्न 4.1.1.7 **निम्न रागों में भजन सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.7

विद्यार्थियों में रागों में भजन गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	दुर्गा	22	88
2	यमन	21	84
3	आसावरी	11	44
4	भैरवी	13	52
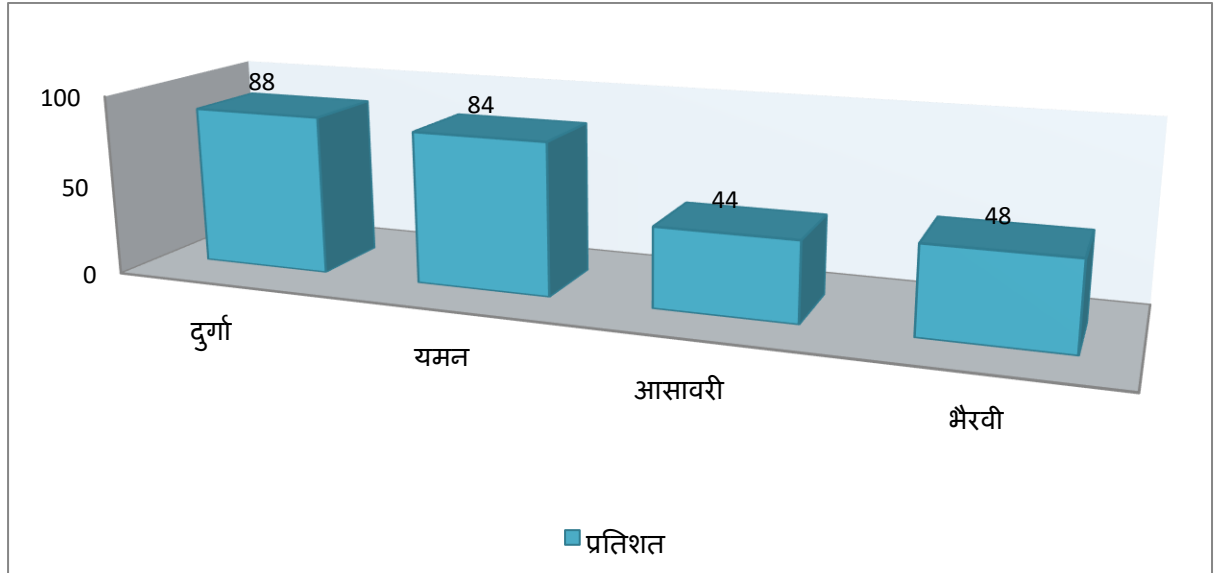
आरेख संख्या 4.7

विद्यार्थियों में रागों में भजन गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.7 तथा आरेख संख्या 4.7 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में रागों में भजन गायन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि राग दुर्गा गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (88) हैं। जबकि राग भैरवी के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (52) हैं।
- राग दुर्गा के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (84) राग यमन के संदर्भ में देखने को मिला। राग आसावरी में (44) जागरूकता पायी गयी।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राग दुर्गा में भजन गायन छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। जबकि राग आसावरी के भजन गायन के संदर्भ में कठिनाई तथा असहज प्रतीत हुई हैं।
- सभी रागों के अभ्यास हेतु समय कि अपर्याप्तता भी एक महत्वपूर्ण कारण हैं।
- शिक्षकों का निरंतर अभ्यास न करना भी उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।

प्रश्न 4.1.1.8 **निम्न रागों के छोटे ख्यालों में तान सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.8

विद्यार्थियों में रागों के छोटे ख्यालों में तान गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	19	76
2	भैरवी	17	68
3	बागेश्री	14	56
4	देश	15	60
5	यमन	14	56
6	तोड़ी	8	32
7	जौनपुरी	7	28
8	भीमपलासी	11	44
9	हमीर	17	68
10	बिहाग	13	52
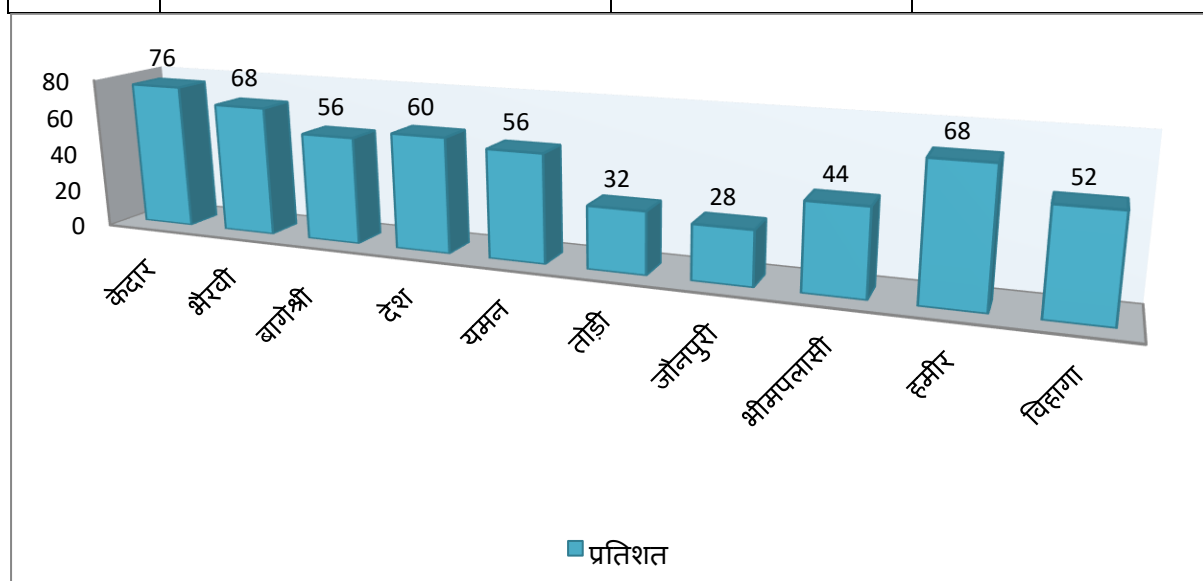
आरेख संख्या 4.8

विद्यार्थियों में रागों के छोटे ख्यालों में तान गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.8 तथा आरेख संख्या 4.8 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में रागों के छोटे ख्यालों में तान गायन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि राग केदार के छोटे खयाल में तान गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (76) हैं जबकि राग जौनपुरी के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (24) हैं।
- राग केदार के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (68) राग भैरवी तथा राग हमीर के संदर्भ में देखने को मिला लगभग आधे विद्यार्थियों कि प्रवीणता राग देश (60), राग बागेश्री तथा राग यमन (56) के संदर्भ में देखने को मिली। आधे से कुछ कम विद्यार्थियों कि प्रवीणता राग विहाग(52) राग के संबंध में लगभग एक चौथाई (28) विद्यार्थी जागरूक मिले।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राग केदार, भैरवी, हमीर छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। जबकि राग जौनपुरी तोड़ी छात्राओं को गायन में असहज तथा कठिन प्रतीत हुआ क्योंकि इनमें स्वर वर्जित होते हैं।
- स्वयं शिक्षकों का सभी रागों में पारंगत न होना उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।

प्रश्न 4.1.1.9 **निम्न रागों की ताने वाद्यों के साथ सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.9

विद्यार्थियों में रागों की ताने वाद्यों के साथ संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	17	68
2	भैरवी	16	64
3	बागेश्री	19	76
4	देश	10	40
5	यमन	20	80
6	तोडी	9	36
7	जौनपुरी	9	36
8	भीमपलासी	17	68
9	हमीर	8	32
10	बिहाग	9	36
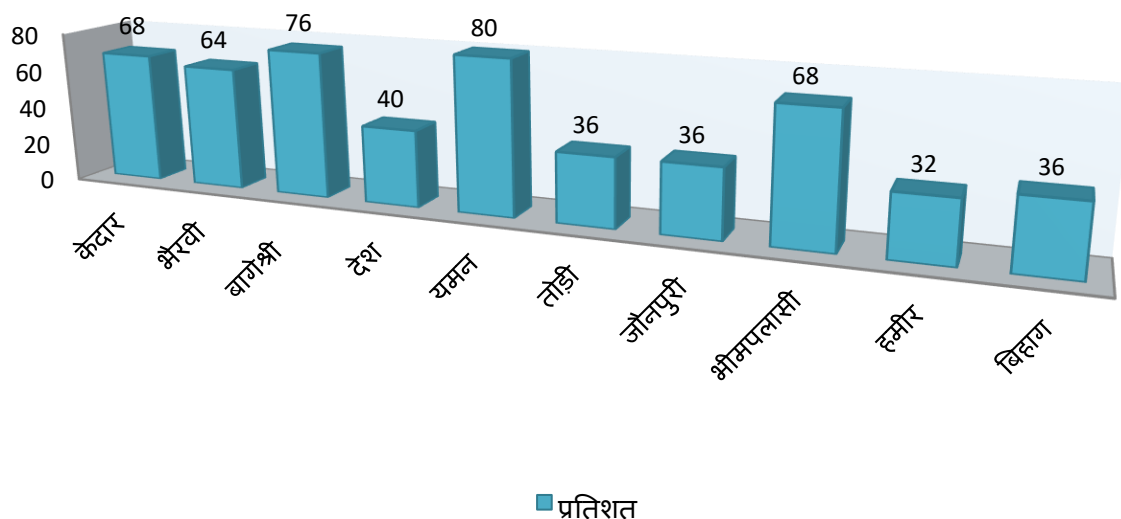
आरेख संख्या 4.9

विद्यार्थियों में रागों कि ताने वाद्यों के साथ संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.9 तथा आरेख संख्या 4.9 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में रागों कि ताने वाद्यों के साथ संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि राग यमन कि ताने वाद्यों के साथ गायन प्रतिशत सर्वाधिक (80) हैं जबकि राग हमीर के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (32) हैं।
- राग यमन के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (52) राग बागेश्री के संदर्भ में देखने को मिला। लगभग आधे विद्यार्थियों कि प्रवीणता राग केदार (68), राग भीमपलासी (68), राग भैरवी (44) के संदर्भ में देखने को मिली। आधे से कुछ कम विद्यार्थियों कि प्रवीणता राग देश (40) राग तोड़ी (36), राग जौनपुरी (36) राग विहाग (36) के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राग यमन तथा तथा राग बागेश्री छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। जबकि राग हमीर, राग तोड़ी, राग विहाग तथा राग जौनपुरी छात्राओं को वाद्यों के साथ ताने लेने में असहज व कठिन लगा क्योंकि इन रागों में कुछ स्वर वर्जित होते हैं।
- सभी रागों के अभ्यास हेतु समय की अपर्याप्तता भी एक कारण हैं।

प्रश्न 4.1.1.10 निम्न रागों पर देशभक्ति गीत सुनाइए ?

तालिका संख्या 4.10

विद्यार्थियों में रागों पर देशभक्ति गीत गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	17	68
2	बिहाग	8	32
3	हमीर	8	32
4	बागेश्री	14	56
5	भीमपलासी	16	64
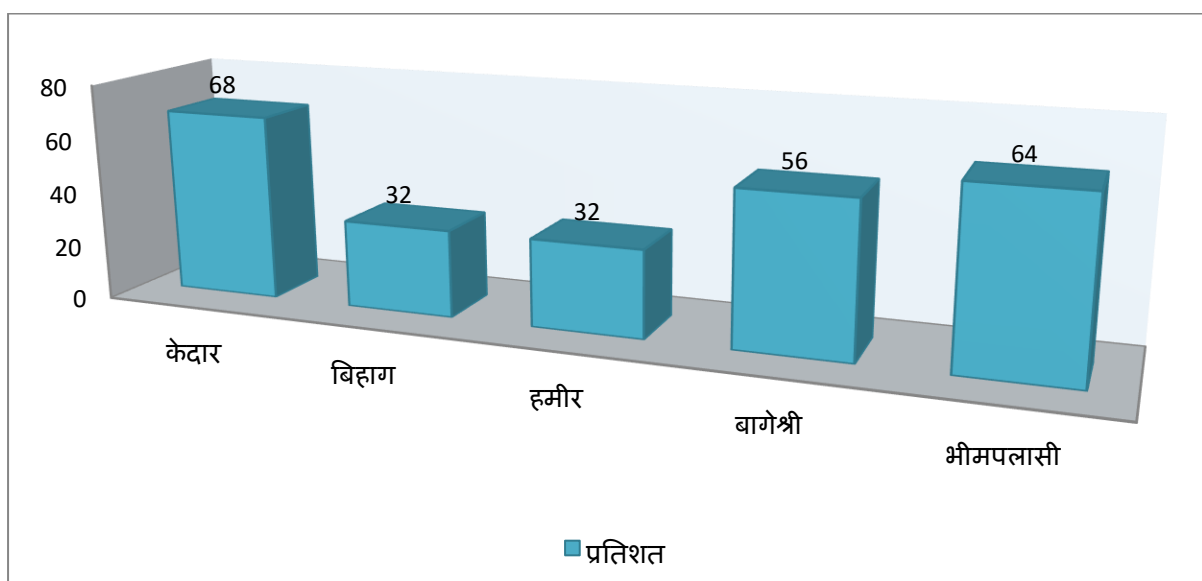
आरेख संख्या 4.10

विद्यार्थियों में रागों पर देशभक्ति गीत गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.10 तथा आरेख संख्या 4.10 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में रागों पर देशभक्ति गीत संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि राग केदार पर देशभक्ति गीत गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (68) हैं जबकि राग बिहाग तथा राग हमीर के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (32) हैं।
- राग केदार के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (64) राग भीमपलासी के संदर्भ में देखने को मिला लगभग आधे विद्यार्थियों की प्रवीणता राग बागेश्री के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राग केदार छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। क्योंकि यह चंचल प्रकृति का राग हैं। तथा सभी स्वरो का प्रयोग होता हैं। जबकि राग बिहाग (32) तथा राग हमीर (32) छात्राओं को गायन गायन में असहज तथा कठिन प्रतीत हुये क्योकि कुछ स्वर इन रागों में वर्जित होते हैं।
- स्वयं शिक्षकों का सभी रागों में पारंगत न होना उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।
- सभी रागों के अभ्यास हेतु समय कि अपर्याप्तता भी एक कारण हैं।

प्रश्न 4.1.1.11 **निम्न रागों में धुन प्रदर्शन करिए ?**

तालिका संख्या 4.11

विद्यार्थियों में रागों में धुन प्रदर्शन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	21	84
2	भैरवी	17	68
3	बागेश्री	15	60
4	देश	8	32
5	यमन	20	80
6	तोडी	10	40
7	जौनपुरी	8	32
8	भीमपलासी	7	28
9	हमीर	12	48
10	बिहाग	13	52
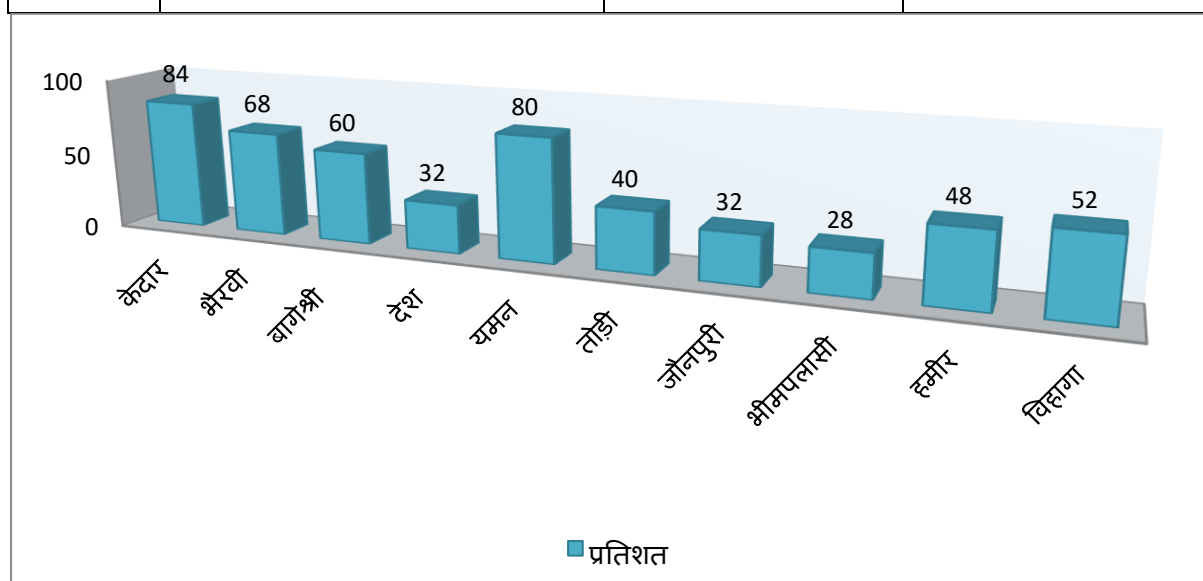
आरेख संख्या 4.11

विद्यार्थियों में रागों में धुन प्रदर्शन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.11 तथा आरेख संख्या 4.11 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में रागों के धुन प्रदर्शन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि राग केदार के धुन प्रदर्शन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (84) हैं जबकि -राग भीम पलासी के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (28) हैं।
- राग केदार के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (80) राग यमक के संदर्भ में देखने को मिला। लगभग आधे विद्यार्थियों की प्रवीणता राग भैरवी (68) राग बागेश्री (60) तथा बिहाग (52) के संदर्भ में देखने को मिली।
- आधे से कुछ कम विद्यार्थियों की प्रवीणता राग हमीर (48) राग तोड़ी (40) संदर्भ में देखने को मिली। राग देश तथा जौनपुरी (32) के संबंध में लगभग एक चौथाई विद्यार्थी जागरूक मिले।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राग केदार, राग यमन छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। जबकि देश तथा जौनपुरी छात्राओं को गायन में असहज तथा कठिन प्रतीत हुये क्योंकि इनमें कुछ स्वर वर्जित होते हैं।
- स्वयं शिक्षकों का सभी रागों में पारंगत न होना उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।
- सभी रागों के अभ्यास हेतु समय की अपर्याप्तता भी एक कारण हैं।

प्रश्न 4.1.1.12 **निम्न तालों की ताली लगाइए ?**

तालिका संख्या 4.12

विद्यार्थियों में तालों की ताली संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	तालों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	एकताल	22	8
2	चारताल	19	76
3	रूपक	23	92
4	तीव्रा	23	92
5	झपताल	20	80
6	सूलताल	19	76
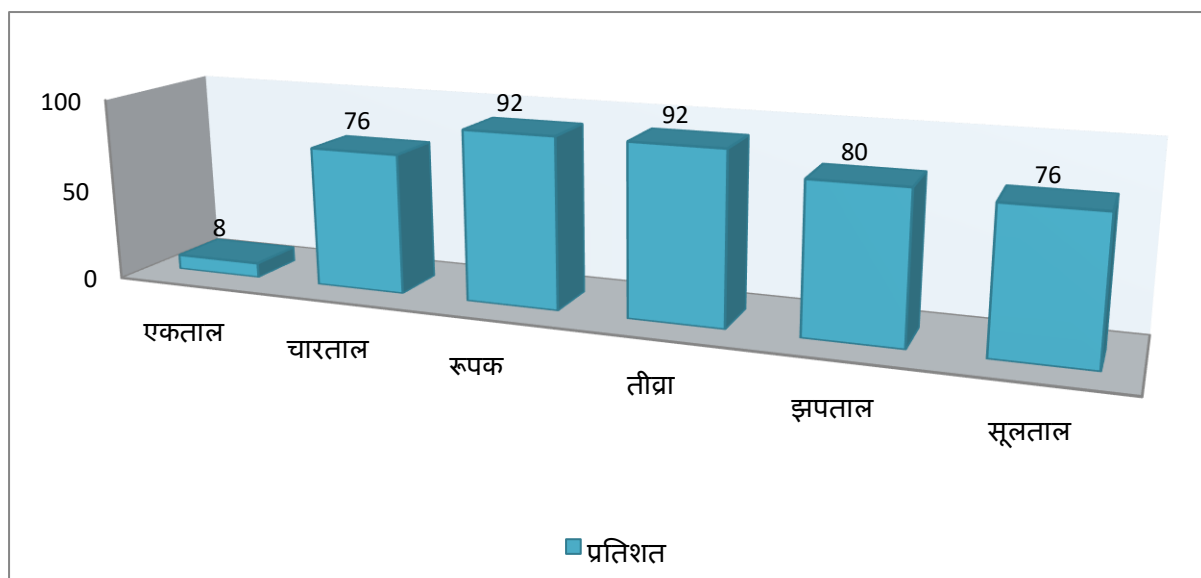
आरेख संख्या 4.12

विद्यार्थियों में तालों की ताली संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.12 तथा आरेख संख्या 4.12 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में तालों की ताली संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि ताल रूपक तथा तीव्रा में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (92) हैं। सूलताल तथा चरताल के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (24) हैं।
- ताल रूपक तथा तीव्रा के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (88) एकताल के संदर्भ में देखने को मिला।
- लगभग आधे से थोड़े ज्यादा विद्यार्थियों की प्रवीणता एकताल (80) तथा झपताल (80) के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि ताल रूपक तथा तीव्रा छात्राओं को ताली लगाने में सरल व सहज लगी। क्योंकि यह दोनों ताले सात मात्राओं की होती हैं जबकि चार ताल छात्राओं को ताली लगाने में असहज तथा कठिन प्रतीत हुई क्योंकि यह दो खाली वाली 14 मात्रा की ताल हैं।
- वाद्य यंत्रो का सीमित होना उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।
- सभी तालों के अभ्यास हेतु समय की अपर्यापता भी एक महत्वपूर्ण कारण हैं।

प्रश्न 4.1.1.13 निम्न रागों में देश भक्ति गीत तबले की संगत के साथ सुनाइए ?

तालिका संख्या 4.13

विद्यार्थियों में रागों में देश भक्तिगीत तबले की संगत के साथ संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	20	80
2	बिहाग	09	36
3	हमीर	09	36
4	बागेश्री	18	72
5	भीमपलासी	13	52
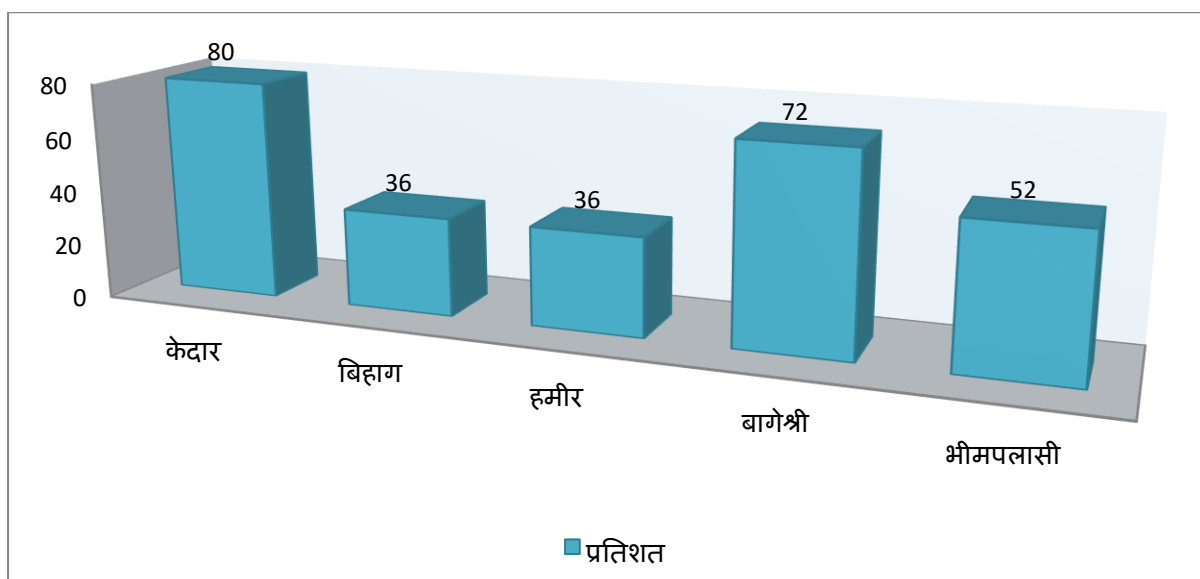
आरेख संख्या 4.13

विद्यार्थियों में रागों में देश भक्तिगीत तबले की संगत के साथ संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.13 तथा आरेख संख्या 4.13 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में रागों में देशभक्ति गीत तबले की संगत के साथ संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि राग केदार में देशभक्ति गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (80) हैं जबकि राग बिहाग तथा राग हमीर के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (36) हैं।
- राग केदार के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (72) राग बागेश्री के संदर्भ में देखने को मिला।
- लगभग आधे विद्यार्थियों की प्रवीणता राग भीमपलासी (52) के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राग केदार में देशभक्ति गीत तबले के संगत के साथ छात्राओं को सरल व सहज लगा। क्योंकि यह चंचल प्रकृति का तथा कहरवा ताल (8 मात्र) में गाया गया हैं। जबकि राग बिहाग तथा राग हमीर छात्राओं को गायन में असहज तथा कठिन प्रतीत हुआ।
- सभी रागों के अभ्यास हेतु समय कि अपर्याप्तता भी एक कारण हैं।
- छात्राओं को वाद्यों का ज्ञान करना अति आवश्यक हैं।

प्रश्न 4.1.1.14 **निम्न तालो की दुगुन लगाइए।**

तालिका संख्या 4.14

विद्यार्थियों में तालों में दुगुन लय में ताली संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	तालों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	एकताल	21	84
2	चारताल	22	88
3	रूपक	19	76
4	तीव्रा	18	72
5	झपताल	20	80
6	सूलताल	21	84
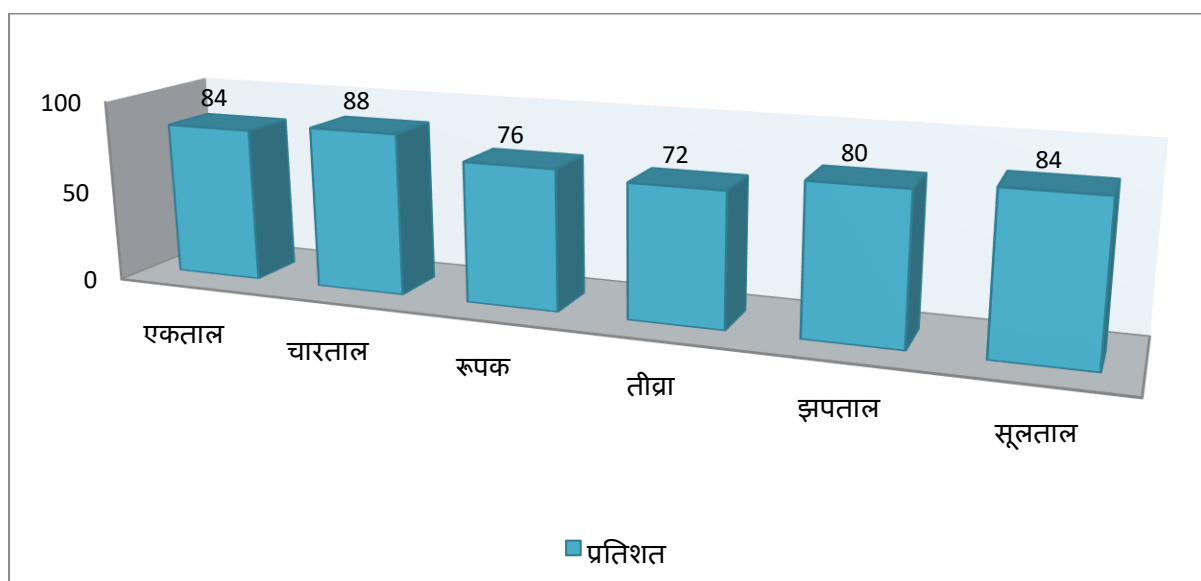
आरेख संख्या 4.14

विद्यार्थियों में तालों में दुगुन लय में ताली संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.14 तथा आरेख संख्या 4.14 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में तालों की दुगुन लय में ताली संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि चारताल की दुगुन लय में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (88) हैं जबकि तीव्रा ताल के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (72) हैं।
- चारताल के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत एकताल (84), सूरताल (84) झपताल (80) रूपक ताल (76) के संदर्भ में देखने को मिला।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि चार ताल एकताल तथा सूलताल दुगुन लयकारी में छात्राओं को सरल व सहज लगीं । क्योंकि यह खुले बोल के ताल हैं। जबकि तीव्रा तथा रूपक ताले छात्राओं को असहज तथा कठिन प्रतीत हुई क्योंकि रूपक में खाली नहीं हैं तथा तीव्रा 7 मात्राओ कि ताल में 6 वी मात्र पर खाली होती हैं।
- वाद्य यंत्रो का सीमित होना उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।
- मात्राओं का सही ज्ञान न होना भी एक महत्वपूर्ण कारण हैं।

प्रश्न 4.1.1.15 **निम्न तालो की चौगुन लगाइए ?**

तालिका संख्या 4.15

विद्यार्थियों में तालों की चौगुन में ताली संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	तालों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	एक ताल	24	96
2	चार ताल	15	60
3	रूपक	15	60
4	तीव्रा	19	76
5	झपताल	20	80
6	सूलताल	18	72
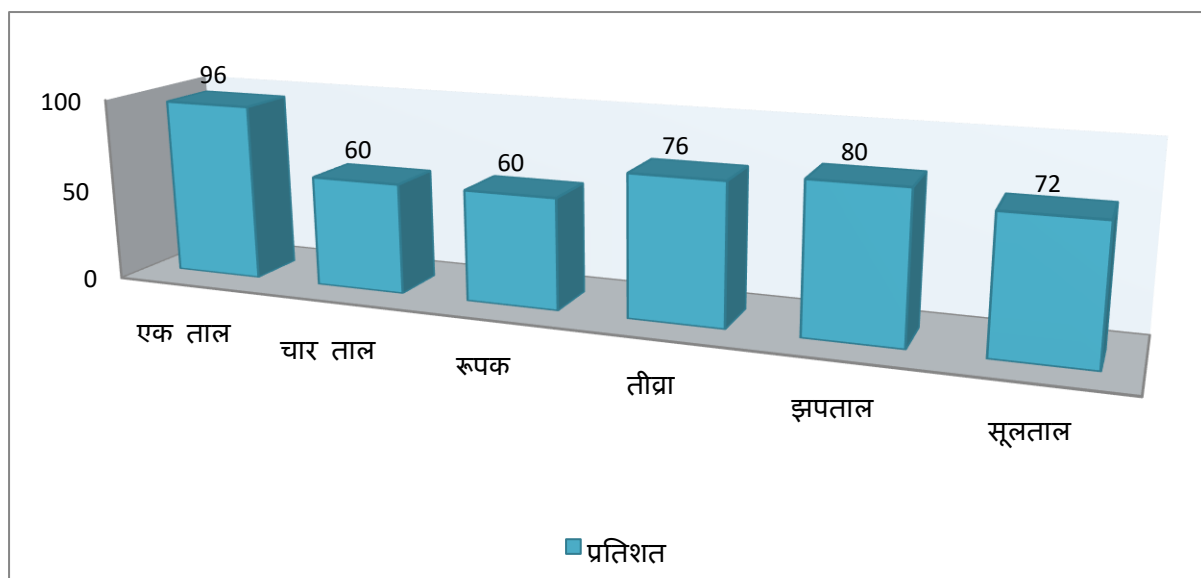
आरेख संख्या 4.15

विद्यार्थियों में तालों की चौगुन में ताली संबंधी प्रवीणता

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.15 तथा आरेख संख्या 4.15 के आधार पर प्रयाग संगीत समिति के विद्यार्थियों में तालों की चौगुन ताली संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता हैं कि एकताल की चौगुन में ताली लगाने वाली छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (96) हैं जबकि चरताल तथा रूपक ताल के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (60) हैं।
- एकताल के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत झपताल (80) के संदर्भ में देखने को मिला।
- तीव्रा ताल तथा सूलताल के संबंध में आधे से ज्यादा छात्राएं जागरूक मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि एकताल तथा झपताल की चौगुन छात्राओं को सरल व सहज लगीं क्योंकि यह ताल क्रमश: 12 व 10 मात्राओ की हैं। जिससे चौगुन लयकारी से आसानी होती हैं जबकि रूपक ताल में 7 मात्र होने के कारण यह छात्राओं को कठिन व असहज प्रतीत हुई हैं।
- चौगुन लयकारी का अभ्यास तबले के साथ न कराया जाना भी एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता हैं।
- स्वयं शिक्षकों का चौगुन लयकारी में पारंगत न होना उपयुक्त विसंगति का कारण हो सकता हैं।

4.1.2 यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियो में संगीत की प्रवीणता का प्रश्नश: विश्लेषण

प्रश्न 4.1.1.16 निम्न रागों के लक्षण गीत सुनाइये ?

तालिका संख्या 4.16

विद्यार्थियों में रागों के लक्षण गीत संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	खमाज	9	36
2	आसावरी	9	36
3	यमन	14	56
4	भैरवी	13	52
5	बिहाग	8	32
6	बागेश्री	9	36
7	भीमपलासी	8	32
8	व्रन्दावनी सारंग	8	32
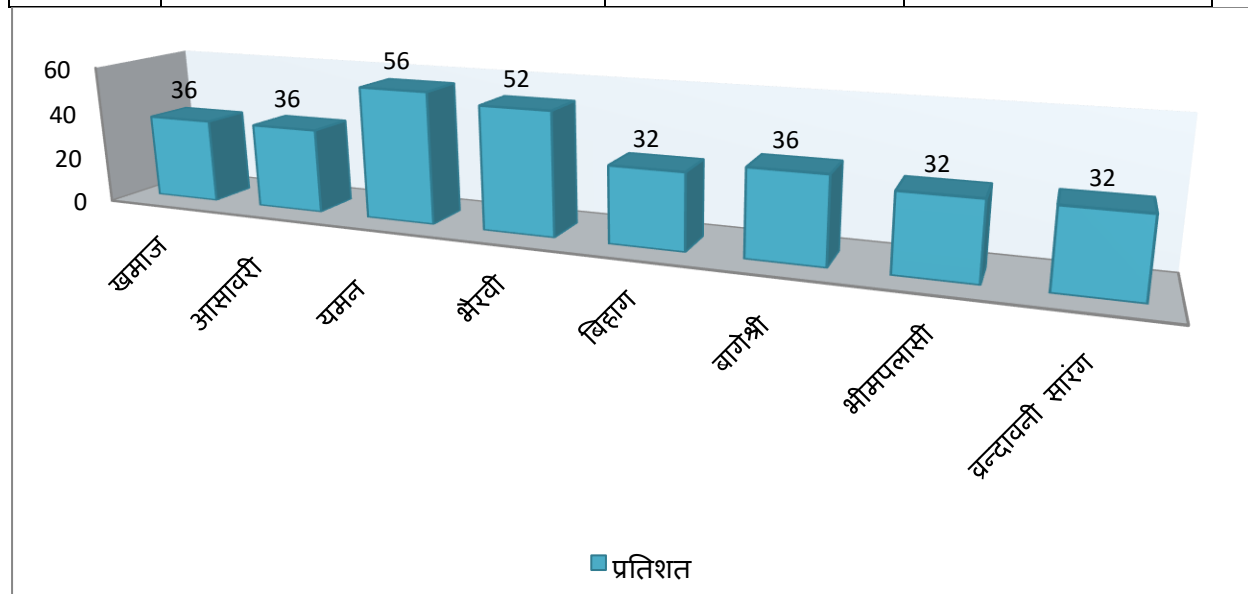
आरेख संख्या 4.16

विद्यार्थियों में रागों के लक्षण गीत संबंधी प्रवीणता

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.16 तथा आरेख संख्या 4.16 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के रागों के लक्षण गीत सम्बंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है कि राग यमन गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (56) है जबकि राग विहाग, राग भीमपलासी तथा राग व्रन्दावनी सारंग के संदर्भ छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक न्यून (32) है।
- राग यमन के पश्चात सर्वाधिक प्रतिशत राग भैरवी (52) के संदर्भ में देखने को मिला। आधे से भी कम छात्राओं में राग समाज, राग आसावरी तथा राग बागेश्री (36) के संदर्भ में जागरूकता पाई गई।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि राग यमन, तथा राग भैरवी छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा क्योंकि दोनों रागों में सातों स्वरो का प्रयोग होता है।
- यू० पी० बोर्ड में संगीत विषय के क्रियात्मक पक्ष पर विशेष ध्यान न देकर शास्त्र पक्ष पर विशेष बल दिया जाता है जिसके कारण क्रियात्मक पक्ष में कम प्रवीणता पाई गई।
- समय की अपर्याप्तता भी उपयुक्त विसंगति का एक महत्वपूर्ण कारण है।

प्रश्न 4.1.1.16 **निम्न रागों के प्रारम्भिक आलाप सुनाइये ?**

तालिका संख्या 4.17

विद्यार्थियों में रागों के प्रारम्भिक आलाप संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	खमाज	10	40
2	आसावारी	9	36
3	यमन	15	60
4	भैरवी	16	64
5	बिहाग	11	44
6	बागेश्री	11	44
7	भीमपलासी	9	36
8	व्रन्दावनी सारंग	8	32
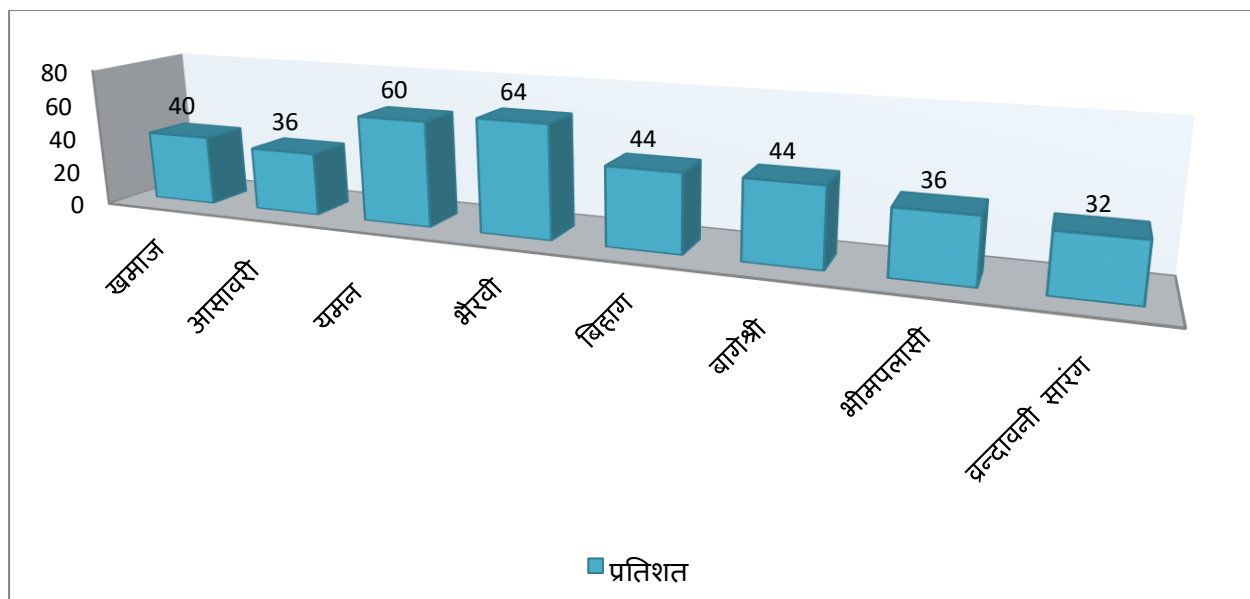
आरेख संख्या 4.17

विद्यार्थियों में रागों के प्रारम्भिक आलाप संबंधी प्रवीणता

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.17 तथा आरेख संख्या 4.17 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियओं में रागों के प्रारम्भिक आलाप सम्बंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है कि राग भैरवी के प्रारम्भिक आलाप में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (64) है जबकि राग व्रन्दावनी सारंग के संदर्भ छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक न्यून (32) है।
- राग भैरवी के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (60) राग यमन के संदर्भ में देखने को मिला। लगभग आधे विद्यार्थीयों की प्रवीणता राग विहाग (44) के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि राग यमन तथा राग भैरवी छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगीं। क्योंकि ये राग चंचल प्रकृति के है तथा इन रागों में सातों स्वरों का प्रयोग होता है। जबकि राग व्रन्दावनी सारंग छात्राओं को गायन में कठिन तथा असहज प्रतीत हुई क्योंकि राग व्रन्दावनी सारंग में कुछ स्वर वर्जित है।
- स्वयं शिक्षकों का सभी रागों में पारंगत न होना भी इस विसंगति का कारण हो सकता है।

प्रश्न 4.1.1.18 **निम्न रागों के ध्रुपद गीत सुनाइये ?**

तालिका संख्या 4.18

विद्यार्थियों में रागों के ध्रुपद गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	खमाज	8	32
2	आसावारी	9	36
3	यमन	12	48
4	भैरवी	13	52
5	बिहाग	6	24
6	बागेश्री	5	20
7	भीमपलासी	4	16
8	व्रन्दावनी सारंग	7	28
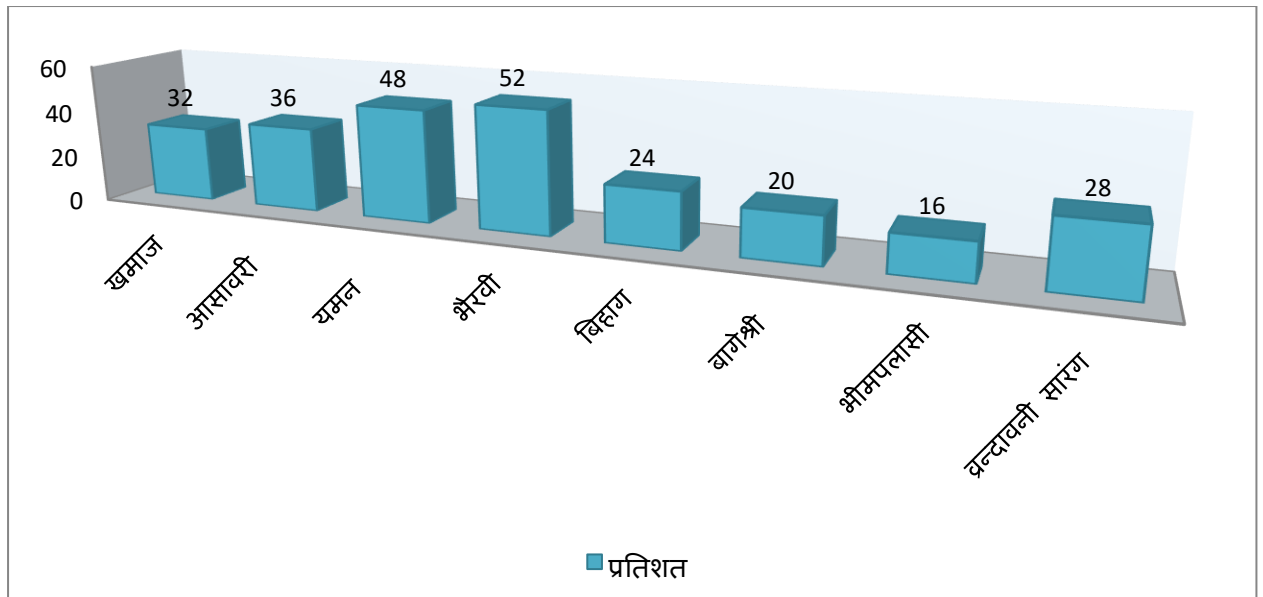
आरेख संख्या 4.18

विद्यार्थियों में रागों के ध्रुपद गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.18 तथा आरेख संख्या 4.18 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में रागों के ध्रुपद गायन सम्बंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है कि राग भैरवी ध्रुवद गायन में छात्राओं का प्रतिशत (52) सर्वाधिक है जबकि राग भीम पलासी के संदर्भ छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (16) है।
- राग भैरवी के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत राग यमन(48) के संदर्भ में देखने को मिला।
- लगभग आधे से कम विद्यार्थीयों की प्रवीणता राग खमाज (32) राग आसावरी (36) के संदर्भ में देखने को मिली।
- एक चौथाई विद्यार्थीयों की प्रवीणता राग व्रन्दावनी सारंग (28) राग बागेश्री (20) तथा राग विहाग (24) के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की ध्रुपद कठिन होने के कारण तथा निरंतर अभ्यास न होने के कारण कम प्रवीणता पाई गई।
- राग भैरवी ध्रुपद गायन में छात्राओं को सरल व सहज लगा। जबकि राग भीमपलासी छात्राओं को गायन में कठिन तथा असहज प्रतीत हुये।
- सभी रागों का अभ्यास हेतु समय की अपर्याप्तता भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

प्रश्न 4.1.1.19 **निम्न रागों के बड़ा ख्याल सुनाइये ?**

तालिका संख्या 4.19

विद्यार्थियों में बड़ा खयाल गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	खमाज	7	28
2	आसावारी	6	24
3	यमन	11	44
4	भैरवी	11	44
5	बिहाग	8	32
6	बागेश्री	8	32
7	भीमपलासी	4	16
8	व्रन्दावनी सारंग	4	16
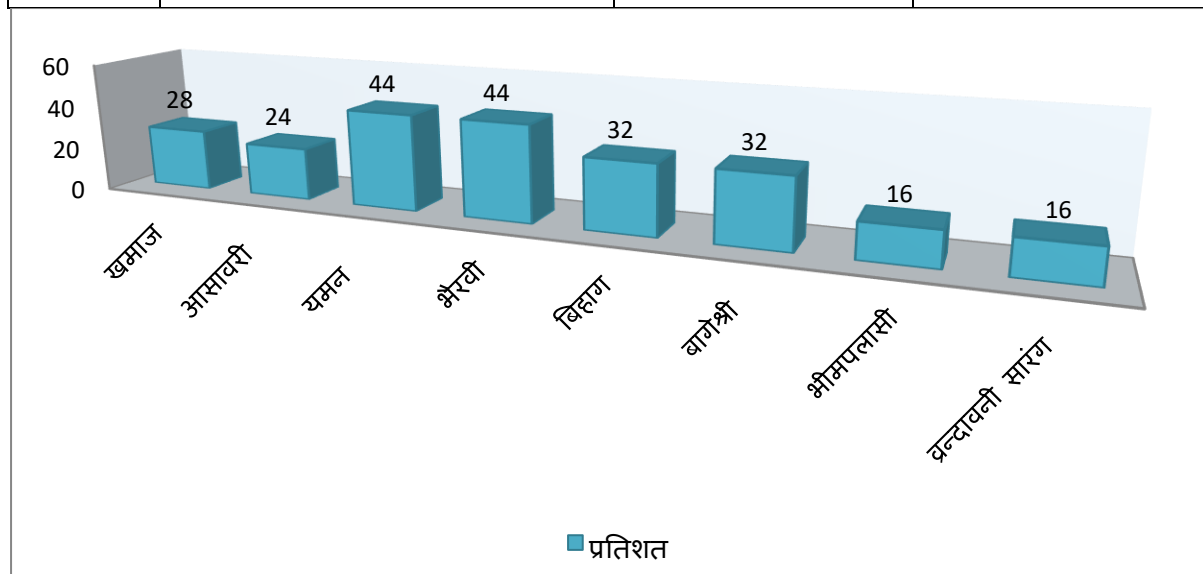
आरेख संख्या 4.19

विद्यार्थियों में बड़ा खयाल गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

उक्त तालिका संख्या 4.19 तथा आरेख संख्या 4.19 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में रागों के बड़खयाल गायन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है कि राग यमन तथा राग भैरवी का बड़ा खयाल गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (44) है जबकि राग भीम पलासी तथा राग व्रन्दावनी सारंग के सम्बंध में छात्रो का प्रतिशत सबके न्यून (16) है

- राग भैरवी तथा यमन के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत राग बिहाग (32) तथा राग बागेत्री (32) के संदर्भ में देखने को मिला। आधे से कम विद्यार्थीयो की प्रवीणता राग खमाज (28) तथा राग आसावरी (24) के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की राग यमन तथा राग भैरवी छात्राओं को गायन सरल व सहज लगा। क्योंकि की इन रागों में सातों स्वरो का प्रयोग होता है। जबकि राग भीम पलासी तथा राग व्रन्दावनी सारंग छात्राओं को गायन कठिन तथा असहज प्रतीत हुये क्योंकि इन रागो में कुछ स्वर वर्जित है।
- निरंतर अभ्यास न कराया जाना उपयुक्त विसंगति का महत्वपूर्ण कारण है।
- स्वयं शिक्षकों का भी सभी रागों में पारंगत न होना भी एक कारण है।

प्रश्न 4.1.1.20 **निम्न रागों के छोटा ख्याल सुनाइये ?**

तालिका संख्या 4.20

विद्यार्थियों में रागो का छोटा खयाल सम्बंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	खमाज	6	24
2	आसावारी	2	8
3	यमन	3	12
4	भैरवी	6	24
5	बिहाग	4	16
6	बागेश्री	3	12
7	भीमपलासी	5	20
8	व्रन्दावनी सारंग	8	32
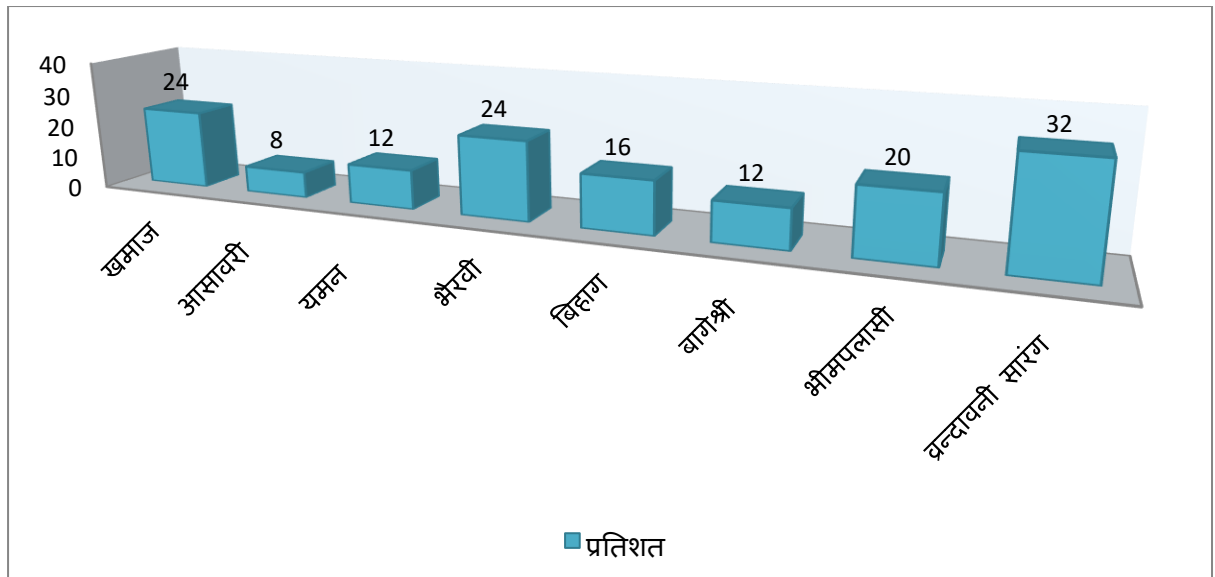
आरेख संख्या 4.20

विद्यार्थियों में रागो का छोटा खयाल सम्बंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

उक्त तालिका संख्या 4.20 तथा आरेख संख्या 4.20 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में रागों के छोटा खयाल प्रवीणता का अध्ययन किया गया जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि राग व्रन्दावनी सारंग का छोटा खयाल गायन में छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (32) है जबकि राग आसावरी के सम्बंध में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक न्यून (8) है।

- राग व्रन्दावनी सारंग के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत राग खमाज (24) तथा राग भैरवी (16) के संदर्भ में देखने को मिली।
- एक चौथाई विद्यार्थीयों की प्रवीणता राग यमन (12) तथा राग बागेश्री (12) के संदर्भ में जागरूकता पाई गई।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि राग व्रन्दावनी सारंग छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा।
- अन्य रागों में कम निपुणता पाई गई क्योंकि छात्राओं के निरंतर अभ्यास में कमी थी
- क्रियात्मक पक्ष से ज्यादा शास्त्र पक्ष पर ज्यादा बल दिया गया।

प्रश्न 4.1.1.20 **निम्न अलंकार सुनाइए?**

तालिका संख्या 4.21

विद्यार्थियों में अलंकार गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	सरेग ,रेगम	16	64
2	सस,रेरे	21	84
3	सग ,रेम	12	48
4	सरेसरेग	16	64
5	सरेगम	21	84
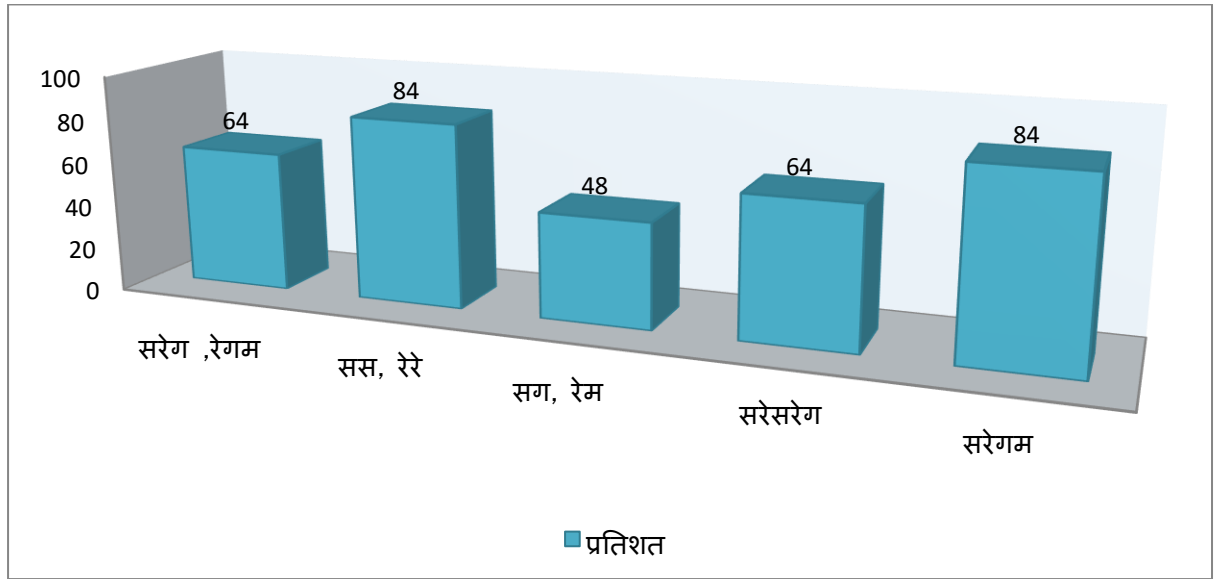
आरेख संख्या 4.21

विद्यार्थियों में अलंकार गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.21 तथा आरेख संख्या 4.21 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में अलंकार गायन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की अलंकार दूसरे तथा अलंकार पांचवे गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (84) रहा है। जबकि अलंकार तीसरे के संबंन्ध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (48) है।
- अलंकार पांचवे तथा दूसरे के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (64) अलंकार पहले तथा अलंकार चौथे के संदर्भ में देखने को मिला।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की अलंकार दूसरा तथा अलंकार पांचवा छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। क्योंकि इन अलंकारो के गाने का क्रम एक समान है।
- अलंकार तीसरे में छात्राओं के गायन में असहज व कठिन प्रतीत हुए क्योंकि इनकी लयकारी में उतार चढ़ाव ज्यादा है।
- सभी अलंकारो के अभ्यास हेतु समय की अपर्याप्ता भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

प्रश्न 4.1.1.22 **निम्न रागों के छोटा ख्यालो में आलाप सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.22

विद्यार्थियों में रागो के छोटा ख्याल में आलाप संबंधी प्रवीणता ।

क्रम ख्या	रागो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	यमन	9	36
2	भैरवी	9	36
3	बागेत्री	9	36
4	वृंदावनी सारंग	9	36
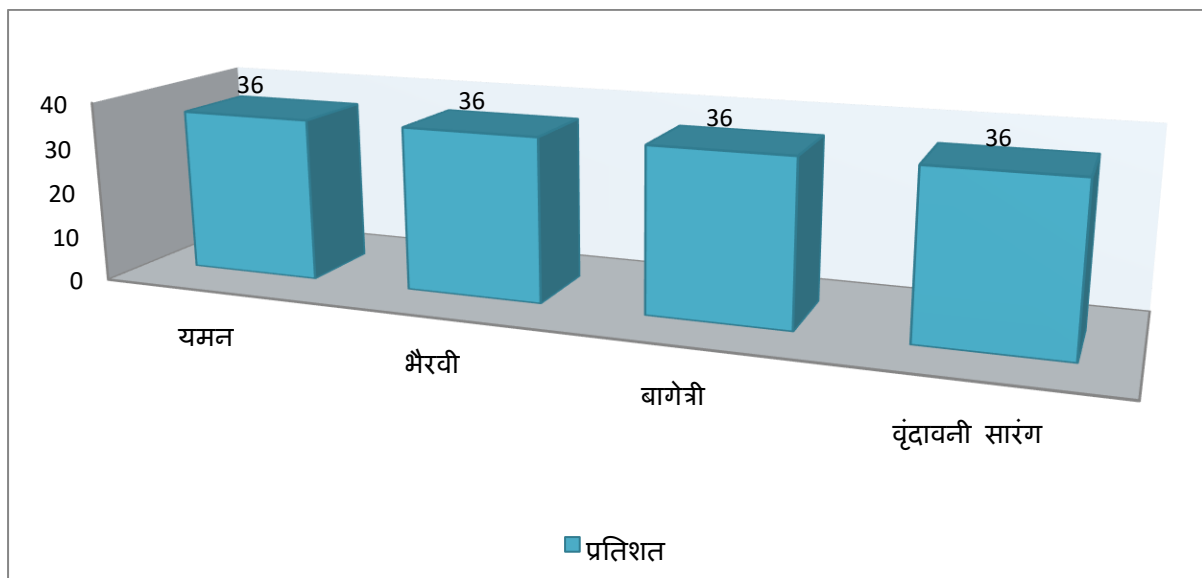
आरेख संख्या 4.22

विद्यार्थियों में रागो के छोटा ख्याल में आलाप संबंधी प्रवीणता ।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.22 तथा आरेख संख्या 4.22 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में रागो के छोटा ख्याल में आलाप संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की सभी रागों राग यमन, राग भैरवी, राग बागेश्री, राग वृंदावनी सारंग में गायन में छात्राओं का आलाप गायन संबंधी प्रतिशत समान है।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की रागो राग यमन, भैरवी , बागेश्री तथा वृंदवानी सारंग में समान रूप से निपुणता पायी गयी।
- केवल 36 प्रतिशत छात्राएँ ही सभी रागो के छोटा ख्याल में आलाप गायन के संदर्भ में जागुरुक मिली।
- इस प्रकार यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है की सभी रागो में आलाप को समान रूप से अभ्यास कराया गया है।

प्रश्न 4.1.1.23 **निम्न रागों की पकड़ सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.23

विद्यार्थियों में रागो की पकड़ गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम ख्या	रागो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	यमन	12	48
2	भैरवी	12	48
3	बागेत्री	11	44
4	वृंदावनी सारंग	9	36
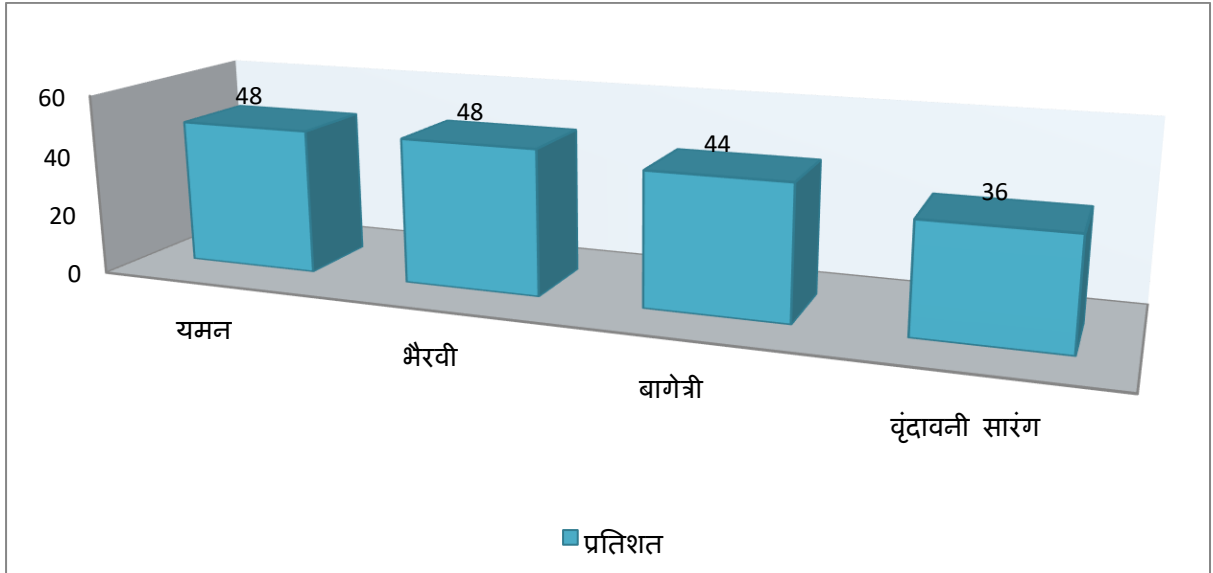
आरेख संख्या 4.23

विद्यार्थियों में रागों की पकड़ गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.23 तथा आरेख संख्या 4.23 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में रागों के पकड़ गायन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की राग यमन तथा भैरवी क पकड़ गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (48) है। जबकि राग वृंदावनी सारंग के संदर्भ में छात्राओं के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (36) है।
- राग यमन तथा भैरवी के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत छात्राओं के पकड़ गायन में राग बागेश्री (44) के संदर्भ में देखने को मिला।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की राग यमन तथा राग भैरवी की पकड़ गायन छात्राओं को गायन में सरल व सहज लगा। क्योंकि इन रागों में सभी स्वर का प्रयोग होता है।
- जबकि राग वृंदवानी सारंग पकड़ गायन में वर्जित स्वर होने के कारण छात्राओं को असहजता तथा कठिनाई प्रतीत हुयी।
- स्वयं शिक्षको का सभी रागों में पारंगत न होना उपयुक्त विसंगति का एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है।

प्रश्न 4.1.1.24 **निम्न रागों के छोटा ख्याल में सरल तान सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.24

विद्यार्थियों में रागों में भजन गायन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	दुर्गा	22	88
2	यमन	21	84
3	आसावरी	11	44
4	भैरवी	13	52
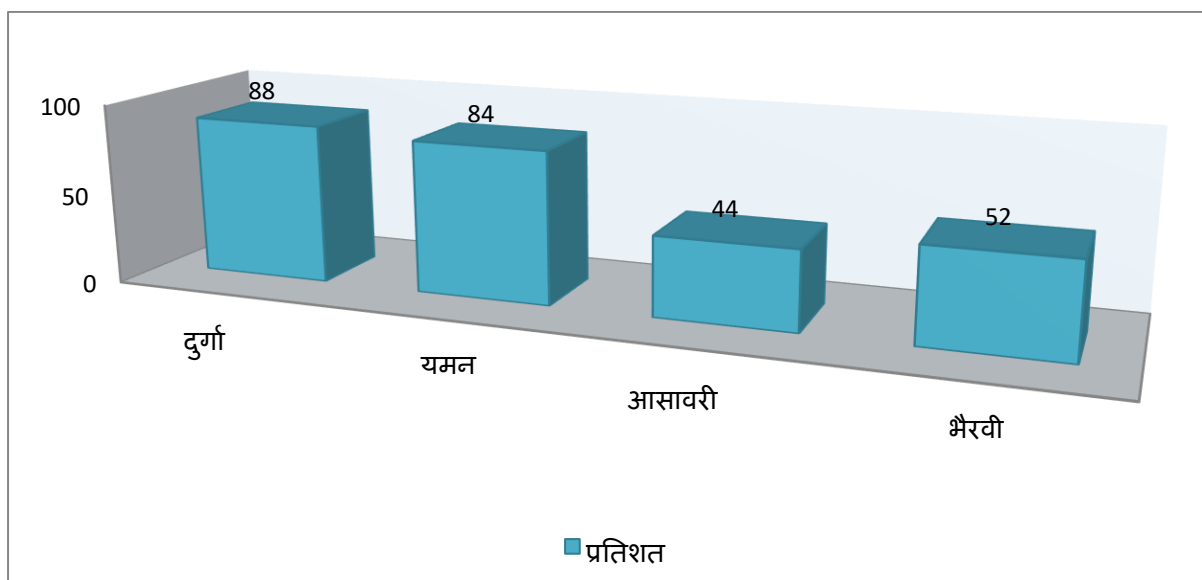
आरेख संख्या 4.24

विद्यार्थियों में रागों में भजन गायन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.24 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में रागों में भजन गायन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है कि राग यमन में भजन गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (56) है। जबकि राग आसावरी के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (36) है।
- राग यमन के पश्चात सर्वाधिक प्रतिशत राग दुर्गा (48) के संदर्भ में देखने को मिली।
- आधे से कुछ कम विद्यार्थियों की प्रवीणता राग भैरवी (44) के सम्बंध में पायी गई।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि राग यमन में भजन गायन छात्राओं को सहज तथा सरल लगा क्योंकि यह चंचल प्रकृति का राग है राग यमन के भजन भक्ति भाव से परिपूर्ण है।
- राग आसावरी में भजन गायन में छात्राओं में के कठिनाई तथा असहज प्रतीत हुई है।
- सभी रागों के अभ्यास हेतु समय की अपर्याप्तता भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

प्रश्न 4.1.1.25 निम्न रागों के छोटे ख्याल सरल तान सुनाइए ?

तालिका संख्या 4.25

विद्यार्थियों में रागों के छोटे ख्याल में सरल तान।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	8	32
2	बिहाग	7	28
3	हमीर	8	32
4	बागेश्री	7	28
5	भीमपलासी	8	32
6	जौनपुरी	10	40
7	भैरवी	7	28
8	तोड़ी	5	20
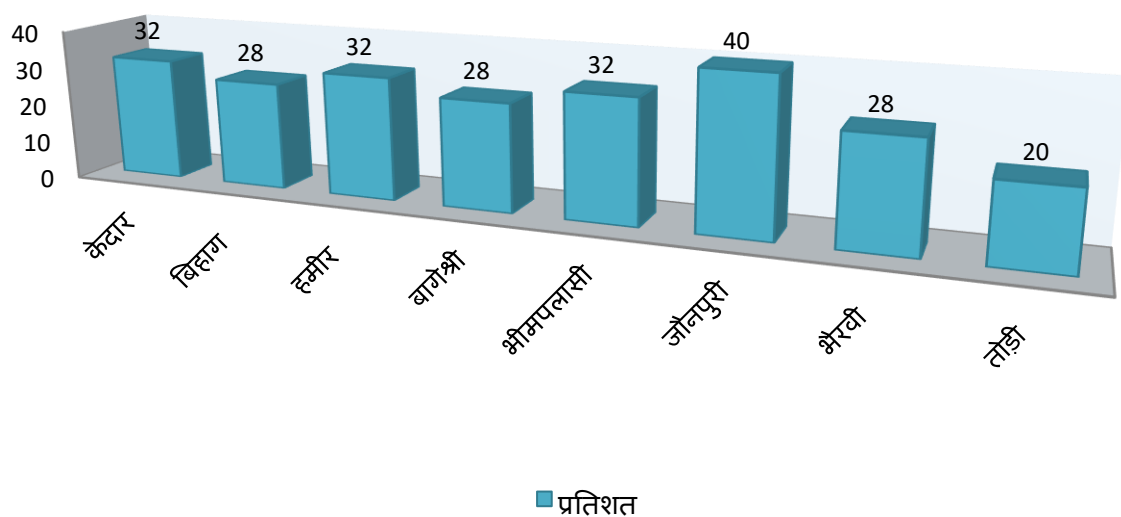
तालिका संख्या 4.25

विद्यार्थियों में रागों के छोटे ख्याल में सरल तान।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.25 तथा आरेख संख्या 4.25 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में रागों के छोटा ख्याल में सरल तान संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की राग जौनपुरी के छोटा ख्याल सरल तान में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (68) है जबकि राग तोड़ी के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (20) है।
- राग जौनपुरी के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (8) राग केदार, राग हमीर, राग भीमपलासी के संदर्भ में देखने को मिला। लगभग एक चौथाई विद्यार्थियों की प्रवीणता राग भैरवी (7), राग बागेश्री (7), तथा राग विहाग के संदर्भ में देखने को मिली।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की राग जौनपुरी छात्राओं को सरल व सहज लगा। जबकि राग तोड़ी छात्राओं को गायन छात्राओं को गायन में असहज तथा कठिन प्रतीत हुये।
- स्वयं शिक्षको का सभी इन रागों में पारंगत न होना भी इस विसंगति का कारण हो सकता है।
- निरंतर अभ्यास न कराया जाना भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

प्रश्न 4.1.1.26 **निम्न तालो की दुगुन सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.26

विद्यार्थियों में तालो की दुगुन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	तालो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	एक ताल	15	60
2	रूपक	07	28
3	तीव्रा	12	48
4	झपताल	14	56
5	सुलताल	10	40
6	चारताल	14	56
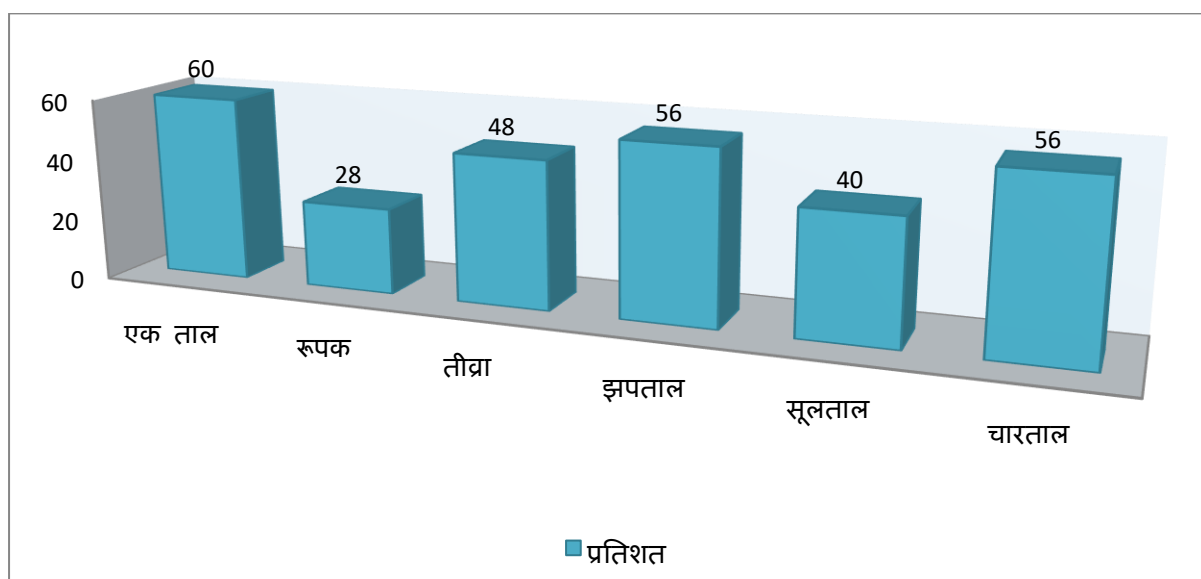
तालिका संख्या 4.26

विद्यार्थियों में तालो की दुगुन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.26 तथा आरेख संख्या 4.26 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में तालो की दुगुन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की एकताल की दुगुन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (60) है जबकि रूपक ताल के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (28) है।
- एकताल के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत झपताल (56) तथा, चारताल(56) के संदर्भ में देखने को मिला।
- लगभग आधे विद्यार्थियों की ताल दुगुन संबंधी प्रवीणता तीव्रा ताल (48) तथा सूलताल (40) के सम्बंध में देखने को मिली है।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की एकताल दुगुन में छात्राओं को सरल व सहज लगा। क्योंकि इस ताल के प्रत्येक विभाग में दो-दो मात्राएं होती है। जिसकी दुगुन आसानी से की जा सकती है।
- रूपक ताल छात्राओं को असहज तथा कठिन प्रतीत हुई क्योंकि रूपक ताल में सात मात्राएं होती है तथा पहली मात्रा में खाली होती है।
- समय की अपर्यापता के कारण विभिन्न तालों में कम प्रवीणता भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

प्रश्न 4.1.1.27 **निम्न तालो की चौगुन सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.27

विद्यार्थियों में तालो की चौगुन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	तालो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	एक ताल	13	52
2	रूपक	11	44
3	तीव्रा	12	48
4	झपताल	12	48
5	सूलताल	13	52
6	चारताल	15	60
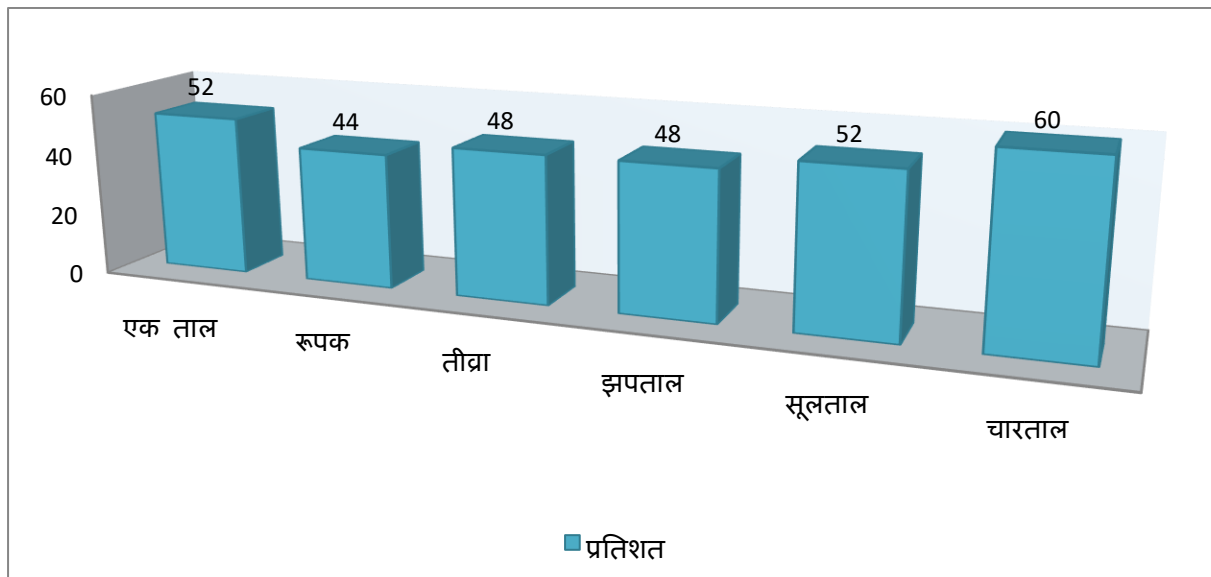
आरेख संख्या 4.27

विद्यार्थियों में तालो की चौगुन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.27 तथा आरेख संख्या 4.27 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में तालों की चौगुन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की चारताल की दुगुन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (60) है जबकि रूपक ताल के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (44) है।
- चारताल के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत एकताल (52) तथा सूलताल(52) के संदर्भ में देखने को मिला।
- लगभग आधे विद्यार्थियों की प्रवीणता तीव्रा ताल (48) तथा झपताल (48) के सम्बंध में देखने को मिली है।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की चारताल चौगुन में छात्राओं को सरल व सहज लगा। क्योंकि यह 12 मात्रा में खुले बोलो की ताल है।
- जबकि रूपक ताल चौगुन में छात्राओं को असहज तथा कठिन प्रतीत हुई क्योंकि रूपक ताल सात मात्रा की बंद बोलो की ताल है।
- छात्राओं को वाद्य यंत्रो में अभ्यास न कराया जाना उपर्युक्त विसंगति का भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

प्रश्न 4.1.1.28 **निम्न तालो की टेका में ताली लगाइए ?**

तालिका संख्या 4.28

विद्यार्थियों में तालो की ठेका में ताली संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	तालो के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	एक ताल	16	64
2	रूपक	17	68
3	तीव्रा	17	68
4	झपताल	16	64
5	सूलताल	18	72
6	चारताल	18	72
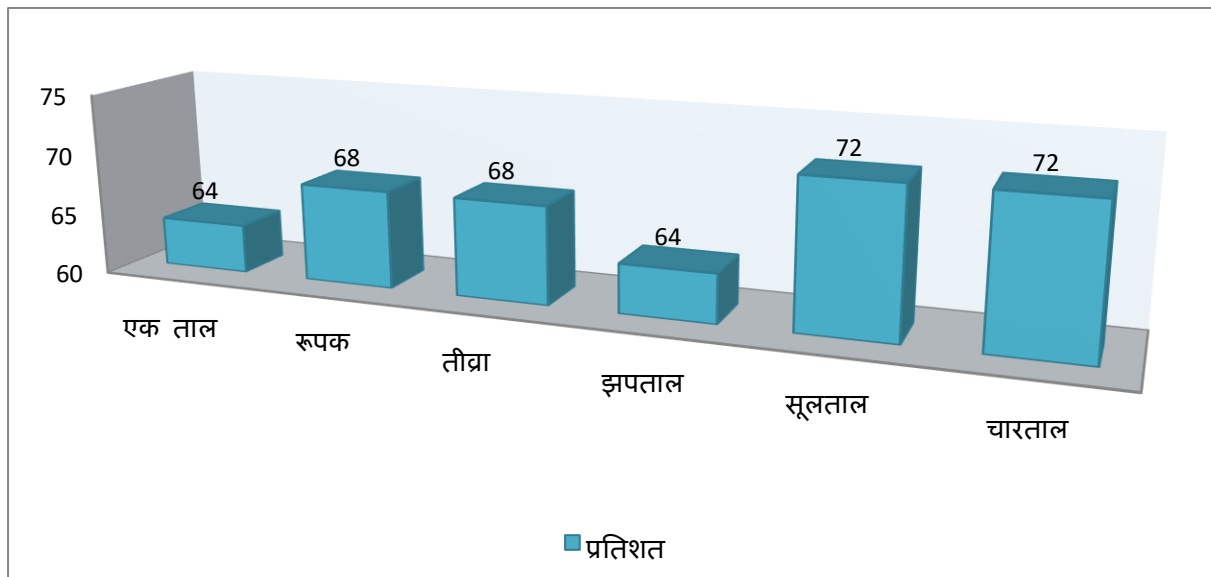
आरेख संख्या 4.28

विद्यार्थियों में तालो की ठेका में ताली संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.28 तथा आरेख संख्या 4.28 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में तालो की ठेका में ताली संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की सूलताल तथा चारताल में ठेका ताली संबंधी प्रवीणता में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (72) है जबकि एकताल तथा झपताल के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (64) है।
- सूलताल तथा चारताल के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (68) रूपक तथा तीव्रा ताल के संदर्भ में देखने को मिला।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की सूलताल तथा चारताल छात्राओं को ठेका ताल लगाने में सरल व सहज लगा। क्योंकि ये दोनों खुले बोलो की ताल है। जबकि एकताल तथा झपताल छात्राओं को असहज तथा कठिन प्रतीत हुई।
- सभी तालों के अभ्यास हेतु समय की अपर्यापता भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

प्रश्न 4.1.1.29 **निम्न रागों पर देश भक्ति गीत तबले की संगत पर सुनाइए ?**

तालिका संख्या 4.29

विद्यार्थियों में रागों पर देशभक्ति गीत तबले की संगत के साथ संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	20	80
2	बिहाग	12	48
3	हमीर	6	24
4	बागेश्री	7	28
5	भीमपलासी	10	40
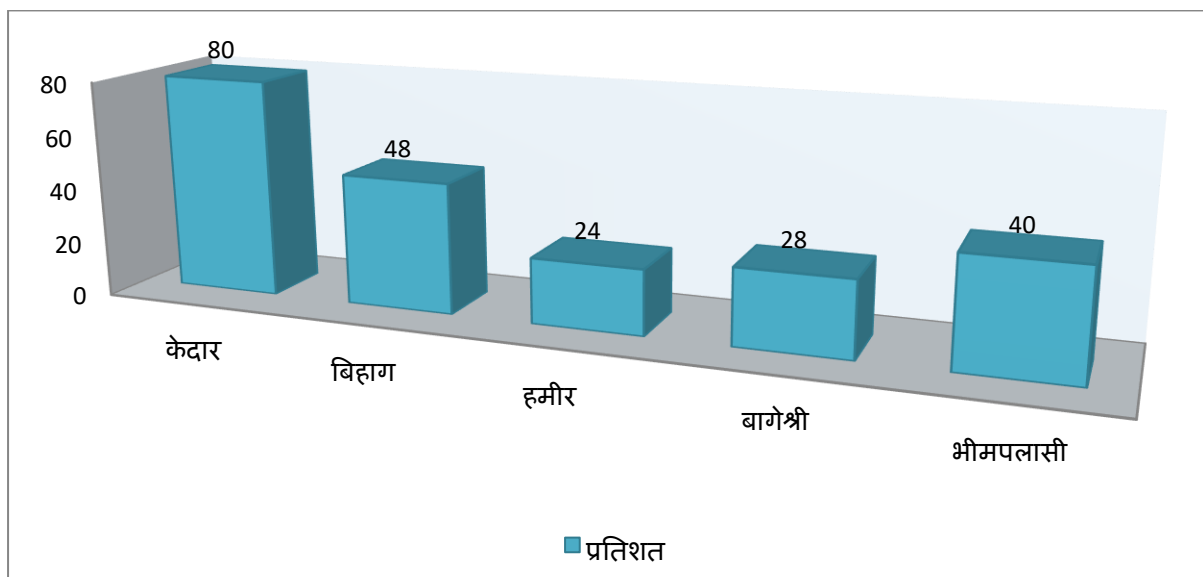
आरेख संख्या 4.29

विद्यार्थियों में रागों पर देशभक्ति गीत तबले की संगत के साथ संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.29 तथा आरेख संख्या 4.29 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में रागों पर देशभक्ति गीत तबले की संगीत के साथ संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है की राग केदार में देशभक्ति गीत गायन में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (80) है जबकि राग हमीर के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (24) है।
- राग केदार के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत राग विहाग (46) के संदर्भ में देखने को मिला।
- आधे से कम विद्यार्थी राग बागेश्री (28)के सम्बंध में जागरुक मिले।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि राग केदार में देशभक्ति गीत छात्राओं को सरल व सहज लगा। जबकि राग हमीर छात्राओं को असहज तथा कठिन प्रतीत हुये।
- शिक्षकों द्वारा निरंतर अभ्यास न कराया जाना इस विसंगति का कारण हो सकता है।

प्रश्न 4.1.1.30 **निम्न रागों में धुन प्रदर्शन करिए ?**

तालिका संख्या 4.30

विद्यार्थियों में रागों की धुन प्रदर्शन संबंधी प्रवीणता।

क्रम संख्या	रागों के नाम	आवृत्ति (सफल विद्यार्थी)	प्रतिशत
1	केदार	8	32
2	बिहाग	9	36
3	हमीर	10	40
4	बागेश्री	10	40
5	भीमपलासी	8	32
6	जौनपुरी	6	24
7	भैरवी	7	28
8	तोड़ी	5	20
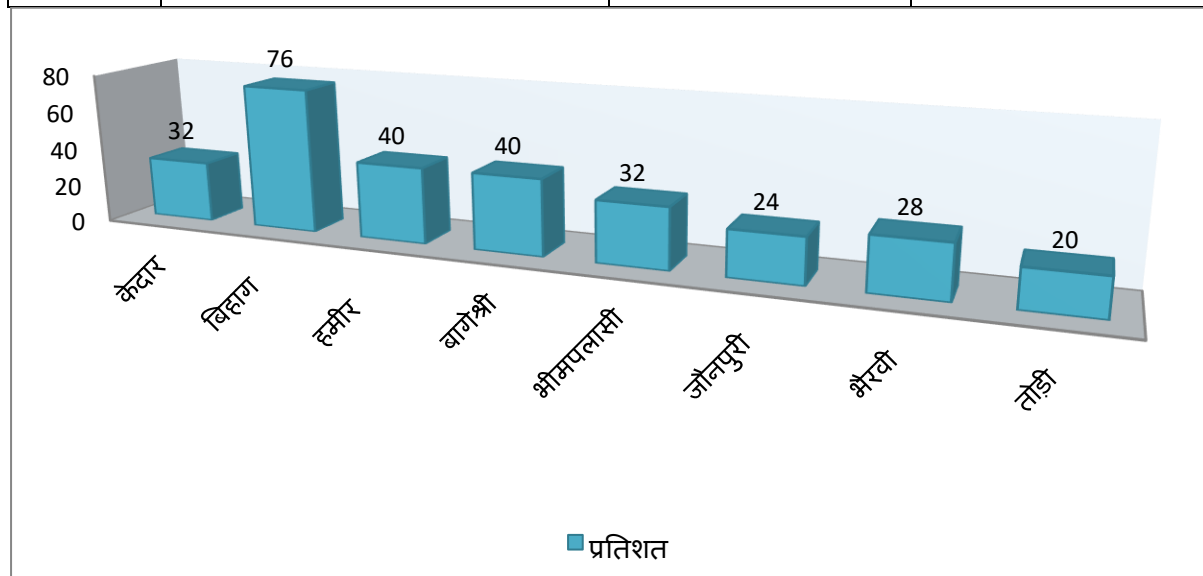
आरेख संख्या 4.30

विद्यार्थियों में रागों की धुन प्रदर्शन संबंधी प्रवीणता।

विश्लेषण

- उक्त तालिका संख्या 4.30 तथा आरेख संख्या 4.30 के आधार पर यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों में रागों की धुन प्रदर्शन संबंधी प्रवीणता का अध्ययन किया गया। जिसके आधार पर यह देखा जा सकता है कि राग हमीर तथा राग बागेश्री में छात्राओं का प्रतिशत सर्वाधिक (40) है। जबकि राग तोड़ी के संबंध में छात्राओं का प्रतिशत सबसे न्यून (20) है।
- राग हमीर तथा बागेश्री के पश्चात छात्राओं का सर्वाधिक प्रतिशत (36) राग विहाग के संदर्भ में देखने को मिला।
- लगभग आधे से कम विद्यार्थियों की प्रवीणता राग केदार (32), राग भीमपलासी (32), भैरवी(28) तथा राग जौनपुरी (24) के संदर्भ में देखने को मिली ।

विवेचना

- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है की राग हमीर तथा राग बागेश्री छात्राओं को धुन प्रदर्शन में सरल व सहज लगा। जबकि राग तोड़ी छात्राओं को गायन में कठिन तथा असहज प्रतीत हुये।
- शिक्षको का सभी इन रागों में पारंगत न होना भी इस विसंगति का कारण हो सकता है।

4.2 प्रयाग संगीत समित तथा यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियो में संगीत की प्रवीणता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

प्रयाग संगीत समिति (नटराज संगीत संस्थान बांदा) तथा यू० पी० बोर्ड (सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, केनपथ, बांदा) की छात्राओ में संगीत प्रवीणता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 4.31

परिकल्पना से संबन्धित परीक्षण संख्यकी।

विद्यालय	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	't'परीक्षण गणना मान	स्वतंत्रांश (df)	't' परीक्षण तालिका मान	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
नटराज संगीत संस्थान	25	64.2	8.84	10.10	48	2.000	.05	.05 स्तर पर H_O अस्वीकृत
सरस्वती बालिका विद्या मंदिर	25	38.76	8.70					

विश्लेषण

उपयुक्त सारणी से स्पष्ट है की नटराज संगीत संस्थान संगीत प्रवीणता साक्षात्कार में छात्राओ का मध्यमान 64.2 तथा सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर संगीत प्रवीणता साक्षात्कार में छात्राओ का मध्यमान 38.76 है। परिगणित t मान स्वतंत्रांश (df) 48 के लिए 10.10 प्राप्त हुआ है। जो की .05 सार्थकता स्तर पर df 48 के लिए t तालिका मान 2.000 से अधिक है अत: शून्य परिकल्पना "प्रयाग संगीत समिति (नटराज संगीत संस्थान, बांदा) तथा यू० पी० बोर्ड (सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर इंटर कॉलेज , केनपथ बांदा) छात्राओ कि संगीत प्रवीणता में

सार्थक अंतर है"। जो सार्थकता स्तर .05 पर अस्वीकृत की जाती है। तथा इसके स्थान पर निम्न वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

"प्रयाग संगीत समिति (नटराज संगीत संस्थान बांदा) तथा यू० पी० बोर्ड (सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, केनपथ, बांदा) की छात्राओ में संगीत प्रवीणता में कोई सार्थक अंतर है"।

इस प्रकार नटराज संगीत संस्थान, बांदा तथा सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर इंटर कॉलेज, केनपथ, बांदा की छात्राओ में संगीत प्रवीणता में सार्थक अंतर पाया गया तथा नटराज संगीत संस्थान की छात्राओ में सरस्वती बालिका विद्या मदिर की छात्राओ की अपेक्षा ज्यादा प्रवीणता पायी गयी।

इसके MEAN तथा SD को आरेख संख्या 4.31 में प्रदर्शित किया गया है-

विद्यार्थियो में संगीत प्रवीणता का मध्यमान एवं मानक विचलन।
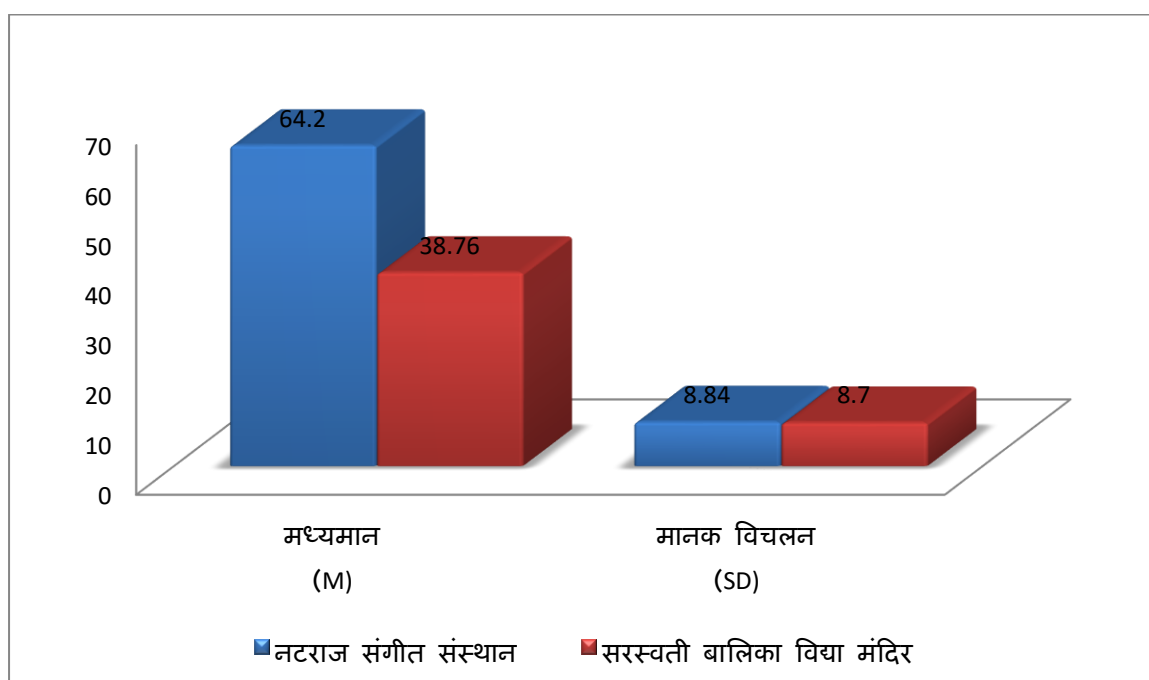
पंचम अध्याय

Some musical instruments
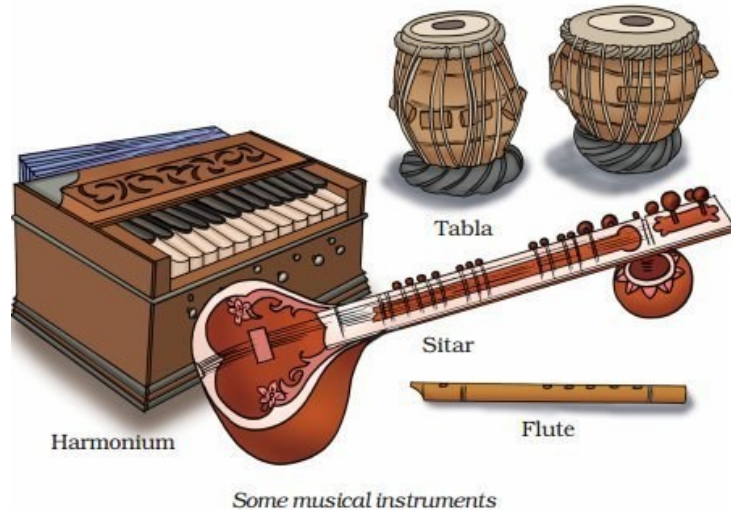
"मैंने जो संगीत सीखा है और जिसे देना चाहता हूँ, वह भगवान की पूजा की तरह है, यह पूरी तरह से एक प्रार्थना की तरह है"

(पं० रवि शंकर)

निष्कर्ष एवं सुझाव

अनुसंधान के क्षेत्र में वैज्ञानिक और सुव्यवस्थित अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर जो निष्कर्ष निकलते है वे उपयोगी होते है। उनका सम्बद्ध कार्य पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है तथा वे भावी अध्ययन के लिए भी पथ प्रशस्त करते है। शोध अध्ययन हेतु एकत्रित आंकड़ों की सांख्यकीय संगणना उसके विश्लेषण एवं विवेचना के पश्चात उसका निष्कर्ष देना भी आवश्यक है। गत अध्यायों में शोधकर्त्री ने जिन प्रदत्तों एवं सूचनाओं का विश्लेषण एवं समीक्षा प्रस्तुत की उसके आधार पर कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए है। प्रस्तुत अध्ययन में परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं कुछ सुझाव प्रस्तुत किए गए है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से जो निष्कर्ष प्राप्त हुये है वे निम्नवत है-

1. सामाजिक कारकों के प्रति संगीत विषय में दोनों ही संस्थाओं के विद्यार्थियों का मत सकारात्मक है अर्थात संगीत प्रवीणता के प्रति सकारात्मक भाव प्रदर्शित करते है।
2. मनोवैज्ञानिक कारकों के प्रति संगीत प्रवीणता स्तर में विद्यार्थियों का दृष्टिकोण समान है। विद्यार्थियों का मानना है कि संगीत से मन शांत, एकाग्र व अनुकूल रहता है क्योंकि रागों कि नदी में बह कर व्यक्ति अपनी कुंठाओ से निवृत्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त वादन के द्वारा भावों की अभिव्यक्ति से मन: स्थिति भी सामान्य रहती है।
3. विद्यार्थियों से प्राप्त मतों के समीक्षात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि दोनों ही संस्थाओं के विद्यार्थी शिक्षक के व्यक्तित्व व्यवहार एवं शिक्षण को संगीत शिक्षा में महत्वपूर्ण कारण स्वीकार करते है।
4. यू० पी० बोर्ड विद्यालयों में प्रेरक सुविधाएं अपनी सुविधानुरूप प्रदान करते है। प्रयाग संगीत समिति संस्थानों में प्रेरक सुविधाएँ अपनी सुविधानुरूप प्रदान करती हैं। किन्तु प्रयाग संगीत समिति कि तुलना में यू० पी० बोर्ड के विद्यालय अधिक प्रयत्नशील नहीं है।
5. दोनों ही कक्षाओं में शिक्षक छात्र अनुपात की स्थिति क्रियात्मक कक्षा के अनुकूल है जो न अधिक है और न ही कम है।
6. प्रयाग संगीत समिति संस्थानों में प्रदत्त चक्र कि अवधि २ से ४ घंटे है जबकि यू० पी० बोर्ड विद्यालयों में क्रियात्मक कला हेतु ३५ से ४० मिनट तक है जिसे १ घंटे तक किया जा सकता है।
7. वर्तमान में संगीत की स्थिति के अध्ययन से यह साफ पता चलता है कि आज ग़ज़ल, भजन, लोकसंगीत तथा फिल्मी संगीत की ही तरह शास्त्रीय संगीत में भी जन समान्य की रुचि है।
8. संगीत विषय की शिक्षा समूहिक शिक्षा पद्धति का अंग है। इसलिए शोध कार्य में माध्यमिक विद्यार्थियों का समूहिक साक्षात्कार के लिए चयन किया गया। सभी विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम के अनुसार साक्षात्कार लेने के बाद यह पाया गया कि विद्यालयों में संगीत की शिक्षा मात्र एक विषय के रूप में दी जा रही है। जबकि प्रयाग संगीत समिति द्वारा संचालित अन्य शिक्षण संस्थान में छात्राएं रुचि के आधार पर संगीत शिक्षा ग्रहण कर रही है।

9. साक्षात्कार द्वारा प्रदत्तों का संकलन तथा विश्लेषण करने के पश्चात यह पाया गया कि संगीत की प्रवीणता का स्तर विद्यालयी शिक्षा से ज्यादा प्रयाग संगीत समिति द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओ में है।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा जहाँ हमारे बौद्धिक ज्ञान को परिष्कृत करती है वहीं कलाएँ हमारे व्यावहारिक ज्ञान एवं सौंदर्यमयी अभिव्यक्ति में वृद्धि करती है। संगीत ने जहाँ विभिन्न माध्यमों से समाज को शिक्षित किया है वहीं समयानुसार उसकी शिक्षा के अध्ययन की रूपरेखा भी राष्ट्र एवं समाज की आवश्यकता के रूप में परिवर्तित हुई है। संगीत का शैक्षणिक स्वरूप गुरु-शिष्य परम्परा के रूप में विकसित हुई वहीं आगे चल कर घराना पद्धति की दूरी को तय करती हुई शैक्षणिक संस्थाओं के रूप में वर्तमान में स्थापित हुई। संगीत एवं बालक के बीच अटूट संबंध है। बालक मन कोरी स्लेट की भांति होता है, जिसे दिशा मिलना आवश्यक है। संगीत शिक्षा का उद्देश्य किसी बालक को मात्र कलाकार बनाना ही नहीं है बल्कि संगीत के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होता है। संगीत विषय पूर्णत: अभ्यास पर निर्भर करता है। मध्यमिक स्तर में संगीत विषय को ऐच्छिक विषय के रूप में रखा गया है। ग्यारहवीं एवं बारहवीं स्तर पर संगीत शिक्षा ऐच्छिक विषय के रूप में है जिसमे मुख्यत: गायन वादन दोनों ही विधाओं को स्वतंत्र रूप में लिया गया है। सरकारी विद्यालयों में संगीत तीसरी कक्षा से दसवीं कक्षा तक 'कला-शिक्षा' विषय के रूप में है। यह विषय संगीत, चित्रकला व नाट्यकला को संयुक्त करके बनाया गया है। अब मध्यमिक शिक्षा की बात करे तो यह शिक्षा की ऐसी अवस्था है जो की भावनाओं, संवेगो, कल्पनाओं से परिपूर्ण है। यह प्राथमिक शिक्षा की अभिवृद्धि, विस्तार के साथ ही उच्च शिक्षा की पृष्ठभूमि को विकसित करने का कड़ा स्वरूप भी है।

शिक्षा प्रक्रिया के प्रमुख तत्वों में शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। योग्य शिक्षको के अभाव में सुयोग्य छात्रगण भी वांछित ज्ञानार्जन में सफल नही हो सकते है। अच्छी से अच्छी पाठ्यवस्तु भी निपुण शिक्षक की अनुपस्थिति में प्राणहीन हो जाती है। अगर शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है तो शिक्षक इस प्रक्रिया को गति प्रदान करने वाला है। शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते है। अच्छे शिक्षको का व्यक्तित्व एवं उनका व्यवहार छात्रों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता प्रदान करता है तथा उनको सर्वांगीण विकास के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ानें में सहायक सिद्ध होते है।

अध्ययन के सुझाव

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं समीक्षात्मक अध्ययन से जो उपलब्धियों एवं निष्कर्ष प्राप्त हुये है उनके आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं -

शिक्षको के लिए सुझाव

1. छात्राओं को गायन वादन के साथ –साथ वाद्यों का भी ज्ञान कराया जाना चाहिए।
2. गायन वादन के साथ-साथ विद्यालयों में शास्त्रीय नृत्य का भी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
3. संगीत के द्वारा आध्यात्मिक वातावरण के निर्माण हेतु विद्यालय में शिक्षक को प्रयास करना चाहिए कि आस पास का वातावरण शांत व शोरगुल रहित हो तभी सच्चे स्वरो की प्राप्ति हो सकती है।
4. प्रत्येक संगीत विद्या के लिए कक्षाओं की पृथक व्यवस्था होनी चाहिए।
5. दृश्य सामाग्री द्वारा शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाने का प्रयत्न करे क्योंकि दृश्य सामाग्री से विद्यार्थी की श्रव्य एवं नेत्र इंद्रियाँ सक्रिय रहती है।
6. विद्यालय प्रबंध की ओर से विभिन्न संचार माध्यमों सूची-रेडियो, टीवी, आदि में कार्यक्रमों का आयोजन एवं प्रस्तुतिकरण करवाना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न हो।

अभिभावकों हेतु सुझाव

1. परिवार के सदस्यों द्वारा परिवार में संगीतमय वातावरण हेतु प्रयास किए जाए जिससे विद्यार्थी को संगीत के प्रति अभिवृद्धि तथा रुचि का विकास हो।
2. संगीत के प्रशिक्षण हेतु समृद्ध वातावरण प्राप्त कराया जाना चाहिए।
3. समाज की संस्थाओं सरकार द्वारा किए गए प्रयास भी वाद्यों के प्रति विद्यार्थियों की रुचि को प्रभावित करती है इसके लिए संस्थाएं समय-समय पर संगीत सम्मेलनों, गोष्ठियों एवं प्रतियोगताओं का आयोजन करे।

विद्यालय प्रबंधन हेतु सुझाव

अधिकतर विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर क्रियात्मक कार्यो पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। माध्यमिक स्तर पर जितने भी प्रयोगात्मक कार्य पुस्तकों में दिये होते है केवल उनको पढ़ कर समझने को कह दिया जाता है और छात्र उन प्रयोगो को रट लेते है। विद्यालय प्रबंधन हेतु दिए गये सुझाव निम्नवत है-

1- शिक्षकों को संगीत कौशल में दक्ष बनाने हेतु समय-समय पर विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित करनी चाहिए जिससे विषय की सजगता को बढ़ाया जा सके।

2- शिक्षकों की विषय सजगता हेतु प्रबंधन तंत्र को सूचना तकनीकी के विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यानों का आयोजन करना चाहिए।

३- संगीत शिक्षा हेतु विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों की व्यवस्था होनी चाहिये।

अन्य सुझाव-

1- संगीत मानव की स्वाभाविक अभिवृत्ति है। संगीत से पठन पाठन में मन लगता है, मन एकाग्र करने के लिए तथा व्यक्तित्व के विकास के लिए संगीत की शिक्षा अनिवार्य की जानी चाहिए।
2- प्रयाग संगीत समिति द्वारा आज केवल डिग्री बाटीं जा रही है। संगीत शिक्षा में कोई भी बदलाव नहीं किया जा रहा है।यह आज एक व्यापार बन गया है। जिनहे बंद करने हेतु कड़े कदम उठाने चाहिए तथा जिस पर अंकुश लगाना अनिवार्य हो गया है।
3- संगीत के दिखावटी मात्र प्रमाणपत्र बांटे जा रहे है।वास्तविक रूप में संगीत की शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण नहीं है।
4- गुणवत्ता पूर्ण संगीत शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु प्रशासन स्तर पर कड़े कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव

शोध अध्ययन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक होता है इसके प्रारम्भ एवं अंत की गणना करना सम्भव होता है वरन यह एक ऐसी श्रृंखला है। जिसमे एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरआत होती है । शोधकर्त्री ने इस अध्ययन के उपरांत यह अनुभूति की कि अभी इस क्षेत्र में अनुसंधानकर्ता के लिए पर्याप्त अवसर शेष है। इस दृष्टि से शोधकर्त्री भावी शोध अध्ययन के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत कर रही है –

1. प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर छात्राओं में संगीत शिक्षा की प्रभावशीलता का उनके व्यक्तित्व के संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
2. उत्तर भारतीय संस्थागत संगीत-शिक्षण प्रणाली की वर्तमान स्थिति का सर्वेक्षण कर दोनों संगीत पद्धतियों को एक दूसरे के गुणों से लाभान्वित करने के प्रयास किए जा सकते है।
3. औपचारिक शिक्षा व्यवस्था एवं सहज शिक्षा व्यवस्था के विद्यार्थियों के संगीत लोकप्रियता के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय प्रचलित वाद्यों की लोकप्रियता का समीक्षात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. प्रचलित वाद्यों की शिक्षण विधि एवं वादन तकनीकी का अध्ययन कर अन्य वाद्य वर्ग के वाद्यों से अधिक लोकप्रियता के कारणो को ज्ञात किया जा सकता है।

अंत में मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध प्रबंध वर्तमान संगीत शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में संगीत की लोकप्रियता का समीक्षात्मक अध्ययन जो मौलिक प्रयासों के फलस्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है अपने उद्देश्य कि पूर्ति करने में सक्षम होगा। वर्तमान संगीत शिक्षा के क्षेत्र में प्रवीणता के कारणों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर संगीत शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

DISSERTATIONS:

Sharma, Mani(2013). VARTAMAAN SANGEET SHIKSHA KE PRIPREKSHAY ME VEENA AVAM SITAR KI LOKPRIYATA KA SAMEEKSHATMAK ADHAYAYAN. Ph.D. theses Dayalbagh Education Institute.

http://hdl.handle.net/10603/207699

Tripathi, Chayarani(2013). Shiksha granthon me sangit tatva. Ph.D. theses. Bundelkhand University.

http://hdl.handle.net/10603/11806

BOOKS:

श्रीवास्तव, हरिश्चंद्र(1999) राग परिचय, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।

द्विवेदी, रमाकांत(2004) राग सौंदर्य, साहित्य रत्नालय।

जोशी, उमेश (1557) भारतीय संगीत का इतिहास, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली।

विष्णु नारायण भातखण्डे, भारतकोष, ज्ञान का हिन्दी महासागर.

http://mbharatdiscovery.org>india

Bharatiya Sangit Samajik Savroop Avm Parivartan.

http://books.google.co.in>books

Sangit kala vihar vihar by R.C. Mehta. Jstor

http://www.jstor.org>stable

CITATIONS FROM INTERNET SOURCES:

संगीत विभाग – मानविकी विद्याशाखा

www.uou.ac.in

कतरन

http://yogaguru/.blogspot.com/?m=1

परिशिष्ट

परिशिष्ट-1

बांदा का मानचित्र-

संगीत के माध्यम से दिया मतदान का संदेश

■ अशोकनगर (ईएमएस)

जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. मंजू शर्मा के निर्देशन में जिले में स्वीप गतिविधियों के अंतर्गत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इन्हीं के अंतर्गत अशोकनगर के ग्राम सेमरी जुम्मन में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एपीओ जिला पंचायत आरके पारीक, जिला मलेरिया अधिकारी श्रीमती दीपा गांगले, जिला खेल अधिकारी श्रीमती मंचिता राठौर, पर्यवेक्षक

महिला बाल विकास उपस्थित थे। इस दौरान कार्यक्रम में ग्रामीणों को विधानसभा चुनाव में शत् प्रतिशत मतदान करने तथा लोकतंत्र में मतदान के महत्व एवं लोकतंत्र में भागीदारी के बारे में बताया गया। साथ ही ग्रामीणो से शत् प्रतिशत मतदान करने की अपील की गई। कार्यक्रम में अशोकनगर के युवा संगीतकार अंश जैन कलाकार द्वारा गीतों की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित मतदाताओं को मतदान की शपथ दिलाई गई।

पठारे के संगीत ने मोहा मन

संगीत सम्मेलन में आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते कलाकार।

चंडीगढ़। इंडियन नेशनल थियेटर ने भारतीय विद्या भवन के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय वार्षिक [illegible] वां चंडीगढ़ संगीत सम्मेलन का रविवार को समापन हो गया।

[illegible]

परिशिष्ट-3

बांदा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों तथा संगीत शिक्षण स्थानों की सूची-

बाँदा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों तथा संगीत शिक्षण संस्थानों की सूची

क्रम संख्या	विद्यालय का नाम
1.	राजकीय आश्रम पद्धति इंटर कॉलेज
2.	डी० ए० वी० इंटर कॉलेज बांदा
3.	आर्य कन्या इंटर कॉलेज बांदा
4.	आदर्श बजरंग इंटर कॉलेज बांदा
5.	सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज
6.	ख़ानक़ाह इंटर कॉलेज बांदा
7.	राजादेवी इंटर कॉलेज
8.	आदर्श शिक्षा निकेतन इंटर कॉलेज
9.	स्पर्श राजकीय अंध बालक विद्यालय
10.	राजकीय इंटर कॉलेज (बालक)
11.	राजकीय बालिका इंटर कॉलेज
12.	एच० एल० इंटर कॉलेज
13.	सत्य नारायण इंटर कॉलेज
14.	श्री जे० पी० शर्मा इंटर कॉलेज बबेरु
15.	विद्या मंदिर इंटर कॉलेज
16.	सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, केनपथ बांदा
17.	रोहन सिंह इंटर कॉलेज, लुक्तरा

बांदा जनपद में प्रयाग संगीत समिति द्वारा संचालित संगीत शिक्षण संस्थानों की सूची

क्रम संख्या	संस्थानों के नाम
1-	पं० चंद्रपाल द्विवेदी संगीत विद्यालय (अलीगंज)
2-	एस० के० श्रीवास्तव संगीत विद्यालय (मुचियाना)
3-	विद्या विकलांग संगीत विद्यालय (कटरा)
4-	जय माँ काली संगीत विद्यालय (कटरा)
5-	सहयोग सेवा संस्थान, गूलर नाका बांदा
6-	नटराज संगीत संस्थान, बांदा

परिशिष्ट-4

साक्षात्कार अनुसूची का प्रथम प्रारूप-

संगीत प्रभावशीलता साक्षात्कार अनुसूची

मार्गदर्शक
डॉ॰ राजीव अग्रवाल

शोधकर्त्री
शिल्पी गुप्ता

कृपया निम्न सूचनाएं भरिये -

नाम ....

कक्षा .... आयु ....

विद्यालय का नाम ....

दिनांक .... फोन नं ....

निर्देश

प्रस्तुत अनुसूची का उद्देश्य विद्यार्थियों की संगीत सम्बन्धी जानकारी तथा प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अनुसूची में आपकी संगीत से सम्बंधित जानकारी तथा प्रभाव सम्बन्धी विभिन्न प्रश्न किये गये है। हाँ /नहीं में जिसे आप उचित समझते है उसमे सही का निशान (✓) लगायें आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोधकार्य मे प्रयुक्त की जाएगी अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने उत्तर दें।

1. संगीत सुनने के बाद आपका तनाव दूर होता है? (हाँ/नहीं)
2. आपको संगीत विषय में रुचि है? (हाँ/नहीं)
3. आपको संगीत अन्य विषय से ज्यादा पसंद है ? (हाँ/नहीं)
4. आपने संगीत की विधिवत शिक्षा ली है ? (हाँ/नहीं)
5. संगीत सुनने से एकाग्रता बढ़ती है? (हाँ/नहीं)
6. एक सप्तक में स्वरों की संख्या ७ होती है? (हाँ/नहीं)
7. तानसेन का जन्म एटा जिले में हुआ था ? (हाँ/नहीं)
8. ठाट गाया जाता है? (हाँ/नहीं)
9. सम्पूर्ण-सम्पूर्ण जाति के रागों में स्वरों की संख्या ७ होती है? (हाँ/नहीं)
10. तक का शाब्दिक अर्थ सीधा होता है? (हाँ/नहीं)
11. मस्तिष्क को राहत देने के लिए संगीत अच्छी है? (हाँ/नहीं)
12. संगीत का हमारे स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ता है? (हाँ/नहीं)
13. जीवन में खुश व स्वस्थ रहने के लिए संगीत सबसे अच्छा तरीका है? (हाँ/नहीं)
14. संगीत से ध्यान शक्ति में वृद्धि आती है? (हाँ/नहीं)
15. संगीत नकारात्मक विचार आने से रोकता है? (हाँ/नहीं)
16. संगीत बालक के अकेलेपन को दूर करने में मदद करता है ? (हाँ/नहीं)
17. तीव्र स्वर की संख्या १ होती है? (हाँ/नहीं)
18. धर्म व आदर्श नाद की विशेषता है? (हाँ/नहीं)
19. २२ श्रुतियों में से १२ मुख्य श्रुतियों को स्वर कहते है? (हाँ/नहीं)
20. प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद में है? (हाँ/नहीं)
21. तीनताल में १६ मात्राएँ होती है? (हाँ/नहीं)
22. माध्यमिक स्तर पर संगीत शिक्षा अनुचित है? (हाँ/नहीं)
23. संगीत का महत्व प्रथम व दोय से अधिक है? (हाँ/नहीं)
24. ताल में खाली का चिह्न X होता है? (हाँ/नहीं)
25. स्वर के २ प्रकार है - शुद्ध व विकृत (हाँ/नहीं)
26. एकताल में ४ विभाग होते है (हाँ/नहीं)
27. संगीत की सामग्री सामवेद से मिलती है (हाँ/नहीं)
28. रविन्द्र नाथ टैगोर रविन्द्र संगीत के जनक है (हाँ/नहीं)
29. ध्रुपद गंभीर प्रकृति का गीत है (हाँ/नहीं)
30. संगीत से प्रभाव का अर्थ है बताइए।

परिशिष्ट-5

संगीत प्रवीणता साक्षात्कार (अंतिम प्रारूप)

प्रयाग समिति द्वितीय वर्ष (मध्यमा) पाठ्यक्रम के अनुसार

1. निम्न रागों के लक्षण गीत सुनाइये?

   केदार, भैरवी, बागेश्री, देश, यमन, तोडी, जौनपुरी, भीपलासी, हमीर, बिहाग।

2. निम्न रागों के बड़ा ख्याल गीत सुनाइये?

   केदार, भैरवी, बागेश्री, देश, यमन, तोडी, जौनपुरी, भीपलासी, हमीर, बिहाग।

3. निम्न रागों के प्रारम्भिक आलाप सुनाइये?

   केदार, भैरवी, बागेश्री, देश, यमन, तोडी, जौनपुरी, भीपलासी, हमीर, बिहाग

4. निम्न रागों में से किसी एक का ध्रुपद्र गीत सुनाइये?

   केदार, भैरवी, बागेश्री, देश, यमन, तोडी, जौनपुरी, भीपलासी, हमीर, बिहाग।

5. निम्न अलंकारों को विलंबित, मध्य तथा द्रुत लय में गाकर सुनाइये?

   सरेग रेगम, सस रेरे, सरेस रेग, सगरेम, सरेगम

6. निम्न रागों के छोटे ख्यालों में अपने आप आलाप तबले से मिलाकर सुनाइये?

   यमन, भैरवी, बागेश्री, वृन्दावनी, सारंग।

7. निम्न रागों में भजन सुनाइये?

   यमन, भैरवी, दुर्गा, आसावरी।

8. निम्न रागों के छोटे ख्यालों में सरलतान लेकर सुनाइये?

   केदार, भैरवी, बागेश्री, देश, यमन, तोडी, जौनपुरी, भीपलासी, हमीर, बिहाग।

9. निम्न रागों की ताने वाद्य के साथ सुनाइये?

केदार, भैरवी, बागेश्री, देश, यमन, तोडी, जौनपुरी, भीपलासी, हमीर, बिहाग।

10.निम्न रागों पर आधारित देशभक्ति गीत गाकर सुनाइये?

केदार, बिहाग, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी।

11.निम्न रागों में धुन प्रदर्शन करें?

केदार, बिहाग, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी।

12. निम्न तालों को ताली देकर प्रदर्शन करें?

एक ताल, चार ताल, रूपक, तीवरा, झपताल, सूलताल।

13.निम्न रागों पर देशभक्ति गीत तबले की संगत के साथ सुनाइये?

केदार, बिहाग, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी।

14.निम्न तालों में दुगुन लय में ताली देकर लगायें?

एक ताल, चार ताल, रूपक, तीवरा, झपताल, सूलताल।

15.निम्न तालों में चौगुन लय में ताली देकर लगायें?

एक ताल, चार ताल, रूपक, तीवरा, झपताल, सूलताल।

संगीत प्रवीणता साक्षात्कार (अंतिम प्रारूप)

यू० पी० बोर्ड माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 10 के पाठ्यक्रम के अनुसार

1. निम्न रागों के लक्षण गीत सुनाइये ?

   खमाज, आसावरी, यमन, भैरवी बेहाग, भीमपलासी, वृन्दावनी सारंग।

2. निम्न रागों के प्रारम्भिक आलाप सुनाइये ?

   खमाज, आसावरी, यमन, भैरवी, बिहाग, भीमपलासी, वृन्दावनी सारंग।

3. निम्न रागों के ध्रुवाद गीत सुनाइये?
   खमाज, आसावरी, यमन, भैरवी, बिहाग, भीमपलासी, वृन्दावनी सारंग।
4. निम्न रागों के विलंबित ख्याल का गीत सुनाइये ?
   खमाज, आसावरी, यमन, भैरवी, बिहाग, भीमपलासी, वृन्दावनी सारंग।
5. निम्न रागों के छोटा ख्याल गीत सुनाइये ?

   खमाज, आसावरी, यमन, भैरवी, बिहाग, भीमपलासी, वृन्दावनी सारंग।

6. निम्न अलंकार को विलंबित मध्य व द्रुत लय में गा कर सुनाइये ?
   सरेग रेगम, सस रेरे, सग रेम, सरे सरेग, सरेगम ?
7. निम्न रागों के छोटे ख्यालों में अपने मन से आलाप तबले के साथ सुनाइये ?

   यमन, भैरवी, बागेश्री, वृन्दावनी सारंग

8. निम्न रागों के के पकड़ सुनाइये ?

   यमन, भैरवी, बागेश्री, वृन्दावनी सारंग

9. निम्न रागों में भजन सुनाइये ?

   दुर्गा, यमन, आसावरी, भैरी

10. निम्न रागों के छोटे ख्याल रल तान लेकर सुनाइये ?

बिहाग, केदार, हमीर, बागेश्री, भीम पलासी, जौनपुरी, भैरवी, तोडी।

11. निम्न तालों की दुगुन में ताली लगाइये ?

एकताल, रूपक, तीवरा, झपताल, सूलताल, चारताल।

12.निम्न तालों की चौगुन में ताली लगाइये ?

एकताल, रूपक, तीवरा, झपताल, सूलभारताल।

13.निम्न तालों का ताली देकर प्रदर्शन करें ?

एकताल, रूपक, तीवरा, झपताल, सूलताल, चारताल।

14.निम्न रोगों पर देशभक्ति गीत तबले की संगत के साथ सुनाइये ?

केदार, बिहाग, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी

15.निम्न रागों में धुन प्रदर्शन करें ?

केदार, बिहाग, हमीर, बागेश्री, भीमपलासी, जनपुरी, भैरवी, तोडी।

परिशिष्ट-6

विद्यार्थी साक्षात्कार चित्रावली-

सरस्वती बालिका विद्या मान्दिर इंटर कॉलेज

सरस्वती बालिका विद्या मान्दिर इंटर कॉलेज
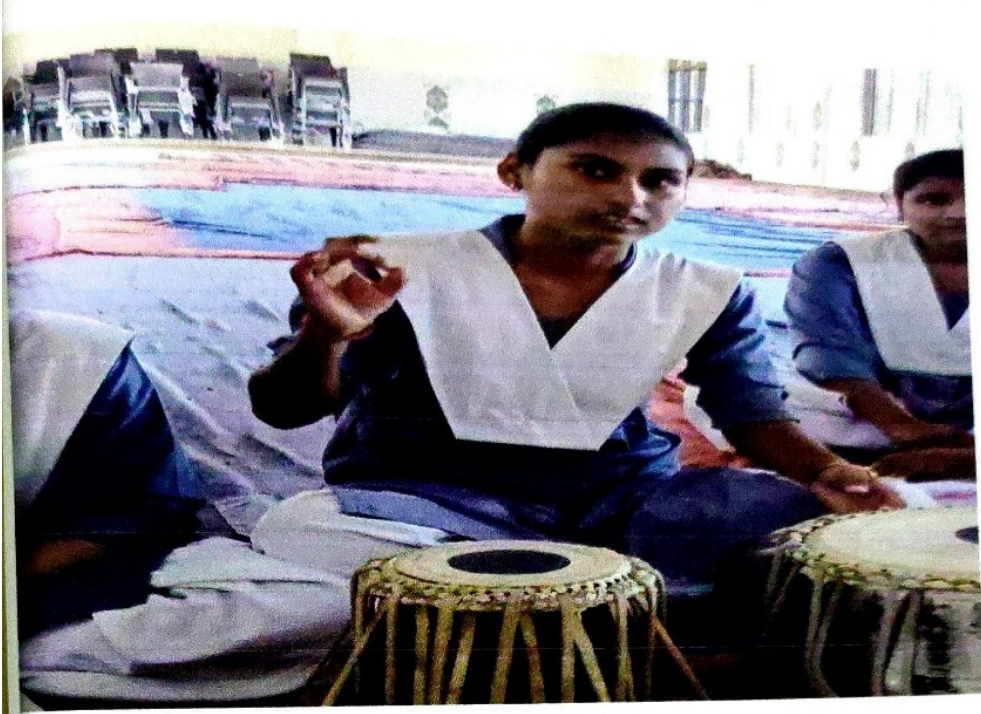
सरस्वती बालिका विद्या मान्न्दिर इंटर कॉलेज

नटराज संगीत संस्थान

परिशिष्ट-7

विस्तृत फलांकन सूची (MS-Excel)-

नटराज संगीत संस्थान

प्रश्न संख्या	प्रश्न-१	प्रश्न-२	प्रश्न-३	प्रश्न-४	प्रश्न-५	प्रश्न-६	प्रश्न-७	प्रश्न-८	प्रश्न-९	प्रश्न-१०	प्रश्न-११	प्रश्न-१२	प्रश्न-१३	प्रश्न-१४	प्रश्न-१५	
प्रश्न	१०	१०	१०	१०	५	४	४	१०	१०	५	१०	५	५	६	६	
छात्र संख्या	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	
१	7	4	5	6	5	4	3	8	7	4	7	6	4	6	6	82
२	5	5	7	4	5	4	4	6	8	4	5	6	4	6	4	77
३	7	6	6	5	4	4	2	8	2	2	6	5	3	6	6	72
४	8	5	2	6	5	3	4	6	8	1	4	4	2	5	5	68
५	5	3	3	4	4	4	2	3	5	4	8	6	3	4	3	61
६	4	7	5	3	2	3	2	5	5	1	5	4	3	5	5	59
७	5	6	4	5	5	2	2	7	3	1	3	6	0	5	2	56
८	4	6	2	4	3	1	4	4	6	3	5	5	4	4	6	61
९	5	4	5	6	3	4	2	6	4	2	6	6	3	5	3	64
१०	4	6	4	2	4	3	4	6	4	2	6	5	1	6	4	61
११	6	5	5	5	1	4	1	4	6	2	4	4	4	2	3	56
१२	6	5	3	4	5	2	2	3	5	3	6	5	1	6	6	62
१३	5	7	2	4	3	4	2	7	2	2	6	6	3	4	3	60
१४	6	6	4	3	5	3	3	3	8	3	4	1	1	4	6	60
१५	4	8	5	7	2	3	3	7	3	1	4	6	2	5	3	63
१६	3	3	3	2	4	3	3	1	5	2	8	6	4	4	6	57
१७	5	5	7	3	3	3	3	8	7	2	4	5	0	3	4	62
१८	3	4	3	5	3	3	0	4	6	3	4	5	4	5	3	55
१९	4	6	2	5	4	4	4	5	4	4	4	5	3	4	5	63
२०	3	3	4	3	5	4	2	4	6	1	4	3	4	5	5	56
२१	5	6	7	6	3	3	3	8	4	3	6	6	3	3	2	70
२२	4	1	4	2	4	4	4	3	5	2	3	5	2	4	6	53
२३	6	7	4	5	5	4	1	5	6	2	3	5	2	6	3	64
२४	7	4	4	5	4	3	3	7	5	4	9	5	4	6	6	76
२५	4	7	6	8	2	4	4	7	10	5	7	6	5	6	6	87
															N	25
															MEAN	64.2

बालिका विद्या मंदिर

प्रश्न सं०	प्रश्न-१	प्रश्न-२	प्रश्न-३	प्रश्न-४	प्रश्न-५	प्रश्न-६	प्रश्न-७	प्रश्न-८	प्रश्न-९	प्रश्न-१०	प्रश्न-११	प्रश्न-१२	प्रश्न-१३	प्रश्न-१४	प्रश्न-१५	
प्रश्न	८	८	८	८	८	५	४	४	४	८	६	६	६	५	८	
छात्र सं०	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	
१	7	6	5	1	1	4	1	3	3	4	3	6	6	4	5	59
२	4	3	3	7	1	4	4	2	2	4	3	1	4	1	3	46
३	3	5	4	1	3	3	0	2	0	0	2	4	4	3	0	34
४	4	4	4	1	2	4	2	2	2	3	4	2	3	2	6	45
५	3	1	0	3	1	2	2	2	1	4	2	4	4	1	1	31
६	2	4	3	1	2	5	0	0	3	2	3	1	3	4	1	34
७	7	3	1	3	3	4	2	2	1	1	2	5	3	2	3	42
८	2	4	3	2	1	3	1	2	2	2	3	1	6	1	3	36
९	1	1	4	3	0	3	0	1	1	3	4	5	3	3	1	33
१०	2	5	0	1	0	3	2	3	2	2	1	1	3	2	4	31
११	4	4	1	2	1	3	2	0	2	1	5	4	3	3	1	36
१२	2	3	3	2	3	3	1	3	2	3	1	1	4	2	2	35
१३	3	2	3	4	1	3	0	1	1	0	4	4	3	1	3	33
१४	4	5	4	2	1	3	2	0	1	5	5	1	3	3	2	41
१५	1	1	1	2	2	3	3	4	3	2	2	4	5	2	2	37
१६	2	5	1	3	2	3	0	0	1	2	4	2	6	2	3	36
१७	4	3	3	3	1	3	3	2	2	1	1	3	2	1	2	34
१८	3	1	2	0	2	4	0	1	2	2	2	2	4	4	1	30
१९	2	3	3	2	1	2	1	3	2	3	3	4	3	2	5	39
२०	2	4	2	2	3	4	1	1	1	2	2	3	6	1	0	34
२१	5	2	0	3	0	4	2	1	3	2	4	2	4	2	2	36
२२	3	5	4	3	3	3	1	2	1	2	3	3	4	1	3	41
२३	1	2	3	3	0	5	0	2	2	1	1	4	5	4	1	34
२४	2	6	2	2	1	3	2	1	3	4	4	3	5	1	4	43
२५	7	7	5	3	2	5	4	4	3	5	4	6	6	3	5	69

N	25
MEAN	38.76
SD	8.847222

परिशिष्ट-8

संलग्नक परिशिष्ट की विषय सूची-

संलग्नक परिशिष्ट की विषय सूची

माध्यमिक विद्यार्थियों में संगीत की प्रवीणता का अध्ययन